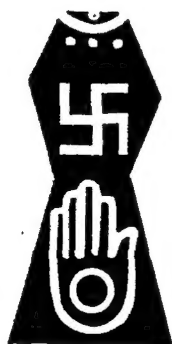
पच्चीस बोल पच्चीसी

(प्रश्नोत्तरात्मक विवेचन)



रचनाकार :-

शास्त्रज्ञ गुरूदेव श्री सुमति मुनि जी म. सा.



प्रकाशक :-

श्री अ. भा. वर्षीय साहित्य सेवा समिति रतिया

पच्चीस बोल पच्चीसी

रचनाकार :-
शास्त्रज्ञ गुरूदेव श्री सुमति मुनि जी म. सा.

प्रकाशक :-
श्री अ. भा. वर्षीय साहित्य सेवा समिति रतिया

मूल्य :- 30 रूपये

द्वितीय संस्करण :- 1000 प्रतियां (2003)

डिजाईनर :-
दीपक जैन
दीपक कम्पयूटरज़,
1, जैन मार्किट, बुढलाडा ।
फोन : 01652-251362 (घर)

मुद्रक :-
शाम लाल जैन
आरती प्रिंटर्ज़, बरेटा ।
फोन : 01652-251362 (घर)

कृति एवं कृतिकार

एक परिचय

तपत्याग, संयम साधना से अनुरंजित मुनि, हमारी भारतीय संस्कृति के एकमात्र आधारभूत अवलम्बन होते हैं। तीर्थंकर भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। हमारे तीर्थंकर युगनायकों ने मानव जगत में आध्यात्मिक क्रान्ति मचाकर मनुष्य के जीवन को सत्पथ पर लाकर खड़ा कर दिया। तीर्थंकरों की वाणी से मानव चेतना जागृत हो जाती है। तीर्थंकरों की परम्परा पर चलने वाले संत लोकोन्तर होते हैं। इसी लोकोतर परम्परा में चलने वाले संत समाज में अत्यन्त दुर्लभ होते हैं। फिर भी स्वर्या अभाव नहीं, इस दुःखम, पंचमकाल में मुनि व धर्म को कायम रखने वाले कई महान संत हैं। उन्हीं संतों की श्रृंखला में आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म.सा. की हुक्मगच्छीय परम्परा में आचार्य श्री नानेश के प्रमुख शिष्य, आगमरत्नाकर, युवामनीषी, शास्त्रज्ञ, गुरूदेव श्री सुमति मुनि जी म.सा. है जिनके मुखारविन्द से ध्वनित यह अनमोल अति रहस्यपूर्ण पुस्तक आप्त मणियों का खजाना है। गुरूदेव श्री ने विविध पहलुओं व दृष्टिकोणों से वहुआयामी चिन्तन प्रस्तुत किया है।

गुरूदेव श्री जब से हमारे इस मंगलदेश में मंगल संदेश लेकर पधारे हैं तब से ही यत्र तत्र सर्वत्र धर्म की लहर व्याप्त है। आप से जन-जन प्रभावित है। मुनि श्री ज्ञानी, ध्यानी, उत्कृष्ट, संयमाराधक संतरत्न हैं। आपका जन्म राजस्थान के वीकानेर जिले में नोखामण्डी में हुआ। आपके पितु श्री स्वनाम धन्य श्री चांदमल जी लूणिया एवं मातुश्री राजाबाई हैं। आपको 9 वर्ष की अल्पायु में विजली का भंयकर करंट लगा, जिससे आप धर्म पुण्योदय से वालवाल वच पाए। तव से ही आपके मन में वैराग्य का अंकुर पैदा हो गया। 15 वर्ष की उम्र में आप ने आचार्य श्री नानेश के चरणों में जैन दीक्षा ग्रहण की। आप प्रतिभाशाली, ओजस्वी, प्रवचनकार, युवामनीषी संत हैं। आपकी चरणशरण में जो भी एक वार आ जाता है उसकी धर्म में अपूर्व आस्था कायम हो जाती है। ऐसी परम श्रद्धा भरने वाले महान दुर्लभ संत आप हैं। आपने राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, दिल्ली, मुम्वई, हरियाणा की जनता में धर्म का सिंहनाद करते हुए अभी पंजाव में विचरण चल रहा है, आप जहां भी पधारते हैं वहां धर्म की नव चेतना पैदा कर देते हैं। संप्रदायातीत चिंतन प्रस्तुत करते हुए जिन शासन की भव्य प्रभावना कर रहे है।

इस पच्चीस बोल पच्चीसी रूप कृति में गुरूदेव श्री ने आगमिक विषयों को प्रश्नोत्तर रूप में सरल, सरस एवं सुबोधकारी शैली में प्रस्तुत कर तत्व जिज्ञासुओं के लिए हृदयग्राही बना दिया है ऐसी तत्व ज्ञान रूपी अनमोल पुस्तक पूर्व में देखने को नहीं मिली है । गुरूदेव श्री ने इस पच्चीस बोल पच्चीसी में पच्चीस बोल का सुंदर रूप से खुलासा किया है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है जो भी ज्ञान सुबोधकारक व्यवहारिक शैली में होता है तो उसका प्रचार प्रसार भी अधिक होता है इस पच्चीस बोल पच्चीसी के प्रश्नोत्तर सुबोधगम्य एवं रोचक है। जैसे गुरूदेव श्री ने गति-द्वार में एक प्रश्न पूछा है कि

प्रः- मनुष्य गति में कितनी काया पाई जाती है ?
जिसका उत्तर दिया गया कि :- एक त्रस काया पाई जाती है।

हमें छः काया का तो ज्ञान है किन्तु किसमें कौनसी गति, जाति, काया आदि पाये जाते है उसका ज्ञान नहीं । इस पुस्तक का एक दो बार ही पठन कर लिया जावे तो बहुत कुछ तत्व ज्ञान समझ में आ सकता है इस पच्चीस बोल पच्चीसी का अध्ययन करने से पच्चीस बोल के विषय में हम सुनते आये है कि यह शास्त्रों का सार है यह महत्त्व भी सहसा समझ में आ सकता है ।

गुरूदेव श्री के रतिया 2002 के चातुर्मास में हम कार्य कर्ताओं ने निर्णय लिया कि महाराज श्री के अनमोल साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए । उसके लिए एक अ. भा. वर्षीय साहित्य सेवा समिति का गठन किया गया। यह समिति गुरूदेव श्री के अनमोल साहित्य आदि सेवाकार्यों के लिए कटिवद्ध रहेगी ।

हमें परम प्रसन्नता हो रही है कि हमारी समिति ने कुछ ही अल्पावधि में गुरूदेव श्री की तीन पुस्तकें 1. भजन गुंजार 2. प्रवचन निधि एवं प्रश्नोत्तर मंजरी का प्रकाशन किया, अव चतुर्थ कृति पच्चीस बोल पच्चीसी का प्रकाशन करने का सौभाग्य मिल रहा है ।

एततर्थ यह समिति महाराज श्री की बहुत-वहुत आभारी रहेगी । जिन दानदाताओं ने सम्यग् ज्ञान प्रचार में जो सहयोग दिया है उनको भी हम हार्दिक धन्यवाद, ज्ञापित करते हैं और आशा करते है कि वे हमें समय-समय पर सहयोग देते रहेंगे । इन्ही आज्ञा और विश्वास के साय विराम !

निवेदक :-

श्री विजय जैन समाणा	मदन लाल जैन	धन्ना भगत जैन	अनिल जैन	हस्तीमल जैन
संरक्षक	प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	सहमंत्री

पच्चीस बोल एकः अनुचिन्तन

सुमति मुनि ।

जैनागमों की मौलिक जानकारी के लिए सर्वप्रथम पच्चीस बोल थोकड़े का ज्ञानावश्यक है। पच्चीस बोल के थोकड़े की वहुत सी पुस्तकें उपलब्ध है और उनके अध्ययन से पच्चीस बोल की काफी अच्छी जानकारी भी हो जाती है । किन्तु फिर भी अलग-2 गति आदि द्वारों पर जो खुलासा होना चाहिए था वह नहीवत् ही उपलब्ध हो रहा था। मेरे समक्ष तत्व जिज्ञासुओं की मांग आती रही कि महाराज श्री आपको मेहनत करके इस कमी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए । मेरे मन में भी जिज्ञासुओं की भावना को पूर्ण करने का उत्साह जागृत हुआ। जव-जव समय मिलता, पच्चीस बोल के गति आदि द्वारों को प्रश्नोत्तर रूप में लिखने का प्रयास हुआ ।

पच्चीस वोल जैनागमों का नवनीत है इसका जो ज्ञान हृदयगम कर लेता है उसके लिए आगमों में अच्छी पकड़ हो जाती है जिसको पच्चीस बोल का प्रारंभिक ज्ञान पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है उसकी आगमों में गति रूक जाती है । मैं यहां पच्चीस बोल के द्वारों की संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत कर रहा हूं ।

1. गति :- किन्हीं एक प्रकार के जीवों को मुख्यतया जो नाम दिया जाता है वह गति है । इसका शाब्दिक तथा सव से प्रचलित अर्थ तो यह है कि मरने के वाद जीव जहां जाकर जन्म लेता है, उसे गति कहते है उसको गुण दोषों के आधार पर नरक तिर्यंच आदि वर्गो में वांट दिया गया है ।

2. जाति :- वैसे तो जाति का अर्थ समूह होता है । साधारण बोल-चाल में जाति का जो अर्थ सांस्कृतिक या धार्मिक आधार पर किया जाता है :- जैसे हिन्दू, जैन, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख आदि, यहां पर जाति का वो अर्थ नहीं है। यहां पर पच्चीस बोल की दृष्टि से जाति का अर्थ है इन्द्रियों के आधार पर जीवों का वर्गीकरण । समान इन्द्रिय वाले जीवों के समूह को "जाति" कहते हैं। जैसे एकेन्द्रिय जीवों के समूह को एकेन्द्रिय जाति कहते है वैसे ही वेइन्द्रिय आदि जातियों के विपय में भी जान लेना चाहिए ।

3. काया :- काया का अर्थ शरीर होता है काय दो प्रकार की है एक स्थावर और दूसरी त्रस । स्थावर का अर्थ है स्थिर । जिन जीवों को इतना हीन शरीर मिलता है कि वे विना वाह्य कारण के मात्र अपनी शक्ति के आधार पर गति नहीं कर सकते, उसे स्थावर कहते है जैसे पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा और वनस्पति स्थावर काय में सिर्फ एकेन्द्रिय जीव ही आते हैं । त्रस - जो जीव एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्वयं की शक्ति से गति कर सकते है उन्हें त्रस जीव कहते हैं । जैसे कीड़े - मकोड़े, पशु-पक्षी, मनुष्य, नारकी तथा देवता । वेइन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव त्रस ही होते हैं ।

4. इन्द्रिय :-जिस प्रकार से एक मकान में वन्द आदमी खिड़की से वाहर की वस्तु देख सकता है, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म की दीवारों में कैद आत्मा इन्द्रिय रूपी खिड़कियों से वाहर के ज्ञान को प्राप्त कर लेती है इन्द्रियों के माध्यम से होने वाला ज्ञान परोक्ष ज्ञान कहलाता

है तथा विना इन्द्रियों के सीधे आत्मा से होने वाले ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं । प्रत्येक इन्द्रिय के दो भेद हैं :- द्रव्य इन्द्रिय व भाव इन्द्रिय । इन्द्रिय की आकृति द्रव्य इन्द्रिय कहलाती है तथा उसकी काम करने की शक्ति भाव इन्द्रिय कहलाती है । द्रव्य इन्द्रिय भी दो प्रकार की होती है – निर्वृत्ति व उपकरण । अर्थात् एक बाहर की आकृति तथा एक अन्दर की आकृति । भाव इन्द्रिय भी दो प्रकार की होती है लब्धि व उपयोग। जैसे कान का बाहर दिखाई देने वाला गोल-गोल हिस्सा निर्वृत्ति द्रव्य इन्द्रिय तथा अन्दर का हिस्सा अर्थात् पर्दा उपकरण द्रव्य इन्द्रिय है। ऐसे ही सुनने की शक्ति लब्धि भाव इन्द्रिय है तथा इन तीनों (निर्वृत्ति, उपकरण तथा लब्धि) से प्राप्त होने वाला ज्ञान उपयोग इन्द्रिय कहलाता है इसी प्रकार शेष चार इन्द्रियों के विषय में भी जानना चाहिए । इन्द्रियों के विषय में हम यह उदाहरण भी दे सकते है कि जैसे राजा अपने मंत्री आदि की सहायता से संपूर्ण राज्य का संचालन करता है तथा सूचनाएं ज्ञात करता है, उसी प्रकार आत्मा रूपी राजा अपने पांच इन्द्रियों रूपी मंत्रियों की सहायता से 23 विषयों का ज्ञान करता है ।

5. पर्याप्ति :- जब जीवात्मा किसी जन्म का आयुष्य पूर्ण कर अगले भव में नये शरीर को ग्रहण करने का कार्य करती है तो वहां पर उत्पत्ति के प्रथम समय में आहार ग्रहण करके धीरे-धीरे उस आहार को अपने जीवन की अन्य योग्यताओं के अनुसार बदलने की शक्ति को पर्याप्ति कहते है।

6. वलप्राण :- जीवन की मूल शक्तियों को प्राण कहते है जिस शक्ति के द्वारा पांचों इन्द्रियां काम करती है, तीन योग चलते हो, सांस लेने व छोड़ने की ताकत आती हो तथा आत्मा शरीर में टिकी रहती हो उसे बल प्राण कहते है ।

7. शरीर :- यहां पर शरीर का अर्थ वही है जो आम बोल-चाल में होता है, जिसे अंग्रेजी में 'Body' कहते है ।

8. योग :- मन, वचन और काया जब हलचल करते है, तब आत्मा में कम्पन होता है और उस कम्पन से आत्मा के आस-पास रहे हुए कर्मो के सूक्ष्म परमाणु आत्मा से चिपक जाते हैं । इसीलिए मन, वचन, काया की हलचल को योग कहते है ।

9. उपयोग :- आत्मा का गुण चेतना है । यह चेतना ज्ञानात्मक संवेदनशीलता का परिचायक है इसी चेतना को उपयोग भी कह सकते है । यह उपयोग गुण ही आत्मा को जड़ से अलग करता है । वस्तु के सामान्य तथा विशेष रूप को जानने का नाम ही उपयोग है ।

10. कर्म :- इस सारे ब्रह्माण्ड में बहुत सूक्ष्म-सूक्ष्म पुद्गल (परमाणु) विखरे हुए हैं । कुछ परमाणु प्रकाश के हैं, कुछ ध्वनि के है, कुछ परमाणुओं से शरीर बनता है तथा कुछ परमाणुओं से भाषा बनती है । उन सूक्ष्म परमाणुओं में एक वर्ग कर्म परमाणुओं का भी है उस वर्ग को कार्मण वर्गणा या कर्म पुद्गल कहते है । जब कोई जीवात्मा मन, वचन और काया के योग (कम्पन या हलचल) द्वारा क्रियाशील होती है, तो उस समय में वर्गणाएं आत्मा के निकट आ जाती है और यदि उस समय आत्मा में क्रोध, मोह, माया ओर लोभ रूप कषाय मौजूद हो तो वे कार्मण वर्गणाएं आत्मा के साथ चिपक जाती हैं । आत्मा के

साथ चिपक जाने के बाद उन्हें कर्म कहा जाता है ।

11. गुणस्थान :- आध्यात्मिक गुणों की दृष्टि से जीव की सबसे निकृष्ट स्थिति से सर्वोच्च स्थिति के बीच के अन्तर को चौदह श्रेणियों में बांटा गया है । इन श्रेणियों को ही गुणस्थान कहते हैं ।

12. विषय :- जो इन्द्रियां सुनने, देखने, सूंघने, चखने एवं स्पर्श करने का अपना अलग-2 तरिका होता है अपने-2 कार्य को ग्रहण करना ही विषय है । पांचों इन्द्रिय अलग-2 विषयों को ग्रहण करती है । कान सुनने का, आंख देखने का विषय ग्रहण करती है ।

13. मिथ्यात्व :- आध्यात्मिक विकास के मार्ग में जानने योग्य और श्रद्धा किये जाने योग्य विषयों में विपरीत दृष्टि रखना ही मिथ्यात्व है । मोक्ष में सबसे बड़ी बाधा कर्म है और कर्म बन्ध के कारणों में पहला और मुख्य कारण मिथ्यात्व है।

14. तत्व :- ज्ञेय-मात्र जानने योग (जीव, अजीव, पुण्य) हेय मात्र छोड़ने योग्य (पाप, आश्रव, बंध) और उपादेय मात्र अपनाने योग्य(संवर, निर्जरा, मोक्ष) इनका विशेष ज्ञान हासिल करना ही तत्व है । इन उपरोक्त नव तत्वों को 9 पदार्थ भी कहते है ।

15. आत्मा :- आत्मा दृष्टिगोचर नहीं होती, छुई नहीं जाती, फिर भी आत्मा को समझना जरूरी है । उसके चेतन लक्षण से हम उसको जानते हैं । एक ही आत्मा की व्याख्या करने के लिए उसे 8 प्रकार से कहा गया है । आत्मा एक द्रव्य है । उसे उसके स्वभाविक गुणों या वैभाविक दोषों के आधार पर 8 प्रकार से वर्णन किया जाता है ।

16. दण्डक :- लोक में नीचे से प्रारंभ करके ऊपर तक जहां जो जीव प्रचुरता में पाये जाते है, उनको उसी क्रम से 24 दण्डकों में सम्मिलित किया गया है । दण्डक का एक अर्थ भोगने का स्थान भी हैं। क्योंकि जन्म-मरण हमारे कर्मो का ही परिणाम है । इस लिए लोक का प्रत्येक स्थान जहां जीव मर कर जन्म लेता है, एक प्रकार से दण्डक ही है । इस बोल में नीचे से ऊपर तक भौगोलिक स्थिति तथा वहां पर स्थित जीव के पास उपलब्ध शक्तियों के आधार पर एक क्रम दे दिया गया है । उसी क्रम को दण्डक के नाम से जानते है । वास्तव में दण्डक शब्द दण्ड या रूल रखकर खींची गयी रेखा के लिए है

17. लेश्या :- लेश्या शब्द के दो अर्थ हैं- 1. चमकना 2. चिपकना या चिपकाना । जिस प्रकार पानी साफ-सुथरा व पारदर्शी होता है और उसमें काली, पीली, हरी रंग की टिकिया डाल दी जाये, तो पानी रंगीन हो जाता है । इसी प्रकार मन, वचन और काया की हलचलों (योग) पर जब कषायों का रंग चढ़ जाता है, तो उस कषाय रंजित योग की संयुक्त अवस्था को लेश्या कहा जाता है उसके दो भेद हैं- 1. द्रव्य लेश्या 2. भाव लेश्या । चमकने का संबंध द्रव्य लेश्या से तथा चिपकने या चिपकाने का संबंध भाव लेश्या से हैं । पुद्गल रूप लेश्या द्रव्य लेश्या तथा भावों के उतार चढ़ाव रूप लेश्या भाव लेश्या हैं ।

18. दृष्टि :- दृष्टिकोण को ही दृष्टि कहतें है। जैसे विचारों को नकारात्मक और सकारात्मक

इन दो भागों में बांटा गया है, जिसे हम नेगेटिव और पोजिटिव (थिंकिंग) अर्थात् सोच कहते हैं ।

19. ध्यान :- किसी एक विषय पर मन का लग जाना, किसी एक दिशा में बहते चले जाना ध्यान है । यह विषय अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी । मनः स्थिति की एकाग्रता को ध्यान कहते हैं । ध्यान किया नहीं जाता, हो जाता है । परन्तु सही गलत की सावधानी बनी रहे तो अभ्यासपूर्वक मन बुरे ध्यान से हटकर अच्छे ध्यान की ओर लगाया जा सकता है । आर्तध्यान एवं रौद्रध्यान अशुभ ध्यान है । राग-द्वेष से हटकर शांतचित में रमण शुभ ध्यान है । धर्मध्यान तथा शुक्ल ध्यान शुभ ध्यान है ।

20. द्रव्य :- पदार्थ को द्रव्य कहते है ।

21. राशि :- राशि का अर्थ है ढेर

22. व्रत :- जैन धर्म के अनुयायी जो सम्पूर्ण रूप से पापों का त्याग करके साधू नहीं बन सकते, अपितु कुछ छुटें (आगार) रखकर पापों के अनावश्यक सेवन एवं मोटे तौर पर उसके सेवन का त्याग करते हैं, श्रावक कहलाते हैं । इसे आगार धर्म भी कहा गया है । इन 12 व्रतों में प्रथम 5 व्रतों को अणुव्रत भी कहते हैं । अणु का अर्थ स्थूल या मोटा होता है । क्योंकि इनमें पापों का त्याग मोटे तौर पर होता है, इसीलिए इन्हें अणुव्रत कहते हैं। अहिंसा, सत्य, अचार्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह ये पांच मुख्य अणुव्रत हैं । शेष - व्रत (3 गुणव्रत तथा 4 शिक्षा व्रत) उन्हीं की गुणवत्ता बनाये रखने एवं उनके प्रति दृढ़ता बनाये रखने के लिए हैं ।

23. महाव्रत :- एक गृहस्थ संसार में रहते हुए, उससे निर्लिप्त रहता हुआ कुछ छूटों (आगारों) के साथ 12 व्रत पालता है तथा श्रावक का दर्जा प्राप्त करता है, परन्तु संसार को पूरी तरह छोड़कर बिना किसी छूट के साधु साध्वी 5 महाव्रतों का पालन करते हैं । श्रावक के जो 5 अणुव्रत हैं, उन्ही को संपूर्ण रूप से बिना किसी छूट के पालन 5 महाव्रत कहलाता है ।

24. भंग :- किसी भी कार्य में कम से कम 1 करण तथा 1 योग अवश्य होते हैं तथा अधिकतम तीनों करण एवं तीनों योग हो सकते हैं। इनको आपस में मिलाने से कुल 49 प्रकार हो सकते हैं। इन प्रकारों, विकल्पों या व्यवस्थाओं को ही हम भंग कहते है।

25. चारित्र :- मोक्ष की प्राप्ति के लिए आत्म कल्याण के मार्ग पर चलने का नाम ही चारित्र है । मूलभूत पारिभाषिक शब्दों पर संक्षिप्त विवेचना की गई है पच्चीस बोल का वर्णन पन्नवणा, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, भगवती, स्थानांग, समवायांग, उपासकदशांग, आवश्यक आदि सूत्रों से किया गया है ।

गत दो दशकों से थोकड़ों में रूचि बढ़ती जा रही है जो धर्म तत्वों के प्रति आस्था व जागरूकता का परिचायक है ।

अन्त में इन्हीं शुभ भावों के साथ मुझे पूर्ण विश्वास है कि सरल एवं सुबोध पूर्ण की गई प्रश्नोत्तर रूप तत्वचर्चा से तत्व जिज्ञासुओं को तत्व ज्ञान की अवश्यमेव अभिवृद्धि संभव हो सकती है ।

समर्पण

प्रज्ञा - पुंज,
संयम - सुमेरू
एवं
समीक्षण ध्यान - योग के सूत्रधार

एक जीवन - शिल्पी को, जिन्होंने
आत्म - साक्षात्कार कर
ज्ञानालोक को प्राप्त किया
और समर्थ थे
मुमुक्षुओं / अनुयायियों की
दृष्टि व सृष्टि परिवर्तन हेतु सक्षम थे ।

जिन्होने संस्कार चेतना का शंखनाद कर,
समता - समाज - संरचना
को मूर्त रूप दिया था,
एवं

मुझे संयम मार्गाभिमुख कर
अणुव्रतों की पगडंडी से
महाव्रतों के राजमार्ग में
अग्रसर किया था -

ऐसे आराध्यदेव एवं
प्रेरणा के अजस्त्र स्त्रोत-आचार्य श्री नानेश
के चरणाम्बुजों में
सश्रद्ध, सविनय एवं सादर
परोक्ष समर्पित ।

विनीत,
-सुमति मुनि

अनुक्रमणिका

गति-द्वार

पहले बोले गति चार :- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति ।

प्रः- गति किसको कहते हैं ?

उः- जिस कर्म के उदय से जीव नरक आदि पर्याय विशेष अवस्था का अनुभव करे, अर्थात् धारण करे उसे गति कहते हैं। उसके चार भेद हैं- 1. नरकगति 2. तिर्यंचगति 3. मनुष्यगति 4. देवगति ।

प्रः- नरकगति, मनुष्यगति और देवगति में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- तिर्यंचगति में जातियां कितनी पाई जाती हैं ?

उः- पांचों जातियां पाई जाती हैं ।

प्रः- नरकगति, मनुष्यगति और देवगति में काया कितनी पाई जाती है ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- तिर्यंचगति में काया कितनी पाई जाती है ?

उः- छहों काया पाई जाती है ।

प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति में इन्द्रियां कितनी पाई जाती हैं ?

उः- पांचो इन्द्रियां पाई जाती हैं ।

प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति में पर्याप्तियां कितनी पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दशों बलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति और देवगति में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं । जैसे - वैक्रिय, तैजस और कार्मण शरीर ।

प्रः- तिर्यंचगति में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं । औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण शरीर ।

प्रः- मनुष्यगति में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति और देवगति में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- ग्यारह योग पाये जाते हैं। जैसे -चार मन के, चार वचन के, तीन काया के (वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्रयोग, कार्मण योग) ।

प्रः- तिर्यंचगति में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- 13 (तेरह) योग पाये जाते हैं । जैसे - चार मन के, चार वचन के, पांच काया के, औदारिक योग, औदारिक मिश्रयोग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्रयोग और कार्मण योग।

प्रः- मनुष्यगति में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- 15 (पंद्रह) योग पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति और देवगति में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- 9 (नौ) उपयोग पाये जाते हैं । जैसे - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन और अवधिदर्शन ।
प्रः- मनुष्यगति में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- 12 (बारह) उपयोग पाये जाते हैं ।
प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति में कर्म कितने पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।
प्रः- नरकगति और देवगति में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- चार गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्र और अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान ।
प्रः- तिर्यंचगति में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- पांच गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्र, अविरति सम्यग्दृष्टि और देशविरति श्रावक गुणस्थान ।
प्रः- मनुष्यगति में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 14 (चौदह) गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।[1]
प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति में मिथ्यात्व के दश भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- दशों भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- नरकगति में कितने तत्व एवं भेद पाये जाते हैं ?
उः- मोक्ष तत्व को छोड़कर आठ तत्व और 63 भेद पाये जाते हैं जैसे - जीव तत्व के 3 भेद असंज्ञी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्ता संज्ञी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्ता और पर्याप्ता अजीव तत्व के 10 भेद धर्मास्तिकाय के 2, अधर्मास्तिकाय के 2, आकाशास्तिकाय के 2, (देश और प्रदेश) 6, पुद्गलास्तिकाय के देश प्रदेश स्कंध और परमाणु पुद्गल 4 पुण्य के 4 मन, वचन, काया और नमस्कार पुण्य । पाप के 18, आश्रव के 20, संवर के एक, समकित संवर, निर्जरा के 3 विनय, स्वाध्याय, ध्यान बंध के 4 कुल 63 भेद हुए ।[2]
प्रः- तिर्यंचगति में कितने तत्व एवं भेद पाये जाते हैं ?

1. अन्य कुच्छेक लोगों की यह धारणा है कि नरकगति में 23 विषयों में से 17 विषय ही पाये जाते हैं वह नरकगति में सुरभिगंध, कषैला, खट्टा, मीठा, सुहाला और स्निग्ध इन 6 विषयों को नहीं मानते हैं।
2. कितनेक साधु-साध्वी आदि की मान्यता है कि नरकगति में मोक्ष तत्व भी सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्दर्शन की अपेक्षा से पाया जाता है ।

उः- आठ तत्व और (111) भेद पाये जाते हैं मोक्ष तत्व को छोड़कर ।[1]

प्रः- मनुष्यगति में कितने तत्व एवं भेद पाये जाते हैं ?

उः- नव तत्व और 115 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- देवगति में कितने तत्व एवं भेद पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्व एवं 64 भेद पाये जाते हैं जीव तत्व के 3, असंज्ञी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्ता, संज्ञी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता और पर्याप्ता। अजीव तत्व के 10 भेद-धर्मास्तिकाय के 2, अधर्मास्तिकाय के 2. आकाशास्ति-काय के 2, (देश और प्रदेश) एवं पुद्गलास्तिकाय के 4 भेद (स्कंध देश प्रदेश) और परमाणु पुद्गल । पुण्य के 4 भेद मन, वचन, काया, नमस्कार पुण्य । पाप के 18, आश्रव के 20, संवर के 2, भेद समकित संवर शुभयोग संवर । निर्जरा के 3 भेद-विनय, स्वाध्याय, ध्यान । बंध के 4 भेद ।

प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति और देवगति में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- सात आत्माएं पाई जाती हैं । (चारित्र आत्मा को छोड़कर)

प्रः- मनुष्यगति में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- नरकगति में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक नारकी का पाया जाता है।

प्रः- तिर्यंचगति में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- नव दण्डक पाये जाते हैं जैसे - स्थावर का पांच दण्डक, विकलेन्द्रिय का तीन दण्डक और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक ।

प्रः- मनुष्यगति में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है।

प्रः- देवगति में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 13 दण्डक पाये जाते हैं । जैसे - भवनपतियों के दश दण्डक, व्याणव्यंतर का एक दण्डक, ज्योतिषियों का एक दण्डक और वैमानिक का एक दण्डक ।

प्रः- नरकगति में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती हैं कृष्ण नील और कापोत लेश्या। पहली-दूसरी नारक में कापोत लेश्या, तीसरी नारक में कापोत एवं नील लेश्या, चौथी नारक में नील लेश्या, पांचवी नारक में नील एवं कृष्ण लेश्या, छठी नारक में कृष्ण लेश्या, सातवीं नारक में महाकृष्ण लेश्या।

प्रः- तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है।

प्रः- नरकगति में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

1. किन्हीं-किन्हीं की मान्यता यह भी है कि तिर्यंचगति एवं देवगति में मोक्ष तत्व भी पाया जाता है उन का यह कथन है कि जब मोक्ष मार्ग के माध्यम सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्दर्शन जब इन गति के जीवों में पाया जाता है इस अपेक्षा से वह इन दो गतियों में मोक्ष तत्व मानते हैं ।

उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती हैं । पहली से छट्ठी नरक के अपर्याप्ता में दो (सम्यगृदृष्टि मिथ्यादृष्टि) सातवीं नरक के अपर्याप्ता में एक (मिथ्यादृष्टि) और सातों नरकों के पर्याप्ता में तीनों ही दृष्टिता पाई जाती हैं ।

प्रः- तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति इन तीनों गतियों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती है ।

प्रः- तिर्यंचगति, नरकगति और देवगति में चारों ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं - आर्त्तध्यान, रौद्र ध्यान और धर्मध्यान ।[1]

प्रः- मनुष्यगति में चारों ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- पांच द्रव्य पाये जाते हैं (एक काल द्रव्य नहीं पाया जाता है)

प्रः- तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति में छहों द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति में जीव राशि के 563 भेदों में सें कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 14 भेद नारकी के पाये जाते हैं ।[2]

प्रः- तिर्यंचगति में जीवराशि के 563 भेदों में सें कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 48 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- मनुष्यगति में जीवराशि के 563 भेदों में सें कितने भेद पाये जाते हैं ।

उः- 303 भेद पाये जाते हैं -एक भरत, एक ऐरवत, एक महाविदेह जम्बूद्वीप में है, दो भरत, दो ऐरवत, दो महाविदेह धातकी खण्ड में है, दो भरत, दो ऐरवत, दो महाविदेह, अर्द्धपुष्कर वर द्वीप में है। इस प्रकार पन्द्रह कर्मभूमि हुई। एक देवकुरू, एक उतरकुरू, एक रम्यकवर्ष, एक हरिवर्ष,एक हेमवय, एक हेरण्यवय का क्षेत्र जम्बूदीप में है। दो देवकुरू, दो उतरकुरू,दो रम्यकवर्ष, दो हरीवर्ष, दो हेमवय, दो हेरण्यवय का क्षेत्र घातकी खण्ड में, दो देवकुरू, दो उतरकुरू, दो हरिवर्ष, दो रम्यकवर्ष, दो हेमवय, दो हेरण्यवय का क्षेत्र अर्द्धपुस्करवर दीप में इस प्रकार अकर्मभूमि के कुल 30 भेद हुए और छप्पन अन्तरदीप के 56 इन 101 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 202 भेद हुए, और 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य कुल 303 भेद।

प्रः- देवगति में जीवराशि के 563 भेदों में सें कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 198 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- तिर्यंचगति और के क्षेत्र में अजीवराशि के 560 भेदों में सें कितने

1. नरकगति में अधिकतर आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ही पाये जाते हैं, परन्तु किन्ही - किन्ही सम्यक्दृष्टि नेरियों में धर्मध्यान भी पाया जाता है ।

2. गति की अपेक्षा से तो जीवराशि के 563 भेदों में से 14 भेद नारक के ही पाये जाते हैं, किन्तु स्थान की अपेक्षा से 10 सूक्ष्म एकेन्द्रिय के और 4 वादर एकेन्द्रिय के भी पाये जा सकते हैं। इस दृष्टि से नरकगति में जीवराशि के 28 भेद हो जाते हैं।

भेद पाये जाते हैं ?

उः- तिर्यंचगति और मनुष्यगति के क्षेत्र में अजीवराशि के 559 भेद पा सकते हैं। क्योंकि तिर्यंचगति सारे लोक में और मनुष्यगति में जब केवली समुद्घात होता है तब जीव भी सारे लोक में मिल सकते हैं। इस दृष्टि से आकाशास्तिकाय का एक स्कंध को छोड़कर के 559 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति और देवगति में अजीवराशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 557 भेद पाये जाते हैं जैसे -(धर्माः अधर्माः आकाशः के तीन स्कंधों को छोड़कर)।

प्रः- नरकगति और देवगति में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है।

प्रः- तिर्यंचगति, मनुष्यगति में श्रावक के 12 व्रतो में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- 12 ही व्रत पाये जाते हैं। क्योंकि श्रद्धा, दलाली, अनुमोदना की अपेक्षा से श्रावक के 12 व्रत संज्ञी तिर्यंच में पाये जा सकते हैं अन्य तिर्यंचगति जीवों में नहीं। मुनिराज को सांड द्वारा गुड बहराना आदि अनेकों प्रमाण वर्तमान में भी उपलंब्ध हैं एवं बलभद्र मुनिराज को हिरण द्वारा इशारे से खाती के पास ले जाना एवं आहार दान करवाने का वर्णन मिलता है । अतः स्पर्शना की दृष्टि से जितने व्रत स्पर्श किये जायेंगे उतने ही व्रत पाये जा सकते हैं ।

प्रः- नरकगति, तिर्यंचगति और देवगति में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- मनुष्यगति में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांच महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति और देवगति में 49 भागों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगे नही पाया जाता है।

प्रः- तिर्यंचगति में भांगे कितने पाये जाते हैं ?

उः- तिर्यंचगति में सामान्यतया 48 भांगे ही पाये जाते हैं, किन्तु विशेष की अपेक्षा से 49 यानि सभी भांगे पाये जातें हैं क्योंकि शास्त्र आदि में वर्णन मिलता है कि चंडकौशिक सर्प ने भगवान् महावीर स्वामी से प्रतिबोध प्राप्त कर भावरूप संथारा ग्रहण किया था, उस दृष्टि से तीन करण और तीन योग रूप 33वां भांगा भी पाया जा सकता है सर्प तिर्यंचगति का पंचेन्द्रिय प्राणी है ।

प्रः- मनुष्यगति. में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- 49 भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- नरकगति तिर्यंचगति और देवगति में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नही पाया जाता है ।

प्रः- मनुष्यगति में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।

जाति-द्वार

प्रः- जाति किसे कहते हैं ?

उः- जाति नाम कर्म के उदय से प्राप्त हुई जीवन की एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय रूप पर्याय को जाति कहते हैं ।

प्रः- एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक तिर्यंचगति पाई जाती हैं ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती हैं ।

प्रः- एकेन्द्रिय जाति में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- पांच काया पाई जाती है । त्रसकाय को छोड़कर ।

प्रः- बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जाति में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- एकेन्द्रिय जाति में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक स्पर्शेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्रः- वेइन्द्रिय जाति में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- दो इन्द्रिया पाई जाती हैं । जैसे - रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ।

प्रः- तेइन्द्रिय जाति में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- तीन इन्द्रिया पाई जाती हैं । जैसे श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय को छोड़कर ।

प्रः- चउरिन्द्रिय जाति में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- चार इन्द्रियां पाई जाती हैं । श्रोत्रेन्द्रिय को छोडकर ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती हैं ।

प्रः- एकेन्द्रिय जाति में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं । भाषा पर्याप्ति, मन पर्याप्ति को छोड़कर ।

प्रः- वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच पर्याप्तियां पाई जाती हैं । मन पर्याप्ति को छोड़कर ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- एकेन्द्रिय जाति में दश वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार वलप्राण पाये जाते हैं । जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय वलप्राण, काया वलप्राण, श्वासोच्छवास वलप्राण और आयुष्य वलप्राण।

प्र:- बेइन्द्रिय जाति में दश बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?
उ:- छः बलप्राण जाते हैं । जैसे रसनेन्द्रिय बलप्राण, स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, वचन बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोच्छ्वास बलप्राण और आयुष्य बलप्राण ।
प्र:- तेइन्द्रिय जाति में दश बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?
उ:- सात बलप्राण पाये जाते हैं । जैसे - श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण, चक्षुन्द्रिय बलप्राण और मनोबलप्राण को छोड़कर ।
प्र:- चउरिन्द्रिय जाति में दश बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?
उ:- आठ बलप्राण पाये जाते हैं । श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण और मनबलप्राण को छोड़कर ।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति में दश बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?
उ:- दशों बलप्राण पाये जाते हैं ।
प्र:- एकेन्द्रिय जाति में पांच शरीरो में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उ:- चार शरीर पाये जाते हैं आहारक शरीर को छोड़कर ।
प्र:- बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में पांच शरीरो में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उ:- तीन शरीर पाये जाते हैं औदारिक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर ।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उ:- पांचों शरीर पाये जाते हैं । संयति की अपेक्षा से ।
प्र:- एकेन्द्रिय जाति में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उ:- पांच योग पाये जाते हैं । जैसे - ओदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग ।
प्र:- बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय जाति में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उ:- चार योग पाये जाते हैं - व्यवहार भाषा, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग ।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उ:- 15 (पन्द्रह) योग पाये जाते हैं । समुच्चय पंचेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।
प्र:- एकेन्द्रिय जाति में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उ:- 3 उपयोग पाये जाते हैं । जैसे - मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन।
प्र:- बेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय जाति में 12 उपयोग में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उ:- पांच उपयोग पाये जाते हैं -मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अचक्षु दर्शन।
प्र:- चउरिन्द्रिय जाति में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उ:- छः उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के दो ज्ञान और दो अज्ञान व दर्शन ।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उ:- 12 (बारह) उपयोग पाये जाते हैं ।
प्र:- एकेन्द्रिय आदि पांच जातियों में कर्म कितने पाये जाते हैं ?
उ:- आठों कर्म पाये जाते हैं ।
प्र:- एकेन्द्रिय जाति में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है ।
प्रः- वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय जाति में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- दो गुणस्थान पाये जाते है जैसे – मिथ्यात्व गुणस्थान, सास्वादन गुणस्थान ।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 14 (चौदह) गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- एकेन्द्रिय जाति में 5 इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 8 विषय और 96 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- वेइन्द्रिय जाति में 5 इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय के 13 विषय और 156 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- तेइन्द्रिय जाति में 5 इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- घ्राण. रसने. और स्पर्शनेन्द्रिय के 15 विषय और 168 विकार पाये जाते हैं
प्रः- चउरिन्द्रिय जाति में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- चक्षु. घ्राण. रसने. और स्पर्शनेन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाये जाते हैं।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- पांचो इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- पांचों जातियों में मिथ्यात्व के दशों भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- दशों भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- एकेन्द्रिय जाति में नव तत्वों में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?
उः- छः तत्व पाये जाते हैं, जैसे संवर तत्व, निर्जरा तत्व और मोक्ष तत्व को छोड़कर।
प्रः- वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जातियों में नव तत्व में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?
उः- आठ तत्व पाये जाते हैं । मोक्ष तत्व को छोड़कर ।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में नव तत्वों में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?
उः- नव तत्व पाये जाते हैं ।
प्रः- एकेन्द्रिय जाति में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?
उः- छः आत्मा पाई जाती है, ज्ञानात्मा और चारित्रात्मा को छोड़कर ।
प्रः- वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है?
उः- सात आत्मा पाई जाती हैं, चारित्र आत्मा को छोड़कर ।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उः- आठों आत्मा पाई जाती है ।
प्रः- एकेन्द्रिय जाति में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- पांच दण्डक पाये जाते हैं, जैसे -पृथ्वीकाय का एक, अप्काय का एक, तेउकाय का एक, वायुकाय का एक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक ।

प्रः- बेइन्द्रिय जाति में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- बेइन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।

प्रः- तेइन्द्रिय जाति में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- तेइन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।

प्रः- चउरिन्द्रिय जाति में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- चउरिन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 16 दण्डक पाये जाते हैं, पांच स्थावर के पांच और तीन विकलेन्द्रिय के तीन कुल आठ दण्डक छोड़कर।

प्रः- एकेन्द्रिय जाति में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- चार लेश्या पाई जाती हैं -कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या।

प्रः- बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती हैं, जैसे - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- एकेन्द्रिय जाति में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- बेइन्द्रिय,तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- दो दृष्टियां पाई जाती हैं । सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती हैं।

प्रः- एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं ।

प्रः- पांचों ज़ातियों में छः द्रव्यों में से कितने पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- एकेन्द्रिय जाति में जीव राशि में 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- तिर्यंच एकेन्द्रिय के 22 भेद पाये जाते हैं, जैसे -पृथ्वीकाय के चार भेद, सूक्ष्म, वादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता, अप्काय के चार भेद, सूक्ष्म, वादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता तेउकाय के चार भेद, सूक्ष्म वादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता और वायूकाय के चार भेद, सूक्ष्म वादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता और वनस्पतिकाय के छः भेद, सूक्ष्म, साधारण प्रत्येक के अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

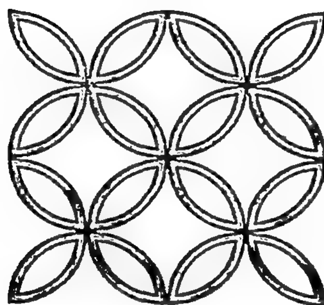
प्रः- वेइन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- वेइन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- तेइन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- तेइन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- चउरिन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- चउरिन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 535 भेद पाये जाते हैं। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय के 28 भेदों को छोड़कर ।
प्रः- एकेन्द्रिय जाति के क्षेत्र में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- एकेन्द्रिय जाति सारे लोक में है। इसीलिए इसमें अजीव राशि के 559 भेद पाये जाते हैं, आकाशास्तिकाय का एक स्कंध लोक और अलोक मिलाने से वनता है । इसीलिए इसको छोड़कर सब भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति के क्षेत्र में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 557 भेद पाये जाते हैं-धर्मास्ति,अधर्मास्ति और आकाशास्तिकाय के तीन स्कंधों को छोड़कर।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति के क्षेत्र में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- पंचेन्द्रिय जाति केवली समुद्घात की अपेक्षा सारे लोक में मिल सकते हैं इसीलिए पंचेन्द्रिय जाति में अजीव राशि के 559 भेद पाये जाते हैं। एक आकाशास्तिकाय के स्कंध को छोड़कर क्योंकि आकाशास्तिकाय का स्कंध लोक और अलोक मिलाने से बनता है।
प्रः- एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय इन चार जातियां पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?
उः- एक भी व्रत श्रावक का नहीं पाया जाता है क्योंकि व्रत प्रत्याख्यात संज्ञी, तिर्यंच पंचेन्द्रिय एवं संज्ञी मनुष्य में ही पाया जाता है । अन्य एकेन्द्रिय आदि असंज्ञी जीवों में व्रत प्रत्याख्यान त्रिकाल में भी असम्भव है । संज्ञी उसे कहते हैं जिसके पांच इन्द्रिय और छठा मन हो, जिसके मन न हो उसको असंज्ञी कहते हैं ।
प्रः- एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।
प्रः-एकेन्द्रिय,वेइन्द्रिय,तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?
उः- एक भी भांगा नही पाया जाता है ।
प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?
उः-49 भांगे पाये जाते हैं।

प्रः- एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।



विचार

मन के अहंकार को छोड़कर ऐसी जबान बोलनी चाहिए जिससे दूसरों को भी शान्ति पहुंचे और अपने को भी शान्ति मिले ।

–सुमति मुनि

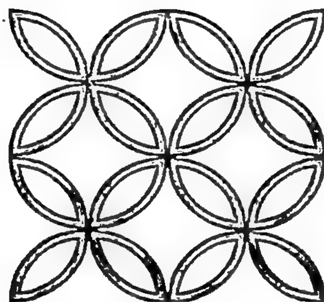
प्र:- बेइन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- बेइन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्र:- तेइन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- तेइन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्र:- चउरिन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- चउरिन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- 535 भेद पाये जाते हैं। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय के 28 भेदों को छोड़कर ।
प्र:- एकेन्द्रिय जाति के क्षेत्र में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- एकेन्द्रिय जाति सारे लोक में है। इसीलिए इसमें अजीव राशि के 559 भेद पाये जाते हैं, आकाशास्तिकाय का एक स्कंध लोक और अलोक मिलाने से बनता है । इसीलिए इसको छोड़कर सब भेद पाये जाते हैं ।
प्र:- बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति के क्षेत्र में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- 557 भेद पाये जाते हैं-धर्मास्ति,अधर्मास्ति और आकाशास्तिकाय के तीन स्कंधों को छोड़कर।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति के क्षेत्र में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- पंचेन्द्रिय जाति केवली समुद्घात की अपेक्षा सारे लोक में मिल सकते हैं इसीलिए पंचेन्द्रिय जाति में अजीव राशि के 559 भेद पाये जाते हैं। एक आकाशास्तिकाय के स्कंध को छोड़कर क्योंकि आकाशास्तिकाय का स्कंध लोक और अलोक मिलाने से बनता है।
प्र:- एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय इन चार जातियां पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?
उ:- एक भी व्रत श्रावक का नहीं पाया जाता है क्योंकि व्रत प्रत्याख्यात संज्ञी, तिर्यंच पंचेन्द्रिय एवं संज्ञी मनुष्य में ही पाया जाता है । अन्य एकेन्द्रिय आदि असंज्ञी जीवों में व्रत प्रत्याख्यान त्रिकाल में भी असम्भव है । संज्ञी उसे कहते हैं जिसके पांच इन्द्रिय और छठा मन हो, जिसके मन न हो उसको असंज्ञी कहते हैं ।
प्र:- एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उ:- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उ:- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।
प्र:-एकेन्द्रिय,बेइन्द्रिय,तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं
उ:- एक भी भांगा नही पाया जाता है ।
प्र:- पंचेन्द्रिय जाति में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?
उ:-49 भांगे पाये जाते हैं।

प्रः- एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय जाति में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

प्रः- पंचेन्द्रिय जाति में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।



विचार

मन के अहंकार को छोड़कर ऐसी जबान बोलनी चाहिए जिससे दूसरों को भी शान्ति पहुंचे और अपने को भी शान्ति मिले ।

–सुमति मुनि

काया-द्वार

ोसरे बोले काया छः पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय।

:- काया किसको कहते हैं ?

:- त्रस और स्थावर नामकर्म के उदय से जीव पिंड (शरीर) में उत्पन्न होता हैं, उसे काया कहते हैं।

:- त्रसकाय किसे कहते हैं ?

:- जो जीव हलन-चलन करे, छाया से धूप में आवें और धूप से छाया में जावें उसे त्रसकाय कहते हैं ।

:- स्थावरकाय किसे कहते हैं ?

:- जो हलन - चलन आदि क्रिया नही कर सकते, छाया से धूप में और धूप से छाया में नहीं जा सकते उसे स्थावरकाय कहते हैं ।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायकाय और वनस्पतिकाय में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

:- एक तिर्यंचगति पाई जाती है ।

:- त्रसंकाय में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

:- चारों गतियां पाई जाती हैं ।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

:- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

:- त्रसकाय में चार जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

:- चार जातियां पाई जाती हैं - एक एकेन्द्रिय जाति को छोड़कर ।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

:- एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है ।

:- त्रसकाय में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

:- पांचों इन्द्रियां पाई जाती हैं ।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

:- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं । भाषा और मन पर्याप्ति को छोड़कर ।

:- त्रसकाय में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

:- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में दश वल प्राणों में से कितने वल प्राण पाये जाते हैं ?

:- चार वल प्राण पाये जाते हैं, जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय वल प्राण, काया वल प्राण, श्वासोच्छवास बल प्राण और वल प्राण ।

प्रः- त्रसकाय में दश बलप्राणों में से कितने बल प्राण पाये जाते हैं ?
उः- दशों बल प्राण पाये जाते हैं ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उः- तीन शरीर पाये जाते हैं । जैसे -औदारिक शरीर, तेजस शरीर और कार्मण शरीर।
प्रः- वायुकाय में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उः- चार शरीर पाये जाते हैं, आहारक शरीर को छोड़कर ।
प्रः- त्रसकाय में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं । क्योंकि मनुष्य त्रसकाय में आता है संज्ञी मनुष्य ही साधु बनता है इस अपेक्षा से त्रसकाय में पांचों शरीर पाये जाते हैं ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय और वनस्पतिकाय में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं?
उः- तीन (3) योग पाये जाते हैं, जैसे - औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रयोग और कार्मण काययोग।
प्रः- वायुकाय में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- पांच योग पाये जाते हैं, जैसे - औदारिक योग, औदारिक मिश्रयोग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग ।
प्रः- त्रसकाय में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- 15 (पंद्रह) योग पाये जाते हैं ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वनस्पतिकाय और वायुकाय में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- तीन उपयोग पाये जाते हैं, जैसे - मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन।
प्रः- त्रसकाय में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- 12 (बारह) उपयोग पाये जाते हैं । क्योंकि केवली भगवन्तः भी त्रसकाय में आते हैं इस अपेक्षा से केवलज्ञान और केवलदर्शन पाते हैं ।
प्रः- छः काया में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में 14 गुणस्थानों में से कितने गुनस्थान पाये जाते हैं ?
उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है ।
प्रः- त्रसकाय में 14 गुणस्थानों में से कितने गुनस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 14 (चौदह) गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 8 (आठ) विषय और 96 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- त्रसकाय में 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- छः काया में मिथ्यात्व के दश भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- दशों भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- छः तत्त्व पाये जाते हैं। संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और मोक्ष तत्त्व को छोड़कर।
प्रः- त्रसकाय में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- नव तत्त्व पाये जाते हैं । मनुष्य की अपेक्षा से ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उः- छः आत्मा पाई जाती है । ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर ।
प्रः- त्रसकाय में आठ आत्मओं में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?
उः- आठों आत्मा पाई जाती हैं । संयति की अपेक्षा से ।
प्रः- पृथ्वीकाय में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- एक दण्डक पृथ्वीकाय का पाया जाता है ।
प्रः- अप्काय में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- अप्काय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- तेउकाय में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- तेउकाय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- वायुकाय में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- वायुकाय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- वनस्पतिकाय में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- वनस्पतिकाय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- त्रसकाय में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- 19 दण्डक पाये जाते हैं, पांच स्थावरों के पांच दण्डक छोड़कर सभी दण्डक त्रसकाय के अन्तर्गत आ जाते हैं ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है ।
प्रः- त्रसकाय में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती है ।
प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- चार लेश्या पाई जाती है। जैसे – कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या। ज्योतिषी एवं पहला दूसरे देवलोक से कालकर इन काया में उत्पन्न

होते हैं उस अपेक्षा से अपर्याप्ता अवस्था में तेजो लेश्या होती है ।

प्रः- तेउकाय और वायुकाय में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती है, जैसे - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या ।

प्रः- त्रसकाय में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं, आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ।

प्रः- त्रसकाय में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं ।

प्रः- छः काया में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- पृथ्वीकाय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता चार भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- अप्काय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- सूक्ष्म, बादरका, अपर्याप्ता और पर्याप्ता चार भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- तेउकाय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- सूक्ष्म, बादरका, अपर्याप्ता और पर्याप्ता चार भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- वायुकाय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- चार भेद पाये जाते हैं, जैसे - सूक्ष्म, बादरका, अपर्याप्ता और पर्याप्ता ।

प्रः- वनस्पतिकाय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- छः भेद पाये जाते हैं, सूक्ष्म, साधारण और प्रत्येक के अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

प्रः- त्रसकाय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 541 भेद पाये जाते हैं । पांच स्थावर के 22 भेदों को छोड़कर ।

प्रः- छः काया में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 559 भेद मिल जाते हैं, क्योंकि पांचों के सूक्ष्म जीव सारे लोक में हैं, और त्रसकेवली समुद्घात की अपेक्षा भी जीव सारे लोक में हैं ।

नोट :-सूक्ष्म पृथ्वी, अप, तेउ, वायु वनस्पति में एक आकाश के स्कंध के सिवाय धर्मास्ति, अधर्मास्तिकाय का स्कंध पा सकता है, क्योंकि पनवणा सूत्र में पांचों सूक्ष्म को सव्व लोए कहा है, इस सिद्धांत से दोनों स्कंध पाये जाते हैं । यह बोल घणा जीव आश्री समझना चाहिये और त्रस केवली समुद्घात की अपेक्षा भी ।

प्रः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नही पाया जाता है ।

:- त्रसकाय में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

:- 12 (बारह) व्रत पाये जाते हैं ।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

:- एक भी महाव्रत नही पाया जाता हैं ।

:- त्रसकाय में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

:- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

:- एक भी भांगा नही पाया जाता है ।

:- त्रसकाय में 49 भांगों में से कितने भागें पाये जाते हैं ?

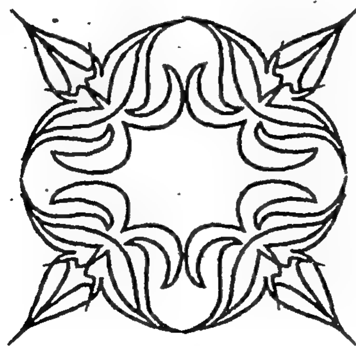
:- 49 (उनपचास) भागें पाये जाते हैं।

:- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

:- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

:- त्रसकाय में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

:- पांचों चारित्र पाये जाते हैं । यहां त्रसकाय का तात्पर्य संयति मनुष्य की अपेक्षा से जानना चाहिये।



इन्द्रिय-द्वार

चौथे बोले इन्द्रिय पांच - श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय।

प्रः- इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उः- जीव तीन लोक के ऐश्वर्य से सम्पन्न है, इसलिए उसे इन्द्र कहते हैं, उस इन्द्र (जीव) के चिह्व को इन्द्रिय कहते हैं ।

प्रः- पांचों इन्द्रियों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- रसनेन्द्रिय में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एकेन्द्रिय जाति को छोड़कर चार जातियां पाई जाती हैं ।

प्रः- घ्राणेन्द्रिय में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एकेन्द्रिय और वेइन्द्रिय जाति को छोड़कर तीन जातियां पाई जाती हैं ।

प्रः- चक्षुइन्द्रिय में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय जाति को छोडकर दो जातियां पाई जाती हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- छहों काया पाई जाती हैं, क्योंकि स्पर्शनेन्द्रिय सभी छझस्थ ससांरी जीवों में पाई जाती है।

प्रः- एकान्त स्पर्शनेन्द्रिय को छोड़कर बाकी चारों इन्द्रियों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच पर्याप्तियां पाई जाती हैं, (मन पर्याप्ति को छोड़कर) ।

प्रः- एकान्त स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं, (भाषा और मनः पर्याप्ति को छोड़कर) ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने वल प्राण पाये जाते हैं ?

उः- दशों बल प्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- प्रमुख चक्षुइन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने वल प्राण पाये जाते हैं ?

उः- आठ वल प्राण पाये जाते हैं, श्रोत्रेन्द्रिय वलप्राण और मन वलप्राण को छोड़कर ।

प्रः- प्रमुख घ्राणेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने वल प्राण पाये जाते हैं ?

उः- सात वल प्राण पाये जाते हैं, श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय और मन वल प्राण को छोड़कर।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय को छोड़कर रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- छः वलप्राण पाये जाते हैं, श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और मन वलप्राण को छोड़कर ।

प्रः- एकान्त स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में दश वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार वलप्राण पाये जाते हैं, जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय वलप्राण, काया वलप्राण, श्वासोच्छवास वलप्राण और आयुष्य वलप्राण ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं, जैसे –औदारिक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर।

प्रः- चार इन्द्रियों को छोड़कर केवल स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं, आहारक शरीर को छोड़कर।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- 15 (पंद्रह) योग पाये जाते हैं ।

प्रः- प्रमुख चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चार योग पाये जाते हैं, जैसे - व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पांच योग पाये जाते हैं, जैसे - औदारिक योग, औदारिक मिश्र, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं ।

प्रः- पांचों इन्द्रियों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- सामान्यतः आठों कर्म पाये जाते हैं, विशेष की अपेक्षा श्रोत्रेन्द्रिय में आठ कर्म भी पाये जाते हैं और सात कर्म भी पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 12 (वारह) गुणस्थान पाये जाते हैं, सयोगी केवली और अयोगी केवली गुणस्थान को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में

कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं, मिथ्यात्व गुणस्थान और सास्वादन गुणस्थान पाये जाते हैं।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है, किन्तु कर्मग्रन्थ मतानुसार दो गुणस्थान भी माने गये हैं।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- श्रोत्रेन्द्रिय के 3 विषय और 12 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- चक्षुइन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- पांच (5) विषय और (60) विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- घ्राणेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 2 विषय और 12 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- रसनेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 5 विषय और 60 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 8 विषय और 96 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- पांचों इन्द्रियों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दशों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं, मोक्ष तत्त्व को छोड़कर ।

प्रः- चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं, मोक्ष तत्त्व को छोड़कर ।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- छः तत्त्व पाये जाते हैं, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्त्व को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर, चक्षुन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- सात आत्मा पाई जाती हैं, चारित्र आत्मा को छोड़कर।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती हैं । चारित्र आत्मा और ज्ञान आत्मा को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सोलह (16) दण्डक पाये जाते हैं, पांच स्थावर के पांच दण्डक और तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डकों को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सात बल प्राण पाये जाते हैं, श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय और मन बल प्राण को छोड़कर।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय को छोड़कर रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- छः बलप्राण पाये जाते हैं, श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर ।

प्रः- एकान्त स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में दश बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार बलप्राण पाये जाते हैं, जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोच्छवास बलप्राण और आयुष्य बलप्राण ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं, जैसे -औदारिक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर।

प्रः- चार इन्द्रियों को छोड़कर केवल स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं, आहारक शरीर को छोड़कर।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- 15 (पंद्रह) योग पाये जाते हैं ।

प्रः- प्रमुख चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चार योग पाये जाते हैं, जैसे - व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पांच योग पाये जाते हैं, जैसे - औदारिक योग, औदारिक मिश्र, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं ।

प्रः- पांचों इन्द्रियों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- सामान्यतः आठों कर्म पाये जाते हैं, विशेष की अपेक्षा श्रोत्रेन्द्रिय में आठ कर्म भी पाये जाते हैं और सात कर्म भी पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 12 (बारह) गुणस्थान पाये जाते हैं, सयोगी केवली और अयोगी केवली गुणस्थान को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में

कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं, मिथ्यात्व गुणस्थान और सास्वादन गुणस्थान पाये जाते हैं।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है, किन्तु कर्मग्रन्थ मतानुसार दो गुणस्थान भी माने गये हैं।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- श्रोत्रेन्द्रिय के 3 विषय और 12 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- चक्षुइन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- पांच (5) विषय और (60) विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- घ्राणेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 2 विषय और 12 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- रसनेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 5 विषय और 60 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 8 विषय और 96 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- पांचों इन्द्रियों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दशों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं, मोक्ष तत्त्व को छोड़कर ।

प्रः- चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं, मोक्ष तत्त्व को छोड़कर ।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- छः तत्त्व पाये जाते हैं, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्त्व को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर, चक्षुन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- सात आत्मा पाई जाती हैं, चारित्र आत्मा को छोड़कर।

प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती हैं । चारित्र आत्मा और ज्ञान आत्मा को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सोलह (16) दण्डक पाये जाते हैं, पांच स्थावर के पांच दण्डक और तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डकों को छोड़कर ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षु इन्द्रिय को छोड़कर घ्राणेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- तेइन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- बेइन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- पांच दण्डक पाये जाते हैं। जैसे -पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।
प्रः- चक्षु इन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- तीन लेश्या पाई जाती है, जैसे - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- चार लेश्या पाई जाती है। जैसे - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती हैं ।
प्रः- चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- दो दृष्टियां पाई जाती हैं । जैसे - सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि ।
प्रः- अकेली स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती हैं ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं । संयति की अपेक्षा से शुक्ल ध्यान और सामान्य जीवों की अपेक्षा तीन ध्यान, चारों ध्यान एक साथ नही पाये जाते हैं ।
प्रः- चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं (धर्म और शुक्ल ध्यान को छोड़कर) ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं, आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ।
प्रः- पांचों इन्द्रियों में कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?
उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।
:- श्रोत्रेन्द्रिय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 535 भेद पाये जाते हैं । पांच स्थावर के 22 और तीन विकलेन्द्रिय के 6 इन 28 भेदों को छोड़कर ।
प्रः- एकान्त चक्षु इन्द्रिय में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- दो भेद पाये जाते हैं । चतुरिन्द्रिय के अपर्याप्ता और पर्याप्ता ।
प्रः- एकान्त घ्राणेन्द्रिय पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?
उः- दो भेद पाये जाते हैं, जैसे - तेइन्द्रिय के अपर्याप्ता और पर्याप्ता ।
प्रः-एकान्त रसनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?
उः- दो भेद पाये जाते हैं, जैसे - बेइन्द्रिय के पर्याप्ता और अपर्याप्ता ।
प्रः- एकान्त स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 22 दो भेद पाये जाते हैं, जैसे - पृथ्वीकाय के चार भेद, अप्काय के चार भेद, तेउकाय के चार भेद, वायुकाय के चार भेद और वनस्पतिकाय के छः भेद ।
प्रः- पांचों इन्द्रियों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 557 भेद पाये जाते हैं । धर्मा., अधर्मा. और आकाश. के तीन स्कन्धों को छोड़कर ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?
उः- 12 व्रत पाये जाते हैं।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसंनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?
उः- एक भी व्रत नही पाया जाता है ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उः- एक भी महाव्रत नही पाया जाता है ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?
उः- 49 भांगे पाये जाते हैं ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?
उः- एक भी भांगा नही पाया जाता है ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय पाने वाले जीवों में चारित्र कितने पाये जाते हैं ?
उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?
उः- एक भी चारित्र नही पाया जाता है ।

पर्याप्ति-द्वार

पांचवें बोले पर्याप्ति छः:- आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छवास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति और मन पर्याप्ति ।

प्रः- पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उः- आहार वर्गणा, शरीर वर्गणा, श्वासोच्छवास वर्गणा, भाषा वर्गणा, और मन वर्गणा के परमाणुओं को शरीर इन्द्रिय आदि के रूप में परिणमाने (परिवर्तन करने) की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं ।

प्रः- छहों पर्याप्ति में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती हैं ।

प्रः- भाषा और मन पर्याप्ति के अतिरिक्त चारों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति तक इन पांच पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों जातियां पाई जाती हैं । (एकेन्द्रिय जाति को छोड़कर)

प्रः- छहों पर्याप्तिया धारण करने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति धारण करने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती है ?

उः- पांच काया पाई जाती है (त्रसकाय को छोड़कर) ।

प्रः- छहों पर्याप्तिया धारण करने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती है ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्तियों को धारण करने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर मन पर्याप्ति धारण करने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती हैं, क्योंकि जो असत्री पंचेन्द्रिय है, उसके पांच पर्याप्ति है और पंचेन्द्रिय होने के कारण उसमें श्रोत्रेन्द्रिय भी पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति धारण करने वाले जीवों में कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार वलप्राण पाये जाते हैं, जैसे -स्पर्शनेन्द्रिय, काय, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण।

प्रः- भाषा पर्याप्ति में कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- नव वलप्राण पाये जाते हैं, क्योंकि असत्री तिर्यंच पंचेन्द्रिय में श्रोत्रेन्द्रिय वलप्राण

है, एक मन बलप्राण छूटता है ।

प्रः- मन पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों बलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं, (आहारक शरीर को छोड़कर) ।

प्रः- आहार पर्याप्ति सें लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं, जैसे- औदारिक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं । क्योंकि छः पर्याप्तियां संसार के सभी संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में पाई जाती है, उसमें संपति भी आ जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पांच योग पाये जाते हैं, औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग, कार्मण योग ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चार योग पाये जाते हैं, जैसे - व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, कार्मण काय योग ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- 15 (पंद्रह) योग पाये जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- तीन उपयोग पाये जाते हैं, जैसे -मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, एक अचक्षु दर्शन ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं, पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 12 (बारह) उपयोग पाये जाते हैं । क्योंकि केवली में भी सभी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- छहों पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं, मिथ्यात्व और सास्वादन गुणस्थान ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 14 (चवदह) गुणस्थान पाये जाते हैं ।
नोटः- किसी को यह शंका हो सकती है कि गुणस्थानवर्ती जीव अयोगी होते हैं. तो इनमें पर्याप्तियां कैसे पाई जा सकती हैं, उसका समाधान यह है कि यद्यपि योग प्रवृति रूप पर्याप्तियां वहां पर नही होती है, किन्तु स्वाभाविक रूप से चवदवें गुणस्थान में छहों पर्याप्तिया पाई जा सकती हैं, इसलिए चवदवें गुणस्थान में निवृति रूप योग, शरीर, काया आदि सामान्य रूप से पाये जाते हैं ।
प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर मनः- पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- स्पर्शनेन्द्रिय की अपेक्षा से 8 विषय और 96 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 20 विषय और 228 विकार पाये जाते हैं श्रोत्रेन्द्रिय के 3 विषय और विकारों को छोड़कर ।
प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- दसों भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने तत्व पाये जाते हैं ?
उः- छः तत्व पाये जाते हैं, (संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्व को छोड़कर) ।
प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने तत्व पाये जाते हैं ?
उः- आठ तत्व पाये जाते हैं, (मोक्ष तत्व को छोड़कर)।
प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने तत्व पाये जाते हैं ?
उः- नव तत्व पाये जाते हैं । संयति मनुष्य की अपेक्षा ।
प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?
उः- छः आत्मा पाई जाती है, (ज्ञान आत्मा व चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।
प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उः- सात आत्मा पाई जाती है, (चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।
प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उः- आठों आत्मा पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- पांच दण्डक पाये जाते हैं, जैसे -पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक, वनस्पतिकाय का एक दण्डक।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- तीन दण्डक पाये जाते हैं जैसे -बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरन्द्रिय का एक-एक दण्डक।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सोलह दण्डक पाये जाते हैं, जैसे - नारकी का एक दण्डक, भुवनपति का दस दण्डक, वाणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक वैमानिक का एक दण्डक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दण्डक ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती है - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- एक मिथ्यादृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- दो दृष्टियां पाई जाती है । जैसे - सम्यक् दृष्टि और मिथ्यादृष्टि ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- तीन दृष्टियां पाई जाती है ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं । (धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान को छोड़कर) एकेन्द्रिय और तीन विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं । श्रमण निर्ग्रन्थ की अपेक्षा से ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर श्वासोच्छवास पर्याप्ति पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- एकेन्द्रिय के 22 भेद पाये जाते हैं, जैसे - पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय

के चार - चार और वनस्पतिकाय के छः भेद ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- सोलह भेद पाये जाते हैं, जैसे - बेइन्द्रिय के दो भेद, तेइन्द्रिय के दो भेद, चतुरन्द्रिय के दो भेद और असंज्ञी तिर्यंच के अपर्याप्ता और पर्याप्ता के 10 भेद ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में अजीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 557 भेद पाये जाते हैं, धर्मा., अधर्मा., व आकाशा. के तीन स्कन्धों को छोड़कर।।

नोट :- केवली समुद्रघात की अपेक्षा धर्मा., अधर्मा., के भेद मिलाने से 558 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं

उः- चार सौ चौबीस (424) भेद पाये जाते हैं, 563 में से 202 असन्नी मनुष्य के, 10 असन्नी तिर्यच के, तीन विकलेन्द्रिय के छः, पांच स्थावर के 22 इस प्रकार 139 भेदों को छोड़कर ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- 12 (आरह) व्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाये जाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- गुण पचास भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- आहार पर्याप्ति से लेकर भाषा पर्याप्ति पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

प्रः- छहों पर्याप्तियां पाये जाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं । क्योंकि संयति में भी छः पर्याप्तियां पाई जाती है ।



प्राण-द्वार

छठे बोले प्राण दस, श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण, चक्षुइन्द्रिय बलप्राण, घ्रणेन्द्रिय बलप्राण, रसनेन्द्रिय बलप्राण, स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, मनोबल बलप्राण, वचन बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोच्छवास बलप्राण और आयुष्य बलप्राण ।

प्रः- प्राण किसको कहते हैं ?

उः- जिसके संयोग से यह जीव जीवन अवस्था को प्राप्त हो, और वियोग से मरणावस्था को प्राप्त हो, उसको प्राण कहते हैं ।

प्रः- दसों बल प्राण पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती है ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन चार बलप्राण धारण करने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- तीन बलप्राण के बिना घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य इन सात बलप्राणों को धारण करने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक तेइन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य आठ बलप्राणों को धारण करने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक चतुरन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- मन बलप्राण के अतिरिक्त अन्य नव बलप्राणों को धारण करने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती हैं, क्योंकि असन्नी पंचेन्द्रिय में 9 (नव) बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- दशों बलप्राणों को धारण करने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- छहों बलप्राणों को छोड़कर स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन चार बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती है ?

उः- पांच काया पाई जाती है, (त्रसकाय को छोड़कर)।

प्रः- एक साथ छः, सात, आठ, नौ और दस बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती है ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- छः बलप्राणों को छोड़कर स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन चार बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ?

उः -एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्रः- रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन छः बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ?

उः- दो इन्द्रियां पाई जाती है, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य सात बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ?

उः- तीन इन्द्रियां पाई जाती है, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य आठों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ?

उः- चार इन्द्रियां पाई जाती है । (श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर) ।

प्रः- एक साथ नौ और दस बलप्राण धारण करने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ?

उः- पाचों इन्द्रियां पाई जाती है ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन चार बलप्राण धारण करने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती है, (वचन और मन पर्याप्ति को छोड़कर) ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण के अतिरिक्त आठ बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?

उः- पांच पर्याप्तियां पाई जाती है, (मन पर्याप्ति को छोड़कर)।

प्रः- एक साथ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है ।

प्रः- एक साथ स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं, (आहारक शरीर को छोड़कर) ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य आठ बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं, (आहारक और वैक्रिय शरीर को छोड़कर) ।

प्रः- एक साघ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते है ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- एक साथ स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पांच योग पाये जाते हैं, जैसे - औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य आठ बलप्राण एक साथ पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चार योग पाये जाते हैं, जैसे - व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक

मिश्र योग और कार्मण काय योग ।
प्रः- एक साथ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- 15 (पंद्रह) योग पाये जाते हैं । संज्ञी मनुष्य की अपेक्षा से ।
प्रः- एक साथ स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- तीन उपयोग पाये जाते हैं, जैसे - मति श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन ।
प्रः- घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन सातों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- पांच उपयोग पाये जाते हैं, जैसे - मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य आठ बलप्राण एक साथ पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- छः उपयोग पाये जाते हैं, जैसे - पहले दो ज्ञान के, दो अज्ञान के और दो दर्शन के।
प्रः- दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- दस उपयोग पाये जाते हैं, (केवल ज्ञान और केवल दर्शन को छोड़कर) ।
प्रः- पांच बलप्राण छोड़कर मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- दो उपयोग पाये जाते हैं, केवल ज्ञान और केवल दर्शन ।
प्रः- दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम पांच बलप्राण छोड़कर मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन पांच बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- चार अघाति कर्म पाये जाते हैं जैसे - वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण एक साथ पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता हैं ।
प्रः- एक साथ दसों बलप्राणों में चौदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 12 (बारह) गुणस्थान पाये जाते हैं । संयोगी केवली गुणस्थान और अयोगी केवली गुणस्थान को छोड़कर।
प्रः- मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण एक साथ पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- एक संयागी केवली गुणस्थान पाया जाता है ।
प्रः- एकान्त एक आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- एक अयोगी केवली गुणस्थान पाया जाता है ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन चार बलप्राण पाने वाले

जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 आठ और 96 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन छः बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 13 विषय और 156 विकार पाये जाते हैं जैसे – स्पर्शनेन्द्रिय में 8 विषय और 96 विकार पाये जाते हैं और रसनेन्द्रिय में 5 विषय और 60 विकार पाये जाते हैं।

प्रः- घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण इन सात बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 15 विषय और 168 विकार पाये जाते हैं जैसे – स्पर्शनेन्द्रिय में 8 विषय और 96 विकार, रसनेन्द्रिय में 5 विषय और 60 विकार और घ्राणेन्द्रिय में 2 विषय और 12 विकार ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर आठों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 20 विषय और 228 विकार पाये जाते हैं, जैसे – श्रोत्रेन्द्रिय के 3 विषय और 12 विकारों को छोड़कर ।

प्रः- दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व के दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण पाने वाले जीवों में कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उः- छः तत्व पाये जाते हैं । (संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्व को छोड़कर) ।

प्रः- दसों वलप्राण पाने वाले जीवों में कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उः- नव तत्व पाये जाते हैं ।

प्रः- एकान्त आयुष्य वलप्राण पाने वाले जीवों में कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उः- पांच तत्व पाये जाते हैं जैसे – जीव, अजीव, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्व।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- छः आत्मा पाई जाती है । (ज्ञान और चारित्र आत्मा को छोड़कर)

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन वलप्राण को छोड़कर आठों वलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- सात आत्मा पाई जाती है । (चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।

प्रः- एक साथ दसों वलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया , श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- पांच दण्डक पाये जाते हैं । जैसे – पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक ।
प्रः- रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- वेइन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- तेइन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन वलप्राण को छोड़कर आठ वलप्राण पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- चतुरन्द्रिय का एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- दसों वलप्राण पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- सोलह (16) दण्डक पाये जाते हैं, पांच स्थावर और तीन विकलेन्द्रिय के 8 दण्डक को छोड़कर ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- चार लेश्या पाई जाती है, जैसे – कृष्ण, नील, कापोत और तेजो लेश्या । देखिए जाति -द्वार – एकेन्द्रिय में लेश्या के उतर में इस विषयक विशेष खुलासा किया गया है।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन वलप्राण को छोड़कर आठ वलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- तीन लेश्या पाई जाती है, जैसे – कृष्ण, नील और कापोत लेश्या ।
प्रः- मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- एक शुक्ल लेश्या पाई जाती है ।
प्रः- दसों वलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य अलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है ?
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन वलप्राण को छोड़कर आठ वलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- दो दृष्टियां पाई जाती है, सम्यग् दृष्टि, मिथ्या दृष्टि ।
प्रः- मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उः- एक सम्यग् दृष्टि पाई जाती है ।
प्रः- एक साथ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती है ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य अलप्राण पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं, आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य आठ बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं, धर्म और शुक्ल ध्यान को छोड़कर ।
प्रः- एक साथ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं । संयति की अपेक्षा से ।
प्रः- मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण एक साथ पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- एक शुक्ल ध्यान पाया जाता है । तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।
प्रः- दसों वलप्राण पाने वाले जीवों में कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?
उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं । क्योंकि लोक में सभी द्रव्य पाये जाते हैं ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य अलप्राण पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 22 भेद पाये जाते हैं जैसे - पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय के चार-चार और वनस्पतिकाय के छः भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- वेइन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुन्द्रिय और मन वलप्राण को छोड़कर अन्य सात वलप्राण पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- तेइन्द्रिय के दो भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- दसों वलप्राण पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 565 भेद पाये जाते हैं । पांच स्थावर के तीन विकलेन्द्रिय के 6 भेद छोड़कर।
प्रः- मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण एक साथ पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 15 (पंद्रह) भेद पर्याप्ता कर्मभूमि मनुष्य के पाये जाते हैं ।

प्रः- दसों बलप्राणों में अजीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 557 भेद पाये जाते हैं, धर्मा., अधर्मा. और आकाश. के तीन स्कन्धों को छोड़कर।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर अन्य सात बलप्राण पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- एक साथ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता हैं ।

प्रः- एक साथ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर आठों बलप्राण एक साथ पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नही पाया जाता है ।

प्रः- दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

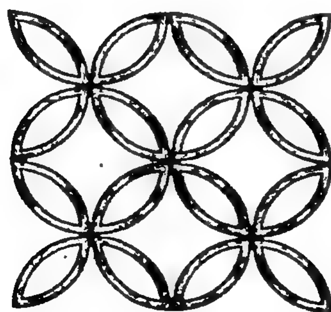
उः- 49 भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय और मन वलप्राण के अतिरिक्त अन्य आठ प्राण पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

प्रः- एक साथ दसों बलप्राण पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं । क्योंकि संयति मुनि में भी सभी बलप्राण पाये जाते हैं ।



विचार

'हाथ से दान और मन से धर्म करना चाहिए ।

– सुमति मुनि

शरीर-द्वार

सातवें बोल शरीर पांच जैसे - औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर ।

प्रः- औदारिक शरीर किसे कहते हैं ?

उः- मनुष्य तिर्यंच के स्थूल शरीर को औदारिक शरीर कहते हैं, अथवा हाड-मांस लोही राध जिसमें हो उसको औदारिक शरीर कहते हैं ।

प्रः- औदारिक शरीर के स्वाभाव क्या है ?

उः- इसका स्वाभाव सड़ना, गलना, विध्वंस (विनाश होना है) ।

प्रः- वैक्रिय शरीर किसे कहते हैं ?

उः- जिसमें छोटे - बडे एक आदि नाना प्रकार के रूप बनाने की शक्ति हो उसको वैक्रिय शरीर कहते हैं, तथा देव और नारकी जीवों के शरीर को वैक्रिय शरीर कहते हैं, अथवा हाड-मांस, लोही, राघ नहीं हो तथा मरने के बाद कपूर की तरह बिखर जाये उसको वैक्रिय शरीर कहते हैं।

प्रः- वैक्रिय शरीर कितने प्रकार के होते हैं ?

उः- वैक्रिय शरीर दो प्रकार के होते हैं, जैसे - औपपातिक वैक्रिय शरीर, लब्धि प्रत्यय शरीर ।

प्रः- औपपातिक वैक्रिय शरीर किसे कहते है ?

उः- देव और नारकी के होते है ।

प्रः- लब्धि प्रत्यय शरीर किसे कहते हैं ?

उः- मनुष्य और तिर्यंच के होते है ।

प्रः- आहारक शरीर किसे कहते हैं ?

उः- छठे गुणस्थावर्ती चौदह पूर्वधारी मुनिराज को 14 पूर्व चितारते हुए कोई शंका पैदा हो, अथवा कोई आकर मुनिराज को प्रश्न पूछे, उसका जवाब 14 पूर्वों में नहीं हो अथवा उस समय मुनिराज का उपयोग नहीं लगे, वे मुनिराज एक हाथ का पुतला निकाल कर उसे केवली भगवान के पास जहां वे विचरते हैं, शंका निवारण के लिए अथवा प्रश्न का उत्तर पूछने के लिए भेजते हैं, यदि वहां से केवली भगवान विहार कर गए हों तो उस समय एक हाथ के पुतले में से मुण्ड हाथ का पुतला निकलता है, जहां केवली भगवान विराजते हैं, मुण्ड हाथ का पुतला वहां जाता है और प्रश्न का उत्तर लेकर आता है, फिर मुण्ड हाथ का पुतला, एक हाथ के पुतले में प्रवेश करता है, और एक हाथ का पुतला मुनिराज के शरीर में प्रवेश करता है, फिर मुनिराज प्रश्न का उत्तर देते हैं उसको आहारक शरीर कहते हैं ।

प्रः- उसका कालमान कितना होता है ?

उः- उसका कालमान (समय) अत्यल्प होता है । जिससे श्रोता यह समझता है कि मुनिराज सोचकर मेरे प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं ।

प्रः- तैजस शरीर किसे कहते हैं ?

उः- जो ग्रहण किये हुए आहार को पचाता है उसे तैजस शरीर कहते हैं ।

प्रः- कार्मण शरीर किसे कहते हैं ?

उः- ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के समूह को अर्थात् कर्मों के खजाने को कार्मण शरीर कहते हैं ।

प्रः- ऐसे दो शरीर कौन - से हैं जो प्रत्येक संसारी आत्मा के साथ रहते हैं ?

उः- तैजस और कार्मण शरीर प्रत्येक संसारी आत्मा के साथ रहते हैं ।

प्रः- औदारिक शरीर में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- दो गतियां पाई जाती हैं जैसे - तिर्यंच गति और मनुष्य गति ।

प्रः- वैक्रिय, तैजस और कार्मण शरीर में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती है ।

प्रः- आहारक शरीर में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती है ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है ।

प्रः- औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- पाचों जातियां पाई जाती हैं ।

प्रः- वैक्रिय शरीर में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- दो जातियां पाई जाती हैं, एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जाति ।

प्रः- आहारक शरीर में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- छहों काया पाई जाती है ।

प्रः- वैक्रिय शरीर में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- दो काया पाई जाती है, जैसे - वायुकाय और त्रसकाय ।

प्रः- वैक्रिय शरीर में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- दो जातियां पाई जाती हैं, एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जाति ।

प्रः- आहारक शरीर में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- आहारक शरीर में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- एक साथ पांचों शरीर में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?
उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है, क्योंकि पंचेन्द्रिय में पांचों शरीर पाये जाते हैं और पांचों इन्द्रियां पाई जाती है ।
प्रः- एक साथ पांचों शरीरों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?
उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।
प्रः- एक साथ पांचों शरीरों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?
उः- दसों बलप्राण पाये जाते हैं ।
प्रः- औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- 15 (पन्द्रह) योग पाये जाते हैं ।
प्रः- वैक्रिय शरीर में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- 11 योग पाये जाते हैं, जैसे - चार मन, चार वचन और तीन काया के, कार्मण काययोग, वैक्रिय काययोग और वैक्रिय मिश्र काययोग ।
प्रः- आहारक शरीर में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- 9 योग पाये जाते हैं, जैसे - चार मन, चार वचन और एक आहारक काययोग ।
प्रः- औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- 12 (बारह) उपयोग पाये जाते हैं ।
प्रः- वैक्रिय शरीर में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- दस (10) उपयोग पाये जाते हैं, जैसे - पहले चार ज्ञान के, तीन अज्ञान के और तीन दर्शन के ।
प्रः- आहारक शरीर में बारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- सात उपयोग पाये जाते हैं, जैसे - पहले चार ज्ञान के और तीन दर्शन के ।
प्रः- पांचों शरीरों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।
प्रः- औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 14 गुणस्थान पाये जाते हैं । क्योंकि चवदवें गुणस्थान में भी निवृति रूप से औदारिक शरीर पाया जाता है ।
प्रः- वैक्रिय शरीर में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- सात गुणस्थान पाये जाते हैं, जैसे -पहले से सातवें गुणस्थान तक सात गुणस्थान ।
प्रः- आहारक शरीर में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं, जैसे छठा और सातवां ।
प्रः- पांचों शरीरों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने

विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उ:- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्र:- औदारिक, वैक्रिय और तैजस, कार्मण शरीर में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- मिथ्यात्व के दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्र:- आहारक शरीर में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- एक भी भेद नहीं पाया जाता है । क्योंकि आहारक शरीर छठे और सातवें गुणस्थानवर्ती जीवों में ही पाया जाता है, जो संयति होते हैं ।

प्र:- औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर में नव तत्व में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उ:- नव तत्त्व पाये जाते हैं ।

प्र:- वैक्रिय और तैजस शरीर में कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उ:- आठ तत्त्व पाये जाते हैं, (मोक्ष तत्व को छोड़कर) ।

प्र:- पांचों शरीर में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उ:- आठों आत्मा पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्र:- औदारिक शरीर में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- दस दण्डक पाये जाते हैं जैसे – पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक, वनस्पतिकाय का एक दण्डक, वेइन्द्रिय का एक दण्डक, तेइन्द्रिय का एक दण्डक, चतुरन्द्रिय का एक दण्डक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दण्डक ।

प्र:- वैक्रिय शरीर में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- सत्रह (17) दण्डक पाये जाते हैं जैसे –सात नारकी का एक दण्डक, भुवनपतियों के दस दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक, तिर्यच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिष का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक ।

प्र:- आहारक शरीर में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है । क्योंकि मनुष्य से संयति वनकर आहारक शरीर को प्राप्त कर सकते हैं ।

प्र:- तैजस और कार्मण शरीर में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- चौबीस (24) दण्डक पाये जाते हैं । क्योंकि संसार की प्रत्येक आत्मा में ये दोनो शरीर पाये ही जाते हैं, इस अपेक्षा से सभी दण्डक पाये जाते हैं ।

प्र:- पांचों शरीरों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उ:- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्र:- औदारिक, तैजस, कार्मण और वैक्रिय शरीर में कितनी दृष्टियां पाई जाती है

उ:- तीन दृष्टियां पाई जाती है ।

प्र:- आहारक शरीर में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- एक सम्यक दृष्टि पाई जाती है। क्योंकि आहारक शरीर संयति में पाया जाता है, संयति में मिथ्या दृष्टि एंव मिश्र दृष्टि छोड़ सम्यक् दृष्टि पाई जाती है।
प्रः- औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं। संयति की अपेक्षा से।
प्रः- वैक्रिय शरीर में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं, (एक शुक्ल ध्यान को छोड़कर)।
प्रः- आहारक शरीर में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं आर्त्तध्यान और धर्म ध्यान। क्योंकि शुक्ल ध्यान आठवें गुणस्थानवर्ती जीवों से प्रारम्भ होता है जबकि आहारक शरीर सातवें गुणस्थान तक ही होता है।
प्रः- पांचों शरीरों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?
उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं।
प्रः- औदारिक शरीर में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 351 भेद पाये जाते हैं। तिर्यंच के 48 और मनुष्य के 303 भेद।
प्रः- वैक्रिय शरीर में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 233 भेद पाये जाते हैं जैसे - नारकी के 14, देवता के 198, तिर्यंच के 6 (बादर वायुकाय का पर्याप्ता एक, संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का पर्याप्ता) 15 कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्ता।
प्रः- आहारक शरीर में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 15 भेद कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्ता पाये जाते हैं। संयति की अपेक्षा से।
प्रः- तैजस और कार्मण शरीर में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 563 भेद पाये जाते हैं। क्योंकि सभी जीव के भेदवर्ती जीवों में ये दो शरीर तो अनिवार्य रूप से पाये जाते हैं।
प्रः- पांचों शरीर में अजीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 559 भेद पाये जाते हैं। आकाश के एक स्कन्ध को छोड़कर।
प्रः- औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण शरीर में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?
उः- 12 व्रत पाये जाते हैं।
प्रः- आहारक शरीर में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?
उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है। क्योंकि आहारक शरीर संयति में ही पाया जाता है, जबकि श्रावक सर्वविरति चारित्र का धारक नही होता है।
प्रः- पांचों शरीर में साधुजी के पांच महाव्रतों में कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं। क्योंकि संयति में पांचों शरीर पाये जाते हैं।
प्रः- औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण शरीर में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- गुनपचास भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- आहारक शरीर में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नही पाया जाता है । क्योंकि भांगा श्रावकों की अपेक्षा से है जबकि आहारक शरीर संयति की अपेक्षा से ।

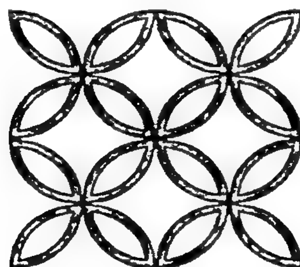
प्रः- औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों (5) चारित्र पाये जाते हैं ।

प्रः- वैक्रिय और आहारक शरीर में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- दो चारित्र पाये जाते हैं जैसे - सामायिक चारित्र और छहों स्थापनीय चारित्र । क्योंकि वैक्रिय और आहारक शरीर सातवें गुणस्थान से आगे नहीं होते हैं । जबकि चारित्र आगे भी पाये जाते हैं ।

नोटः- 1 - तैजस और कार्मण शरीर सभी संसारी जीवों के अनादिकाल से लगे हुए हैं, जब ये तैजस और कार्मण शरीर छूट जायेंगे तब जीव की मुक्ति हो जाएगी, तैजस और कार्मण चवदवें गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली में भी पाये जाते हैं ।



विचार

जैसे कच्ची छत में जल भरता है
वैसे ही अज्ञानी के मन
में कामनाएं जमा होती है ।

– सुमति मुनि

योग-द्वार

आठवें बोने योग पंद्रह (15) - चार मन के, चार वचन के और सात काया के - चार मन के, सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, चार वचन के, सत्य वचन योग, असत्य वचन योग, मिश्र वचन योग, व्यवहार वचन योग और सात काया के, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग, आहारक योग, आहारक मिश्र योग, और कार्मण काय योग ।

प्रः- योग किसे कहते हैं ?

उः- वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम या क्षय होने पर मन वचन काया के निमित्त से आत्मा प्रदेशों की चंचलता को योग कहते हैं ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और तीन काया के - वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग, और कार्मण काय योग इन ग्यारह योग पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- दो गतियां पाई जाती हैं - नरक गति और देव गति । क्योंकि इन दो गतियों में ग्यारह योगों से अधिक योग नहीं पाते हैं ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के । आहारक योग और आहारक मिश्र योग को छोड़कर । इन तेरह योग पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक तिर्यंच गति पाई जाती है। क्योंकि तिर्यंच गति में तेरह योगों से अधिक योग नहीं पाये जाते हैं कारण कि आहारक उभय योग संयति में ही पाते हैं।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पंद्रह योग पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है । मनुष्य गति में पंद्रह योग संयति की अपेक्षा से पाये जाते हैं और अन्य गतियों में संयति रूप नहीं होते हैं ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है । क्योंकि एकेन्द्रिय जीव असंज्ञी होने से चार योग, वाणी नही होने से वचन के चार योग और चारित्र का अभाव होने से आहारक और आहारक मिश्र काय के दो योग भी नहीं पाये जाते हैं ।

प्रः- व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन चारों योग पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- तीन जातियां पाई जाती हैं, जैसे - बेइन्द्रिय जाति, तेइन्द्रिय जाति और चतुरन्द्रिय जाति ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों

में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है क्योंकि पंचेन्द्रिय जीवों में ही पन्द्रह योग पाये जाते हैं वह भी मनुष्य में और मनुष्य में भी संयति की अपेक्षा से।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण योग । इन तीनों योग पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- चार काया पाई जाती हैं जैसे - पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय और वनस्पतिकाय ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक वायुकाय पाई जाती है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच इन्द्रियां पाई जाती है ।

प्रः- व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन चारों योग पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- चार इन्द्रियां पाई जाती हैं (श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर) ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में दसों वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार वलप्राण पाये जाते हैं जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य वलप्राण ।

प्रः- व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण योग इन चार योग पाने वाले जीवों में कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- आठ वलप्राण पाये जाते हैं । श्रोत्रेन्द्रिय और मन वलप्राण को छोड़कर ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों में कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

योग-द्वार

आठवें बोने योग पंद्रह (15) - चार मन के, चार वचन के और सात काया के - चार मन के, सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, चार वचन के, सत्य वचन योग, असत्य वचन योग, मिश्र वचन योग, व्यवहार वचन योग और सात काया के, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग, आहारक योग, आहारक मिश्र योग, और कार्मण काय योग ।

प्रः- योग किसे कहते हैं ?

उः- वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम या क्षय होने पर मन वचन काया के निमित्त से आत्मा प्रदेशों की चंचलता को योग कहते हैं ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और तीन काया के - वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग, और कार्मण काय योग इन ग्यारह योग पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- दो गतियां पाई जाती हैं - नरक गति और देव गति । क्योंकि इन दो गतियों में ग्यारह योगों से अधिक योग नहीं पाते हैं ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के । आहारक योग और आहारक मिश्र योग को छोड़कर । इन तेरह योग पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक तिर्यंच गति पाई जाती है। क्योंकि तिर्यंच गति में तेरह योगों से अधिक योग नहीं पाये जाते हैं कारण कि आहारक उभय योग संयति में ही पाते हैं।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पंद्रह योग पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है । मनुष्य गति में पंद्रह योग संयति की अपेक्षा से पाये जाते हैं और अन्य गतियों में संयति रूप नहीं होते हैं ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है । क्योंकि एकेन्द्रिय जीव असंज्ञी होने से चार योग, वाणी नही होने से वचन के चार योग और चारित्र का अभाव होने से आहारक और आहारक मिश्र काय के दो योग भी नहीं पाये जाते हैं ।

प्रः- व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन चारों योग पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- तीन जातियां पाई जाती हैं, जैसे - वेइन्द्रिय जाति, तेइन्द्रिय जाति और चतुरन्द्रिय जाति ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों

में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है क्योंकि पंचेन्द्रिय जीवों में ही पन्द्रह योग पाये जाते हैं वह भी मनुष्य में और मनुष्य में भी संयति की अपेक्षा से।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण योग। इन तीनों योग पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- चार काया पाई जाती हैं जैसे - पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय और वनस्पतिकाय।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक वायुकाय पाई जाती है।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच इन्द्रियां पाई जाती है।

प्रः- व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन चारों योग पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- चार इन्द्रियां पाई जाती हैं (श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर)।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में दसों बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार बलप्राण पाये जाते हैं जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छ्वास और आयुष्य बलप्राण।

प्रः- व्यवहार भाषा योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण योग इन चार योग पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- आठ बलप्राण पाये जाते हैं। श्रोत्रेन्द्रिय और मन बलप्राण को छोड़कर।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों बलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- दो मन के, सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग । दो वचन के सत्य वचन योग और व्यवहार वचन योग । तीन काया के औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन सात योग पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- पांच बलप्राण पाये जाते हैं, जैसे - मन, वचन, काया, श्वासोच्छ्वास और आयुष्य बलप्राण ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और छः काया के (कार्मण काय को छोड़कर) इन चौदह योग पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांच शरीर पाये जाते हैं । जैसे - औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर तेजस शरीर और कार्मण शरीर। क्योंकि 14 योग छठे गुणस्थान में ही पाये जाते हैं।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और तीन काया के । वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन ग्यारह योग पाने वाले जीवों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- नव उपयोग पाये जाते हैं जैसे -पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और छः काया के । कार्मण काय को छोड़कर 14 योग पाने वाले जीवो में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- सात उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के चार ज्ञान और चार दर्शन ।

प्रः- सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन सात योग पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- दो उपयोग पाये जाते हैं जैसे - केवल ज्ञान, केवल दर्शन । तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पंद्रह योग पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन सात योग पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- चार अघाती कर्म पाये जाते हैं जैसे - वेदनीय, आयु, नाम और गौत्र । तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः चार मन के, चार वचन के और पांच काया के (आहारक योग और आहारक मिश्र योग को छोड़कर) इन तेरह योग पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

:- तीन गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - पहला, दूसरा और चौथा गुणस्थान ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और दो काया के (औदारिक काय और वैक्रिय काय योग) इन दस योग पाने वाले जीवों में चौदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक तीसरा गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और चार काया के (औदारिक काय, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग) इन बारह योग पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक पांचवा गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और छः काया के (कार्मण काय योग को छोड़कर) इन चवहद योग पाने वाले जीवों में चवदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक छठा गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और तीन काया के (औदारिक योग, वैक्रिय योग और आहारक योग) इन 11 योग पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक सातवां गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और एक काया का (औदारिक काय योग) इन नव योग पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- पांच गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - आठवां, नवां, ग्यारवां और बारवां गुणस्थान।

प्रः- सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन सातं योग पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक तेरहवां गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पंद्रह योग पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के (आहारक योग और आहारक मिश्र योग को छोड़कर) तेरह योग पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- आहारक योग, आहारक मिश्र योग में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भेद नहीं पाया जाता है । क्योंकि उभय योगवर्ती जीव निश्चय रूप से संयति होते हैं, और संयति में मिथ्यात्व नहीं पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के (आहारक योग और आहारक

मिश्र योग को छोड़कर) इन तेरह योग पाने वाले जीवों में नव तत्वों में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्व पाये जाते हैं (मोक्ष तत्व को छोड़कर) ।

प्रः- आहारक योग, आहारक मिश्र योग में नव तत्वों में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उः- सात तत्व पाये जाते हैं (पाप और मोक्ष तत्व को छोड़कर) ।

प्रः- औदारिक, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाये जाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती है, ज्ञान और चारित्र आत्मा को छोड़कर यहां पर छः आत्मा का उल्लेख एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से किया गया हैं, क्योंकि ये योग एकेन्द्रिय जीवों में ही एक साथ पाये जा सकते हैं, और एकेन्द्रिय जीव मिथ्यात्वी होने से इनमें ज्ञान और चारित्र आत्मा का अभाव है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और चार काया के (औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र काय योग) इन 12 योग पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- सात आत्मा पाई जाती है, चारित्र आत्मा को छोड़कर क्योंकि उपरोक्त 12 योग देशवृत्ति श्रावकों में ही पांचवें गुणस्थान की अपेक्षा से पायें जाते हैं ।

प्रः- कार्मण काय योग को छोड़कर 14 योग पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है, क्योंकि 14 योग छठे गुणस्थान में पाये जाते हैं, और छठे गुणस्थान में सर्ववृत्ति चारित्र धर्म का उदयभाव होने की अपेक्षा से जीवों में आठों आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग, औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन सात योग पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- सात आत्मा पाई जाती है, कषाय आत्मा को छोड़कर, क्योंकि सात योग 13वें गुणस्थान में ही पाये जाते हैं और 13वें गुणस्थान में कषाय आत्मा का सर्वथा अभाव हाने से सात आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के, एक औदारिक काय योग इन 9 योग पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठवें, नवें और दसवें गुणस्थान की अपेक्षा 9 योग पाने वाले जीवों में आठों आत्मा और ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा सात आत्मा पाई जाती है, क्योंकि इन तीन गुणस्थानवर्ती आत्मा में कषाय नहीं होने से सात आत्मा का

कथन एवं उल्लेख मिलता है, ऐसे कषाय का सर्वथा प्रकार से क्षय बारहवें गुणस्थान से हो जाता है, ग्यारहवें गुणस्थान में कषाय नहीं मानने का कारण यह है कि कषाय का उदय भाव दसवें गुणस्थान तक ही होता है, किन्तु ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती जीव प्रतिपाती (गिरने वाला) होने से पुनः पतन होने से कषाय का उदय भाव दसवें गुणस्थान को प्राप्त करते ही हो जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और तीन काया के, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग । इन 11 योग पाने वाले जीवों में चौवीस दण्डक में से कितने दण्डक पाये जाते है ?

उः- चवदह दण्डक पाये जाते हैं, जैसे – सात नारकी का एक दण्डक, दस भुवनपतियों के दस दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिष का एक दण्डक और वैमानिक का एक दण्डक ।

प्रः- औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग । इन तीन योग पाने वाले चौवीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- चार दण्डक पाये जाते हैं जैसे – पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग । इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक वायुकाय का पाया जाता है ।

प्रः- व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग । इन चार योग पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- तीन दण्डक पाये जाते हैं, जैसे – बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरन्द्रिय का एक दण्डक।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के (आहारक योग और आहारक मिश्र योग को छोड़कर)। इन तेरह योग पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक तिर्यंच पंचेन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पंद्रह योग पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन पंद्रह योग पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग । इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती हैं जैसे – कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या

प्रः- व्यवहार योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग। इन चार योग पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती हैं जैसे - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या।

प्रः- औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग। इन पांच योग पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है।

प्रः- व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग। इन चार योग पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- दो दृष्टियां पाई जाती है - सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के इन 13 योग पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती है।

प्रः- आहारक काय योग और आहारक मिश्र योग इन 2 योग पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के (आहारक योग और आहारक मिश्र योग को छोड़कर) इन 13 योग पाने वाले जीवों में चार ध्यान में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं (शुक्ल ध्यान को छोड़कर)।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और दो काया के (औदारिक काय योग और वैक्रिय काय योग) इन दस योग पाने वाले जीवों में चार ध्यान में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं - आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और छः काया के (कार्मण काय योग को छोड़कर) इन 14 योग पाने वाले जीवों में चार ध्यान में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं - आर्त्तध्यान और धर्मध्यान।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और तीन काया के (औदारिक काय योग, वैक्रिय काय योग और आहारक काय योग) इन ग्यारह योग पाने वाले जीवों में चार ध्यान में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- एक धर्म ध्यान पाया जाता है।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और एक काया के (औदारिक काय योग) इन 9 योग पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- एक शुक्ल ध्यान पाया जाता हैं। आठवें गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान में

ही नव योग और एक मात्र शुक्ल ध्यान होता है ।

प्रः- सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग, औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन सात योग पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- एक शुक्ल ध्यान पाया जाता है । तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से उल्लेख किया गया है ।

प्रः- चार मन, चार वचन के और सात काया के इन पन्द्रह योग पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- चार मन, चार वचन के और तीन काया के (वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग) इन ग्यारह योग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 212 भेद पाये जाते हैं - 14 नारकी के और 198 देवता के ।

प्रः- औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र काय योग और कार्मण काय योग इन पांच योग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- चार (4) वायुकाय के पाये जाते है ।

प्रः- व्यवहार वचन योग, औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र काय योग, कार्मण काय योग इन 4 योग पाने वाले जीवों में जीव - राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- आठ (8) भेद पाये जाते हैं । बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता के आठ भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और पांच काया के (आहारक काय योग, आहारक मिश्र योग को छोड़कर) इन 13 योग पाने वाले जीवों में जीवराशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 10 भेद पाये जाते हैं, 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का अपर्याप्ता और पर्याप्ता 10 भेद।

प्रः- औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र काय योग, कार्मण काय योग इन 3 योग पाने वाले जीवों में जीव -राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 226 भेद पाये जाते हैं -202 मनुष्य के अपर्याप्ता और 24 तिर्यंच के अपर्याप्ता।

प्रः- चार मन के, चार वचन के और सात काया के इन 15 योग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 कर्मभूमि मनुष्य के, 15 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग इन 3 पाने वाले जीवों में अजीवराशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

:- 559 भेद पाये जाते हैं :- आकाशास्तिकाय के एक स्कन्ध को छोड़कर ।

:- चार मन के, चार वचन के और चार काया के (वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र काय योग, आहारक काय योग, आहारक मिश्र काय योग) इन 12 योग पाने वाले जीवों में अजीवराशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

:- 557 भेद पाये जाते हैं (धर्मा. अधर्मा. आकाशा. के 3 स्कन्धों को छोड़कर) क्योंकि पांच सूक्ष्म के उत्पात, समुद्रघात सव्व लोए पन्नवणा सूत्र में बताया गया है ।

:- चार मन के, चार वचन के और चार काया के (औदारिक का योग, औदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र काय योग) इन 12 योग पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

:- 12 व्रत पाये जाते हैं ।

:- आहारक काय योग, आहारक मिश्र काय योग और कार्मण काय योग इन 3 योग पाने वाले जीवों में श्रावक 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

:- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है ।

:- चार मन के, चार वचन के और छः काया के (कार्मण काय योग को छोड़कर) इन 14 योग पाने वाले जीवों में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

:- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

:- कार्मण काय योग पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

:- सामान्यतया एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता किन्तु केवली समुद्घात की अपेक्षा पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

:- चार मन के, चार वचन के और चार काया के (औदारिक का योग, औदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र काय योग) इन 12 योग पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

:- 49 भांगे पाये जाते हैं ।

:- आहारक काय योग, आहारक मिश्र काय योग और कार्मण काय योग इन तीन योग पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

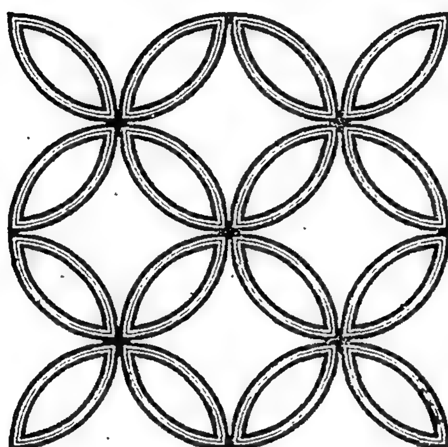
:- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है ।

:- चार मन के, चार वचन के और छः काया के (कार्मण काय योग को छोड़कर) इन 14 योग पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

:- दो चारित्र पाये जाते हैं - सामायिक और छेदोपस्थापनीय चारित्र ।

:- चार मन के, चार वचन के और एक काया के (औदारिक का योग) इन नव योग पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं । क्योंकि ये नव योग छठे गुणस्थान से लेकर वारहवें गुणस्थान तक अवश्यमेव पाये जाते हैं जवकि अन्य योग इन गुणस्थानों में नहीं पाये जाने से दशवें और उपरोक्त गुणस्थानवर्ती चारित्रों को भी उनमें अभाव है ।



विचार

जिसके मन में सच्चा धर्मप्रेम पैदा हो और वह साधक भजन करने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो जाए तो उसे मार्ग बताने वाले सद्गुरू अपने आप ही मिल जाते हैं, उसे गुरू की खोज नहीं करनी पड़ती ।

– सुमति मुनि

उपयोग-द्वार

नवें बोल उपयोग बारह - पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन - पांच ज्ञान के - मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान और केवल ज्ञान। तीन अज्ञान - मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, अवधि अज्ञान (विभंग) चार दर्शन -चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन और केवल दर्शन ।

प्रः- उपयोग किसे कहते हैं ?

उः- सामान्य और विशेष रूप से वस्तु के जानने को उपयोग कहते हैं । दर्शन वस्तु के सामान्य धर्म को जानता है और ज्ञान विशेष रूप से वस्तु के धर्म को कहते हैं ।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन नव उपयोग पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- तीन गतियां पाई जाती हैं - नरक गति, तिर्यंच गति और देव गति क्योंकि मनः पर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान और केवल दर्शन का इन गतियों में अभाव है

प्रः- पांच ज्ञान और तीन अज्ञान व चार दर्शन पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है । क्योंकि एक मनुष्य गति ही एक ऐसी गति है जिसमें सभी उपयोग यथासमय पाये जाते हैं अन्य गतियों में नहीं ।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन तीन एक साथ पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है । क्योंकि एकेन्द्रिय जाति एकान्त मिथ्यात्व रूप होने से दो अचक्षु और दर्शन का तात्पर्य स्पर्शनेन्द्रिय रूप है ।

प्रः- मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन इन पांच उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- दो जातियां पाई जाती है बेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय जाति । क्योंकि बेइन्द्रिय एवं तेइन्द्रिय जाति में अपर्याप्ता अवस्था में सास्वादन सम्यक् होने से दो ज्ञान प्रथम व पर्याप्ता अवस्था में मिथ्यात्व का उदय हो जाने से दो अज्ञान प्रथम एवं स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय का सद्भाव होने से अचक्षु दर्शन पाया जाता है ।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन ये छः उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक चतुरन्द्रिय जाति पाई जाती है । उपरोक्त बेइन्द्रिय और जाति के कथनानुसार पांच उपयोग और चक्षुन्द्रिय अधिक होने से चक्षु दर्शन पाया जाता है।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन इन बारह उपयोग पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है। यहां पंचेन्द्रिय जाति में 12 उपयोगों का कथन संज्ञी मनुष्य व संज्ञी मनुष्य में भी संयति की अपेक्षा से समझना चाहिये।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन ये तीन उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती है ?

उः- पांच काया पाई जाती है। (त्रसकाय को छोड़कर) क्योंकि पांचों कायावर्ती जीव एकान्त मिथ्यात्वी होने से दो उपयोग प्रथम और एक स्पर्शनेन्द्रिय होने से अचक्षु दर्शन।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन इन बारह उपयोग पाने वाले जीवों में पांच काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है। यहां त्रसकाय में 12 उपयोग का कथन संयति की अपेक्षा से समझना चाहिये।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन ये तीन उपयोग वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है। एकेन्द्रिय जाति के कथनानुसार समझना चाहिये।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन इन पांच उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- तीन इन्द्रियां पाई जाती हैं - घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय। बेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय जाति के कथनानुसार समझना चाहिये।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन ये छः उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- चार इन्द्रियां पाई जाती हैं। (श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर) चतुरिन्द्रिय जाति के कथनानुसार समझना चाहिए।

प्रः- पहले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन ये दस उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती हैं। पंचेन्द्रिय जाति के कथनानुसार।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन ये दो उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक भी इन्द्रियां नहीं होती हैं क्योंकि ये अनिन्द्रिय होते हैं।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन ये तीन उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं। (भाषा और मन पर्याप्ति को छोड़कर) एकेन्द्रिय जाति के कथनानुसार।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच पर्याप्तियां पाई जाती हैं। (मन पर्याप्ति को छोड़कर) चतुरिन्द्रिय जाति के कथनानुसार।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और दो दर्शन इन 12 उपयोग पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं । पंचेन्द्रिय जाति के कथनानुसार ।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन ये तीन उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में दसों बलप्राण में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार बलप्राण पाये जाते हैं जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोच्छवास बलप्राण व आयुष्य बलप्राण ।

प्रः- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन ये पांच उपयोग पाने वाले जीवों में दसों बलप्राण में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- छः बलप्राण पाये जाते हैं जैसे - घ्राणेन्द्रिय बलप्राण, रसनेन्द्रिय बलप्राण, स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोच्छावास बलप्राण और आयुष्य बलप्राण क्योंकि मतिज्ञान, श्रुतज्ञान यहां अपर्याप्ता अवस्था में होता है और अपर्याप्ता अवस्था में भाषा बलप्राण नहीं पाया जाता है ।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो दर्शन और दो अज्ञान ये छः उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- सात, आठ और दस बलप्राण अलग-अलग रूप से पाये जाते हैं सात बलप्राण (श्रोत्रेन्द्रिय, भाषा और मन बलप्राण को छोड़कर) अपर्याप्ता की अपेक्षा से । आठ बलप्राण - असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता की अपेक्षा से (भाषा और मन बलप्राण को छोड़कर) दस बलप्राण - अकर्मभूमि युगलिक मनुष्यों की अपेक्षा से।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन इन बारह उपयोग पाने वाले जीवों में दसों बलप्राण में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों बलप्राण पाये जाते हैं । पंचेन्द्रिय जाति के कथनानुसार ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन ये उपयोग पाने वाले जीवों में दसों बलप्राण में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- पांच, दो और एक बलप्राण पाये जाते हैं जैसे - तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा पांच बलप्राण - मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास और आयुष्य बलप्राण । तेरहवें गुणस्थान के अन्तिम समय की अपेक्षा दो बलप्राण - काया और आयुष्य बलप्राण और चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा एक आयुष्य बलप्राण पाया जाता हैं।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन ये बारह उपयोग पाने वाले जीवों में पांच शरीर में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं जैसे - औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर क्योंकि संज्ञी मनुष्य की अपेक्षा से ये तीनों शरीर सभी स्थान पर पाये जाते हैं ।

प्रः- पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं । क्योंकि छठे एवं सातवें गुणस्थान की अपेक्षा से पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन ये उपयोग पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं - औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर। क्योंकि केवली भगवान् में आहारक एवं वैक्रिय शरीर का अभाव होता है ।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन ये नव उपयोग पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- बारह योग पाये जाते हैं - चार मन के, चार वचन के और चार काया के (औदारिक शरीर काय योग, औदारिक मिश्र शरीर काय योग, वैक्रिय शरीर काय योग, वैक्रिय मिश्र शरीर काय योग) चारों गतियों की अपेक्षा से समझना चाहिये ।

प्रः- पहले के चार ज्ञान, तीन दर्शन इन सात उपयोग पाने वाले जीवों में 15 योग में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चवदह योग पाये जाते हैं (कार्मण काय योग को छोड़कर) संयति की अपेक्षा से समझना चाहिये ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन दो उपयोग पाने वाले जीवों में 15 योग में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पांच या सात योग पाये जाते हैं पांच हो तो - सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग और औदारिक काय योग । सात योग हो तो - उपरोक्त पांच, औदारिक मिश्र काय योग और कार्मण काय योग । तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- पहले के चार ज्ञान, तीन ज्ञान और तीन दर्शन इन दस उपयोग पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं । छठे गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थानवर्ती संयति की अपेक्षा से समझना चाहिये ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- चार अघातिक कर्म पाये जाते हैं - वेदनीय, आयु नाम और गोत्र । तेरहवें एवं चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से समझना चाहिये ।

प्रः- तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में चवदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं - पहला और तीसरा गुणस्थान । क्योंकि इन दो गुणस्थानों में सम्यक् ज्ञान का अभाव होता है ।

प्रः- पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन इन सात उपयोग पाने वाले जीवों में

चवदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- सात गुणस्थान पाये जाते हैं - छठा, सातवां, आठवां, नवां, दसवां, ग्यारवां और वारहवां गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं - तेरहवां व चौदवां गुणस्थान ।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन इन तीन उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय का 8 विषय और 96 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रतु अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन इन पांच उपयोग पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय इन तीन इन्द्रियों के 15 विषय और 168 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन इन छः उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- श्रोत्रेन्द्रिय के विषय और विकार को छोड़कर अवशेष चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाये जाते हैं ।

:- पहले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन दस उपयोग पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- केवल ज्ञान, केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- एक भी विषय और विकार नही पाया जाता है क्योंकि ये दो उपयोग पाने वाले जीव अनिन्द्रिय होते हैं ।

प्रः- पहले के तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग एक साथ पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच ज्ञान और एक केवल दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भेद नहीं पाया जाता है । क्योंकि मिथ्यात्व के भेद अज्ञानी जीवों में पाया जाता है ।

प्रः- तीन अज्ञान पाने वाले जीवों में नव तत्वों में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उः- छः तत्व पाये जाते हैं - जीव तत्व, अजीव तत्व, पुण्य तत्व, पाप तत्व,

आश्रव तत्व और बन्ध तत्व ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में नव तत्वों में से कितने तत्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्व पाये जाते हैं (पाप तत्व को छोड़कर) अथवा छः तत्व भी लिया जा सकता है क्योंकि इर्यापथिक क्रिया वाले जीवों में पाप, पुण्य और आश्रव तत्व का बंध होता नहीं है इस का कारण यह है कि इन उपयोग वाले जीवों के कर्म दलिक एकत्रित होते नहीं ।

प्रः- पहले के तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

नोटः- कुच्छेक मान्यतानुसार पुण्य और आश्रव का वन्ध भी माना जाता है, उनकी मान्यता है कि पुण्य और आश्रव के विना वेदन कैसे होगा ।

उः- छः आत्मा पाई जाती है (ज्ञान और चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- सात, छः और चार आत्मा अलग - अलग रूप से पाई जाती है । तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा सात आत्मा पाई जाती है (एक कषाय आत्मा को छोड़कर) चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा छः आत्मा (योग और कषाय आत्मा को छोड़कर) और सिद्धों की अपेक्षा चार आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन नव उपयोग पाने वाले जीवों में 24 दण्ड़कों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 15 (पंद्रह) दण्डक पाये जाते हैं जैसे - सात नारकी का एक दण्डक, दस भुवनपतियों की अपेक्षा दस दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक और एक तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक देव और नारकी जीवों की आपेक्षा से ।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन इन तीन उपयोग पाने वाले जीवों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- पांच दण्डक पाये जाते हैं जैसे - पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक ।

प्रः- पहले दो ज्ञान के, दो अज्ञान और अचक्षु दर्शन इन पांच उपयोग पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- दो दण्डक पाये जाते हैं जैसे - बेइन्द्रिय का एक दण्डक और तेइन्द्रिय का एक दण्डक ।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक चतुरन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन इन बारह उपयोग पाने वाले जीवों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन नव उपयोग पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- एक शुक्ल लेश्या पाई जाती है । क्योंकि आठवें गुणस्थान से लेकर आगे के सभी गुणस्थानों में एकान्त रूप से एक शुक्ल लेश्या होती है ।

प्रः- पहले के तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- दो दृष्टियां पाई जाती है - मिथ्या दृष्टि व मिश्र दृष्टि । यहां सम्यक् ज्ञान का आभाव होने से सम्यक् दृष्टि नहीं पाई जाती है ।

प्रः- पांच ज्ञान और चार दर्शन इन नव उपयोग पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियें में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है । क्योंकि पांच ज्ञान एवं केवल दर्शन जहां पर होंगे वहां सम्यक् दृष्टि अवश्यमेव होगी ।

प्रः- पहले के तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं, आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान । क्योंकि यहां एकान्त रूप से सम्यक् ज्ञान का अभाव होता है ।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं (एक शुक्ल ध्यान को छोड़कर) ।

प्रः- पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन इन सात उपयोग पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं - (रौद्रध्यान को छोड़कर) ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में चार ध्यान

में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- एक शुक्ल ध्यान पाया जाता है । क्योंकि आठवें गुणस्थान से लेकर आगे के सभी गुणस्थानों में एकान्त रूप से एक शुक्ल ध्यान ही होता है ।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन इन बारह उपयोग पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन नव उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 170 भेद पाये जाते हैं - नारकी के 13 (सातवीं नारकी का एक अपर्याप्ता छोड़कर) देवता के 152 (15 परमाधर्मी, 3 किल्विषी 5 अनुत्तर विमान इन 23 के अपर्याप्ता 46 भेद छोड़कर) और 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का पर्याप्ता ।

प्रः- तीन ज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच अनुत्तर विमान के दस भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन इन तीन उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 24 भेद पाये जाते हैं - पृथ्वीकाय के 4, अप्काय के 4, तेउकाय के 4, वायुकाय के 4, वनस्पतिकाय के 6, बेइन्द्रिय का पर्याप्ता 1 और तेइन्द्रिय के पर्याप्ता 1 ।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो दर्शन और एक अचक्षु दर्शन इन पांच उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दो भेद पाये जाते हैं - बेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय के अपर्याप्ता क्योंकि बेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय के पर्याप्ता अवस्था में ज्ञान नहीं पाया जाता है ।

प्रः- पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 71 भेद पाये जाते हैं - चतुरन्द्रिय का अपर्याप्ता एक, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता 5, संज्ञी तिर्यंच, पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता 5 और 30 अकर्मभूमि के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 60 ।

प्रः- पहले के दो अज्ञान और दो दर्शन इन चार उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 219 भेद पाये जाते हैं - 56 अन्तरद्वीप अपर्याप्ता और पर्याप्ता 112, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता 5 और बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय के पर्याप्ता दो ।

प्रः- पहले के तीन अज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 37 भेद पाये जाते हैं जैसे -सातवीं नारकी के अपर्याप्ता 1, 15 परमाधामी और 3 किल्विषी इन 18 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 36 कुल 37 भेद हुए।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान, तीन दर्शन और दो अज्ञान इन आठ उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 भेद कर्म भूमि मनुष्य के पाये जाते हैं।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन इन बारह उपयोग पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 कर्म भूमि मनुष्य के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 30 भेद पाये जाते हैं।

प्रः- पांच ज्ञान, तीन अज्ञान और चार दर्शन इन बारह उपयोग पाने वाले जीवों में अजीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 557 भेद पाये जाते हैं (धर्मा. अधर्मा. आकाशा. के 3 स्कन्धों को छोड़कर)।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन, दो अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन इन पांच योग पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 559 भेद पाये जाते हैं (अकाशा . के एक स्कन्ध को छोड़कर) क्योंकि ये पांच उपयोग पाने वाले जीव सर्वलोक में पाये जाते हैं।

प्रः- अन्तिम 2 ज्ञान, 3 अज्ञान और अन्तिम 1 दर्शन, इन 6 उपयोग पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते है ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- 12 ही व्रत पाये जाते है।

प्रः- पांच ज्ञान और चार दर्शन इन नव उपयोग पाने वाले जीवों में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं।

प्रः- तीन अज्ञान पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है।

प्रः- पहले के तीन ज्ञान और तीन दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- 49 भांगे पाये जाते हैं।

प्रः- तीन अज्ञान, मनः पर्याय ज्ञान, केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन छः उपयोग पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है।

:- तीन अज्ञान में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

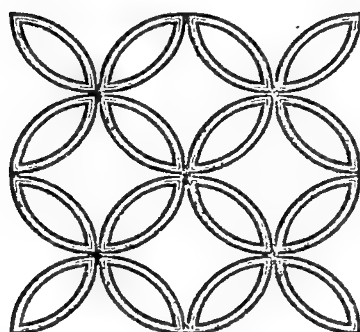
उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

प्रः- पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन इन सात उपयोग पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।

प्रः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन इन दो उपयोग पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक यथाख्यात चारित्र पाया जाता है ।



विचार

मन को सन्मार्ग पर ले जाने का पहला साधन सत्य है,
दूसरा संसार से उपरामता है,
तीसरा आचरण की उच्चता एवं पवित्रता और
चौथा अपने अपराधों के लिए पश्चाताप करना है ।

– सुमति मुनि

कर्म-द्वार

दसवें बोल कर्म आठ - 1. ज्ञानावरणीय 2. दर्शनावरणीय 3. वेदनीय 4. मोहनीय 5. आयु 6. नाम 7. गौत्र 8. अन्तराय ।

प्रः- कर्म किसको कहते हैं ?

उः- जीव के राग, द्वेष आदि परिणाम के निमित्त से कार्मण वर्गणा रूप पुद्गल, स्कन्ध जीव के साथ बन्ध को प्राप्त होते हैं उनको कर्म कहते हैं ।

1. ज्ञानावरणीय - वस्तु के विशेष धर्म को जानना 'ज्ञान' कहलाता है और जिसके द्वारा ज्ञान ढका जाये उसे 'ज्ञानावरणीय कर्म' कहते हैं। जैसे बादलों से सूर्य ढक जाता है।
2. दर्शनावरणीय - वस्तु के सामान्य धर्म को जानना 'दर्शन' कहलाता है, उस दर्शन को आच्छादित करने वाले कर्म को 'दर्शनावरणीय कर्म' कहते हैं । जैसे द्वारपाल के रोक देने पर राजा के दर्शन नहीं होते ।
3. वेदनीय - जिस कर्म के द्वारा साता (सुख) और असाता (दुःख) का वेदन अनुभव हो, उसे 'वेदनीय कर्म' कहते हैं । जैसे शहद लिपटी तलवार को चाटने से सुख और जीभ कटने से दुःख होता है ।
4. मोहनीय - जिससे आत्मा मोहित (सत् और असत् के ज्ञान से शुन्य) हो जाये, उसे 'मोहनीय कर्म' कहते हैं । जैसे - मदिरा पीने से मनुष्य बेमान हो जाता है।
5. आयुष्य - जिस कर्म के उदय से जीव चार गतियों में रूका रहे उसे 'आयु कर्म' कहते हैं। जैसे बेड़ी में बंधने से अपराधी रूक जाता है, पराधीन हो जाता है।
6. नाम - जिस कर्म के उदय से जीव गति जाति, शरीर, संस्थान, संहनन, स्वर आदि विविध पर्यायों को करें (जो जीव के अमूर्तत्व गुण को प्रगट नहीं होने) उसे 'नाम कर्म' कहते हैं । जैसे - चित्रकार अनेक प्रकार के चित्र बनाता है ।
7. गोत्र - जिस कर्म के उदय से जीव, उच्च-नीच कुलों में उत्पन्न हो, उसे 'गोत्र कर्म' कहते हैं । जैसे - कुंभकार अनेक प्रकार के छोटे बड़े बर्तन बनाता है ।
8. अन्तराय - जिस कर्म से दान, लाभ, भोग, उपयोग और वीर्य (शक्ति) में विघ्न उत्पन्न हो, उसे 'अन्तराय कर्म' कहते हैं । जैसे - राजा की आज्ञा होने पर भी भण्डारी दान की वस्तु देने से बाधक होता है ।

प्रः- आठों कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती हैं ।

प्रः- वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र इन चार अघातिक कर्मों को पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है । तेरहवें एवं चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीव में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों जातियां पाई जाती हैं ।

:- चार अघातिक (वेदनीय, नाम व गोत्र) कर्म पाने वाले जीवों में

कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है। तेरहवें एवं चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती है ?

उः- छः काया पाई जाती है।

प्रः- चार अघातिक (वेदनीय, आयु, नाम व गोत्र) कर्म पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती है ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है। संयति की अपेक्षा से।

प्रः- चार अघाति कर्म पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक भी इन्द्रिय नहीं पाई जाती है, क्योंकि चार अघाति कर्म केवली भगवान् में ही पाये जाते हैं, जवकि केवली भगवान् अनिन्द्रिय होते हैं।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती हैं।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में पर्याप्तियां कितनी पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं तथा छः, पांच, चार और तीन पर्याप्तियां भी पाई जाती हैं।

प्रः- चार अघातिक कर्म (वेदनीय, आयु, नाम व गोत्र) पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीव में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दशों बलप्राण पाये जाते हैं।

प्रः- चार अघातिक (वेदनीय, आयु, नाम व गोत्र) कर्म पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- पांच बलप्राण पाये जाते हैं जैसे - 1. मन बलप्राण 2. वचन बलप्राण 3. काया बलप्राण 4. श्वासोच्छवास बलप्राण और 5. आयुष्य बलप्राण। तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से, चवदवे गुणस्थान की अपेक्षा एक आयुष्य बलप्राण पाया जाता है।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं।

प्रः- चार अघातिक (वेदनीय, आयु, नाम व गोत्र) कर्म पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं जैसे - औदारिक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर क्योंकि केवली भगवान् में तीन शरीर ही पाये जाते हैं वैक्रिय और आहारक शरीर सातवें गुणस्थान तक ही होते हैं।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं।

प्रः- चार अघातिक (वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र) कर्म पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- सात योग पाये जाते हैं जैसे - 1. सत्य मनोयोग 2. व्यवहार मनोयोग 3. सत्य वचन योग 4. व्यवहार बचन योग 5. औदारिक योग 6. औदारिक मिश्र योग और 7. कार्मण काय योग तथा अयोगी अवस्था भी पाई जाती है। तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- आठों कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- दस उपयोग पाये जाते हैं (केवल ज्ञान और केवल दर्शन को छोड़कर) प्रथम गुणस्थान से लेकर ग्याहरवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- मोहनीय कर्म को छोड़कर सात कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- सात उपयोग पाये जाते है, प्रथम के चार ज्ञान और प्रथम के तीन दर्शन

प्रः- चार अघातिक (वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र) कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- दो उपयोग पाये जाते हैं जैसे - केवल ज्ञान और केवल दर्शन । तेरहवें एवं चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- आठों कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- ग्यारह गुणस्थान पाये जाते हैं (क्षीण मोहनीय गुण., सयोगी केवली गुण., अयोगी के केवली गुण. को छोड़कर) ।

प्रः- मोहनीय कर्म को छोड़कर सात कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक बारहवां क्षीण मोहनीय गुण. पाया जाता है ।

प्रः- चार अघाति कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं - 1. सयोगी केवली गुण. 2. अयोगी केवली गुण.।

प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीवों में 5 इन्द्रियों के कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- चार अघाति कर्म पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- एक भी विषय और विकार नहीं पाया जाता है क्योंकि चार अघाति कर्म पाने वाले जीव अनिन्द्रय होते हैं ।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीव में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दसों भेद पाये जाते हैं ।

:- चार अघाति कर्म पाने वाले जीव में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व का एक भी भेद नहीं पाया जाता है। क्योंकि चार अघाति कर्म पाने वाले जीव निश्चित रूप से सम्यक्त्वी होते हैं।
प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर)।
प्रः- चार अघाति कर्म पाने वाले जीव में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं। पाप तत्त्व को छोड़कर। कहीं पांच तत्त्व भी बताये जाते हैं जीव, अजीव, संवर, निर्जरा व बन्ध।
प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उः- आठों आत्मा पाई जाती है।
प्रः- चार अघाति (वेदनीय, आयु, नाम व गोत्र) कर्म पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उः- सात या छः आत्मा पाई जाती है सात आत्मा पाने के समय कषाय आत्मा नहीं पाई जाती है। छः आत्मा पाने के समय कषाय आत्मा और योग आत्मा नहीं पाई जाती है। सात आत्मा तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से और छः आत्मा चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से है।
प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीव में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- चौवीस दण्डक पाये जाते हैं।
प्रः- चार अघाति कर्म पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- एक मनुष्य का दण्डक पाये जाते है। केवली भगवान् की अपेक्षा से।
प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- छहों लेश्या पाई जाती है।
प्रः-चार अघाति कर्म (वेदनीय, आयु, नाम,गोत्र) पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- एक शुक्ल लेश्या पाई जाती है।
प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती है।
प्रः- चार अघाति कर्म पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है। क्योंकि केवली भगवान् निश्चित रूप से सम्यक् दृष्टि ही होते हैं।
प्रः- चार अघाति कर्म पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- एक शुक्ल ध्यान पाया जाता है। अन्तिम दो गुणस्थानों की अपेक्षा से।
प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं।
प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीवों में क्षेत्र की अपेक्षा कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?
उः- छः द्रव्य पाये जाते हैं।

प्रः- आठ कर्म पाये जाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 563 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- चार अघाति कर्म पाये जाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता, 15 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में अजीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 354 या 381 या 383 भेद अजीव राशि के पाये जाते हैं । क्योंकि जीव अष्टस्पर्शी होता है ।

प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीवों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- 12 ही व्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- चार अघाति (वेदनीय, आयु, नाम, गौत्र) कर्म पाने वाले जीव में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी वत नही पाया जा सकता है । क्योंकि चार अघाति कर्म वाले जीव निश्चित रूप से संयति होते हैं ।

प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीवों में पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- चार अघाति (वेदनीय, आयु, नाम व गौत्र) कर्म पाये जाने वाले जीवों में कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों ही महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- आठों कर्म पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- 49 (गुणपचास) भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- चार अघाति (वेदनीय, आयु, नाम, गौत्र) कर्म पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है क्योंकि भांगे श्रावकों की अपेक्षा से हैं संयति की अपेक्षा से नहीं ।

प्रः- आठ कर्म पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों ही चारित्र पाये जाते हैं ।

प्रः- चार अघाति (वेदनीय, आयु, नाम, गौत्र) कर्म पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक यथाख्यात चारित्र पाया जाता है । क्योंकि सामायिक एवं छेदोपस्थापनीय चारित्र नवें गुणस्थान तक ही, परिहार विशुद्धि चारित्र सातवें गुणस्थान तक ही और सूक्ष्म सम्पराय चारित्र दसवें गुणस्थान में ही होते है, आगे के चार गुणस्थानों में ये चारित्र नहीं होने से एक यथाख्यात चारित्र ही पाया जाता है ।



गुणस्थान-द्वार

ग्यारवें बोले गुणस्थान - 14. - 1. मिथ्यात्व गुणस्थान 2. सास्वादन गुण. 3. मिश्र गुण. 4. अविरति सम्यक् दृष्टि गुण. 5. देशविरति श्रावक गुण. 6. प्रामदी साधु गुण. 7. अप्रमादी साधु गुण. 8. नियट्टि बादर गुण. 9. अनियट्टि बादर गुण. 10. सूक्ष्म सम्पराय गुण. 11. उपशान्त मोहनीय गुण. 12. क्षीण मोहनीय गुण. 13. सयोगी केवली गुण. 14. अयोगी केवली गुणस्थान ।

प्रः- गुणस्थान किसको कहते हैं ?

उः- आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि गुणों की शुद्धि अशुद्धि और प्रकर्ष - अप्रकर्ष की तरतमता अवस्था को गुणस्थान कहते हैं ।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर चौथे गुणस्थान तक इन चार गुणसथानों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती हैं ।

प्रः- पांचवां गुणस्थान पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- दो गतियां पाई जाती हैं - 1. तिर्यंच गति 2. मनुष्य गति । क्योंकि ये दो गतियों वाले जीव ही श्रावक व्रत स्वीकार कर सकते हैं वह भी संज्ञी जरूरी है ।

प्रः- छठे गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन नव गुणस्थान पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्यगति पाई जाती हैं । कयोंकि संयम व्रत संज्ञी मनुष्य ही धारण कर सकता है दूसरी गति वाले जीव नहीं ।

प्रः- पहले गुणस्थान में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों जातियां पाई जाती हैं ।

प्रः- दूसरे गुणस्थान की कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- चार जातियां पाई जाती हैं (एकेन्द्रिय जाति को छोड़कर) ।

प्रः- तीसरे गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन तेरह गुणस्थानों में कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है । क्योंकि प्रथम गुणस्थान ही एक ऐसा है कि जहां पर त्रस और स्थावर (एकेन्द्रिय के) जीव पाये जाते हैं आगे त्रस ही ।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर बारह गुणस्थान में कितनी इन्द्रियां पाइ जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती हैं ।

प्रः- तेरहवां व चौवदवां गुणस्थान ये दो गुणस्थान पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- एक भी इन्द्रियां नहीं पाई जाती हैं क्योंकि इन दोनों गुणस्थान वर्ती जीव

अनिन्द्रिय होते हैं ।

प्रः-पहले गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन 14 गुणस्थान पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन बारह गुणस्थान पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- 10 (दसों) बलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- तेरहवें गुणस्थान में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- पांच बलप्राण पाये जाते हैं । जैसे - मन बलप्राण, वचन बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोच्छवास बलप्राण, आयुष्य बलप्राण ।

प्रः- चवदहवें गुणस्थान में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- एक आयुष्य बलप्राण पाया जाता है । किन्हीं - किन्हीं की मान्यता के अनुसार योग प्रवृत्ति रूप नहीं किन्तु निवृत्ति यानि सामान्य रूप से काया बलप्राण भी पाया जा सकता है ।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर पांचवें गुणस्थान तक इन पांच गुणस्थान पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं - औदारिक, तैजस, कार्मण और वैक्रिय शरीर । क्योंकि आहारक शरीर संयति में ही पाया जाता है । वह भी छठे और सातवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- छठे, सातवें गुणस्थानवर्ती जीव में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- आठवें गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन सात गुणस्थानों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं - औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर। क्योंकि वैक्रिय शरीर भी प्रथम सात गुणस्थानों तक ही होता है ।

प्रः- पहले, दूसरे और चौथे इन तीन गुणस्थानों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- तेरह योग पाये जाते हैं (आहारक योग व आहारक मिश्र योग को छोड़कर) ।

प्रः- तीसरे गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- दस योग पाये जाते हैं । जैसे - चार मन के, चार वचन के और दो काया के (औदारिक काया योग और वैक्रिय काया योग) ।

प्रः- पांचवें गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- बारह (12) योग पाये जाते हैं जैसे - चार मन के, चार वचन के और चार काया के (औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र योग) ।

प्रः- छठे गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चवदह (14) योग पाये जाते हैं (कार्मण काय योग को छोड़कर) ।

प्रः- सातवें गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- ग्यारह (11) योग पाये जाते हैं जैसे - चार मन के, चार वचन के और तीन काया के (औदारिक काय योग, आहारक काय योग और वैक्रिय काय योग ।

प्रः- आठवें गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान इन पांच गुणस्थानों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- नौ योग पाये जाते हैं । जैसे - चार मन के, चार वचन के और एक काया का (औदारिक काय योग) ।

प्रः- तेरहवें गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पांच और सात योग पाये जाते हैं जैसे - पांच-सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग और व्यवहार वचन योग, औदारिक काय योग सात हो तो उपरोक्त पांच और औदारिक मिश्र योग, कार्मण काय योग ये सात योग हुए ।

प्रः- चवदवें गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- एक भी योग नहीं पाया जाता है । क्योंकि चवदवें गुणस्थानवर्ती जीव अयोगी होते हैं ।

प्रः- पहला और तीसरा इन दो गुणस्थानों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं जैसे - तीन अज्ञान और तीन दर्शन (केवल दर्शन को छोड़कर) ।

प्रः- दूसरे, चौथे और पांचवें इन तीन गुणस्थानों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं. पहले के तीन ज्ञान और तीन दर्शन ।

प्रः- छठे गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक इन सात गुणस्थानों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- सात उपयोग पाये जाते हैं पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन ।

प्रः- तेरहवें और चवदहवें इन दो गुणस्थानों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- केवल ज्ञान और केवल दर्शन दो उपयोग पाये जाते हैं ।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर ग्यारहवें गुणस्थान इन ग्यारह गुणस्थानों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- बारहवें गुणस्थान में कितने कर्म पायें जाते हैं ?

उः- सात कर्म पाये जाते हैं । (मोहनीय कर्म को छोड़कर) ।

प्रः- तेरहवें व चवदवें गुणस्थानों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- चार अघाति कर्म पाये जाते हैं - वेदनीय, आयु, नाम व गौत्र ।

प्र:- पहले गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक इन 12 गुणस्थानों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उ:- पांचों ही इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
प्र:- तेरहवें व चौदहवें गुणस्थानों में कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उ:- एक भी विषय और विकार नहीं पाया जाता है क्योंकि दोनों गुणस्थानवर्ती जीव आत्मज्ञानी नो इन्द्रिय होते हैं ?
प्र:- पहले गुणस्थान में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- दसों भेद पाये जाते हैं । अधिकतर मिश्र दृष्टि वाले जीवों को भी मिथ्यात्व के अन्तर्गत ही मानते हैं । क्योंकि मिश्र दृष्टि वाले जीव अज्ञानी होते हैं ।
प्र:- पहले और तीसरे गुणस्थानों को छोड़कर अन्य 12 गुणस्थानों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- एक भी भेद नहीं पाया जाता है । क्योंकि इन गुणस्थानवर्ती जीवों में सम्यक्त्व पाया जाता है ।
प्र:- पहले और तीसरा इन दो गुणस्थानों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उ:- छः तत्त्व पाये जाते हैं । जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व व बन्ध तत्त्व ।
प्र:- दूसरे, चौथे, पांचवें इन तीन गुणस्थानों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उ:- आठों तत्त्व पाये जाते हैं (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।
प्र:- छठे गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक इन आठ गुणस्थानों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उ:- सात तत्त्व पाये जाते हैं (पाप और मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) । 1
प्र:- चवदवें गुणस्थान में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उ:- पांच तत्त्व पाये जाते हैं जैसे - जीव, अजीव, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्त्व ।
प्र:- पहले और तीसरे गुणस्थानों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उ:- छः आत्मा पाई जाती है ज्ञान आत्मा व चारित्र आत्मा को छोड़कर ।
प्र:- दूसरें, चौथे और पांचवें इन तीन गुणस्थानों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उ:- सात आत्मा पाई जाती है (चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।
प्र:- छठे, सातवें, आठवें, नवें और दसवें इन पांच गुणस्थानों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उ:- आठों आत्मा पाई जाती है ।
प्र:- ग्यारहवें, बारहवें तेरहवें इन तीन गुणस्थानों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उ:- कषाय आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाई जाती है ।

नोट :- 1. मोह क्षय की अपेक्षा से मोक्ष तत्व भी मान लेने से आठ तत्व पाये जा सकते हैं ।

प्रः- चवदवें गुणस्थान में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती है - कषाय और योग आत्मा को छोड़कर ।

प्रः- पहले गुणस्थान में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 24 (चौबीस) दण्डक पाये जाते हैं ।

प्रः- दूसरे गुणस्थान में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 19 (उगणीस) दण्डक पाये जाते हैं । पांच स्थावर के पांच दण्डक छोड़कर ।

प्रः- तीसरे और चौथे गुणस्थान में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सोलह (16) दण्डक पाये जाते हैं । पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय के आठ दण्डकों को छोड़कर ।

प्रः- पांचवें गुणस्थान में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- दो दण्डक पाये जाते हैं जैसे तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक ।

प्रः- छठे गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन नव गुणस्थानों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है । क्योंकि इन गुणस्थानवर्ती जीव सर्ववर्ती होते हैं और सर्वव्रत मनुष्य ही धारण कर सकता है ।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर छठे गुणस्थान तक इन छः गुणस्थानों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- सातवें गुणस्थान में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती है । तेजो लेश्या, पद्म लेश्या व शुक्ल लेश्या ।

प्रः- आठवें गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक इन छः गुणस्थानों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- एक शुक्ल लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- चवदवें गुणस्थान में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- एक भी लेश्या नहीं पाई जाती है क्योंकि जहां कर्म होते हैं वहीं लेश्या पाई जाती है जहां कर्म नहीं तो वहां लेश्या भी नहीं, चवदवां गुणस्थान कर्म रहित है ।

प्रः- पहले गुणस्थान में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- दूसरे गुणस्थान में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- तीसरे गुणस्थान में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मिश्र दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- चौथे गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन ग्यारह गुणस्थानों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।
प्रः- पहले, दूसरे, तीसरे इन तीन गुणस्थानों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं :- 1. आर्त्तध्यान 2. रौद्रध्यान ।
प्रः- चौथे व पांचवें गुणस्थान में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं (शुक्ल ध्यान को छोड़कर) ।
प्रः- छठे गुणस्थान में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं :- 1. आर्त्तध्यान 2. रौद्रध्यान ।
प्रः- सातवें गुणस्थान में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- एक धर्म ध्यान पाया जाता है ।
प्रः- आठवें गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन सात गुणस्थानों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- एक शुक्ल ध्यान पाया जाता है ।
प्रः- चवदे गुणस्थानों में कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?
उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।
प्रः- पहले गुणस्थान में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 553 (पांच सौ तरेपन) भेद पाये जाते हैं (5 अनुत्तर विमान के 10 भेदों को छोड़कर ।
प्रः- दूसरे गुणस्थान में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 213 भेद पाये जाते हैं जैसे - नारकी के 13 (सातवीं नारकी के अपर्याप्ता को छोड़कर) तिर्यंच के 18 (5 असंज्ञी तिर्यंच और 3 विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता और संज्ञी तिर्यंच के पर्याप्त और अपर्याप्त दस (10) । मनुष्य के 30 कर्मभूमि के पर्याप्ता अपर्याप्ता, देव के 152) भवनपति के दस, वाणव्यन्तर के 16, जृम्भक के 10, ज्योतिषी के 10, वैमानिक के 12, लोकान्तिक के 9 और 9 ग्रेवेयक इन सबके पर्याप्ता और अपर्याप्ता (परमाधामी तीन किल्विषी और पांच अनुत्तर विमान को छोड़कर) ।
प्रः- तीसरे गुणस्थान में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 103 (एक सौ तीन भेद) पाये जाते हैं । नारकी के 7, तिर्यंच के 5, कर्मभूमि मनुष्य के 15, देव के 76, (परमाधामी के 15, किल्विषी के 3 और अनुत्तर के 5) ये 23 पर्याप्ता कम करके सभी पर्याप्ता पाये जाते हैं ।
प्रः- चौथे गुणस्थान में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 275 भेद पाये जाते हैं - नारकी के 13 (सातवीं नारकी का अपर्याप्ता को

के प. और अप.। देवता के 162 (15 परमाधामी और तीन किल्विषी के प. और अपर्याप्ता 36 भेदों को छोड़कर)

प्रः- पांचवें गुणस्थान में जीव रीश के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 20 भेद पाये जाते हैं - 15 कर्मभूमिज, 5 सन्नी तिर्यंच के पर्याप्ता।

प्रः- छठे गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक के 9 गुणस्थानों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 भेद कर्मभूमि मनुष्य के पाये जाते हैं।

प्रः- चवदहे (14) गुणस्थानों में अजीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- (557) पांच सौ सत्तावन भेद पाये जाते हैं (धर्मा. अधर्मा. आकाशा. के तीन स्कन्धों को छोड़कर)।

प्रः- पांचवें गुणस्थान में श्रावकजी के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- 12 व्रत पाये जाते हैं।

प्रः- पांचवें गुणस्थानों को छोड़कर वाकी के तेरह गुणस्थानों में श्रावक के कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है। क्योंकि प्रथम चार गुणस्थान अविरत होते हैं, और छठे से आगे के गुणस्थान सर्वविरत होते हैं।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर पांचवें गुणस्थान तक इन पांच गुणस्थानों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है। क्योंकि महाव्रत छठे गुणस्थान से ही पाये जाते हैं।

प्रः- छठे गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन नव गुणस्थानों में कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों ही महाव्रत पाये जाते हैं।

प्रः- पांचवें गुणस्थान में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- (49) उनपचास भांगे पाये जाते हैं।

प्रः- पांचवें गुणस्थान को छोड़कर वाकी के तेरह गुणस्थानों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है। क्योंकि भांगे देशविरत श्रावक में ही पाये जाते हैं।

प्रः- पहले गुणस्थान से लेकर पांच गुणस्थान तक इन पांच गुणस्थानों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है।

प्रः- छठे और सातवें इन दो गुणस्थानों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- तीन चारित्र पाये जाते हैं। सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र और

परिवार विशुद्धि चारित्र ।

प्रः- आठवें, नवें इन दो गुणस्थानों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

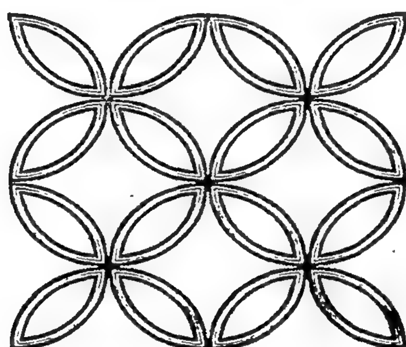
उः- दो चारित्र पाये जाते हैं - सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र ।

प्रः- दशवें गुणस्थान में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक सूक्ष्म सम्पराय चारित्र पाया जाता है ।

प्रः- ग्यारवें गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक इन चार गुणस्थानों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक यथाख्यात चारित्र पाया जाता है ।



विचार

मन की तरंगों को रोकने में बड़ा ही सुख है,
इनके बिना रोके मनुष्य ऐसे बह जाता है,
जैसे हवा के झोंके में बिना पतवार की नाव ।

– सुमति मुनि

विषय-द्वार

बारहवें बोले पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार इस प्रकार हैं ।

श्रोत्रेन्द्रिय के तीन विषयः- 1. जीव शब्द 2. अजीव शब्द 3. मिश्र शब्द ।

चक्षुइन्द्रिय के पांच विषयः- 1. काला 2. नीला 3. लाल 4. पीला 5. सफेद ।

घ्राणेन्द्रिय के दो विषयः- 1. सुरभिगंध 2. दुरभिगंध ।

रसनेन्द्रिय के पांच विषयः- 1. तीखा 2. कड़वा 3. कसैला 4. खट्टा 5. मीठा ।

स्पर्शनेन्द्रिय के आठ विषयः- 1. कर्कश (खरदरा) 2. मृदु (सुहाला) 3. लघु 4. गुरू (भारी) 5. शीत (ठण्डा) 6. उष्ण (गर्म) 7. रूक्ष (लूखा) 8. स्निग्ध (चोपड़िया) ।

दो सौ चालीस विकार इस प्रकार हैं :-

श्रोत्रेन्द्रिय के 12 विकारः- 1. जीव शब्द 2. अजीव शब्द 3. मिश्र शब्द 4. ये तीन शुभ और तीन अशुभ इन छः ऊपर राग और छः ऊपर द्वेष, इस प्रकार बारह (12) चक्षुइन्द्रिय के पांच विषयों के 60 विकार, 5 सचित, 5 अचित, 5 मिश्र ये15 शुभ और 15 अशुभ इन 30 ऊपर राग और 30 ऊपर द्वेष इस प्रकार 60 विकार ।

घ्राणेन्द्रिय के दो विषयों के 12 विकारः- दो सचित, दो अचित और दो मिश्र, इन 6 ऊपर राग और 6 ऊपर द्वेष इस प्रकार 12 विकार ।

रसनेन्द्रिय के पांच विषय और 60 विकारः- 5 सचित, 5 अचित, 5 मिश्र, ये 15 शुभ, 15 अशुभ इन 30 ऊपर राग और 30 द्वेष ऊपर इस प्रकार 60 विकार ।

स्पर्शनेन्द्रिय के आठ विषयों के 96 विकारः- 8 सचित, 8 अचित, 8 मिश्र ये 24 शुभ और 24 अशुभ इन 48 ऊपर राग और 48 ऊपर द्वेप इस प्रकार कुल 240 विकार ।

प्रः- इन्द्रियों के विषय किसको कहते हैं ?

उः- जिनको आत्मा इन्द्रियों द्वारा जानती है उन्हें इन्द्रियों के विषय कहते हैं ।

प्रः- अपने शरीर में खरदरा क्या है ?

उः- पैर की एड़ी ।

प्रः- अपने शरीर में सुहाला क्या है ?

उः- गले का तलवा ।

प्रः- अपने शरीर में भारी क्या है ?

उः- हड्डियां ।

प्रः- अपने शरीर में हल्का क्या है ?
उः- केश ।
प्रः- अपने शरीर में ठण्डा क्या है ?
उः- कलेजा ।
प्रः- अपने शरीर में सनिग्ध क्या है ?
उः- आंखों की कीकी ।
प्रः- अपने शरीर में रूक्ष क्या है ?
उः- जीभ ।
प्रः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?
उः- चारों गतियां पाई जाती हैं ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?
उः- सिर्फ एक तिर्यंचगति पाई जाती है ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय के 13 विषय और 156 विकार पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- एक बेइन्द्रिय जाति पाई जाती है ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय इन तीन इन्द्रियों के 15 विषय और 168 विकार पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- एक तेइन्द्रिय पाई जाती है ।
प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- एक चतुरन्द्रिय जाति पाई जाती है ।
प्रः- पांचों इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।
प्रः- सिर्फ स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- पांच काया पाई जाती है (त्रसकाय को छोड़कर) ।
प्रः- पांचों इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितनी काया पाई जाती हैं ?
उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।
प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विपय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?
उः- एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय के 13 विषय और 154 विकार पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ?

उः- सिर्फ दो इन्द्रियां पाई जाती है जैसे - रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ।

प्रः- घ्राणेन्द्रिय में 15 विषय और 168 विकार पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- तीन इन्द्रियां पाई जाती है जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय ओर घ्राणेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्रः- चक्षुइन्द्रिय में 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- चार इन्द्रियां पाई जाती हैं (श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर) चतुरिन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है । पंचेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय में 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती है जैसे - आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छवास पर्याप्ति । एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय के 15 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच पर्याप्तियां पाई जाती हैं । (मन पर्याप्ति को छोड़कर) ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय में 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच तथा छहों पर्याप्तियां पाई जाती है । पांच पर्याप्तियां असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से और छः पर्याप्तियां संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से पाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार बलप्राण पाये जाते हैं जैसे - स्पर्शनेन्द्रिय वलप्राण, काया वलप्राण, श्वासोच्छवास बलप्राण और आयुष्य वलप्राण। एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय के 13 विषय और 16 विकार पाने वाले जीवों में कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- छः दलप्राण पाये जाते हैं जैसे - रसनेन्द्रिय वलप्राण, स्पर्शनेन्द्रिय दलप्राण, वचन

बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोच्छवास बलप्राण और आयुष्य बलप्राण ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्रानेन्द्रिय के 15 विषय और 18 विकार पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- सात बलप्राण पाये जाते हैं (श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण, चक्षुइन्द्रिय बनप्राण और मन बलप्राण को छोड़कर) ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- आठ बलप्राण पाये जाते हैं (श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण और मन बलप्राण को छोड़कर) ।

प्रः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- नव तथा दस बलप्राण पाये जाते हैं । नव बलप्राण असंज्ञी पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से हैं क्योंकि असंज्ञी के एक मन बलप्राण नहीं होते है ।

प्रः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं । (आहारक शरीर को छोड़कर) । एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से क्योंकि वायुकाय में चार शरीर होते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय इन चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं जैसे - औदारिक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर । तीन विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पांच योग पाये जाते हैं जैसे - औदारिक काय योग, आदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र काय योग और कार्मण काय योग । वायुकाय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय इन चार इन्द्रियों के 20 विपय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ।

उः- चार योग पाये जाते हैं जैसे - व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग । तीन विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।



प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं । समुच्चय जीवों की अपेक्षा से क्योंकि एक जीव में एक साथ एक समय में पन्द्रह योग नहीं पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- तीन उपयोग पाये जाते हैं जैसे - मति अज्ञान; श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन । एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय इन तीन इन्द्रियों के 15 विषय और 168 विकार पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- पांच उपयोग पाये जाते हैं जैसे - मति ज्ञान, श्रतु ज्ञान, मति अज्ञान, श्रतु अज्ञान और अचक्षु दर्शन । वेइन्द्रिय तेइन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चार योग पाये जाते हैं जैसे - व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग । तीन विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं । समुच्चय जीवों की अपेक्षा से क्योंकि एक जीव में एक साथ एक समय में पन्द्रह योग नहीं पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- तीन उपयोग पाये जाते हैं जैसे - मति अज्ञान, श्रतु अज्ञान और अचक्षु दर्शन । एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनुन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय इन तीन इन्द्रियों के 15 विषय और 168 विकार पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- पांच उपयोग पाये जाते हैं - मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन । वेइन्द्रिय तेइन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन । चतुरिन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- दस उपयोग पाये जाते हैं (केवल ज्ञान और केवल दर्शन को छोड़कर) केवलज्ञानी को छोड़कर समुच्चय पंचेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- पांच इन्द्रियों 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है । एकेन्द्रिय जीवों की अपेखा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - मिथ्यात्व व सास्वादन गुणस्थान तीन विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 12 (वारह) गुणस्थान पाये जाते हैं (सयोगी केवली गुणस्थान और अयोगी केवली गुणस्थान को छोड़कर) ।

प्रः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- छः तत्त्व पाये जाते हैं (संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती है (ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर) एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय के 20 विपय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- सात आत्मा पाई जाती है (चारित्र आत्मा को छोड़कर) तीन विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- पांच दण्डक पाये जाते हैं जैसे - पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक (एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से)।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय के 13 विषय और 156 विकार पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक बेइन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय के 15 विषय और 168 विकार पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक तेइन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, और घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक चतुररिन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- पांचों इन्द्रियां के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सोलह (16) दण्डक पाये जाते है जैसे - सात नारकी का एक दण्डक, दस भुवनपतियों का दस दण्डक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिष का एक दण्डक, वैमानिक देवता का एक दण्डक ये 16 दण्डक ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाये जाते हैं ?

उः- चार लेश्या पाई जाती है जैसे - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या । (पृथ्वी, पानी और वनस्पति की अपेक्षा से) ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, और घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती है जैसे - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या । (तीन विकलेन्द्रिय की अपेक्षा से) ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- दो दृष्टियां पाई जाती हैं जैसे - सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि । (तीन विकलेन्द्रिय की अपेक्षा से)।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- तीनों ही दृष्टियां पाई जाती हैं । (संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से)।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय इन चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं । एकेन्द्रिय और तीन विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 22 (बाइस) भेद तिर्यंच एकेन्द्रिय के पाये जाते हैं जैसे - पृथ्वीकाय के चार भेद, अप्काय के चार भेद, तेउकाय के चार भेद, वायुकाय के चार भेद और वनस्पतिकाय के छः भेद ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय के 13 विषय और 156 विकार पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दो भेद बेइन्द्रिय के पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय के 15 विषय और 168 विकार पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दो भेद तेइन्द्रिय के पाये जाते हैं ।

प्रः- चक्षुइन्द्रिय के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दो भेद चतुरिन्द्रिय के पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वालक जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ पैंतीस भेद पाये जाते हैं जैसे - नारकी के 14, तिर्यंच के 20, असंज्ञी तिर्यंच के 20 और संज्ञी तिर्यंच के 20, मनुष्य के 303 और देवता के 198 भेद ।

प्रः- पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले क्षेत्र में अजीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ सत्तावन भेद पाये जाते हैं । (आकाशा. के तीन स्कन्धों को छोड़कर)।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय इन चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में श्रावक के बारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है । क्योंकि इन चार विषय वाले जीव अविरत होते हैं ।

प्रः- श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में श्रावक के बारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- सभी व्रत श्रावक के पाये जाते है - (देश विरति श्रावक की अपेक्षा से।)

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय इन चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है । क्योंकि इन चार विषय वाले जीव अविरत होते हैं ।

प्रः- पांचों इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रियों इन चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में 49 भागों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नही पाया जाता है ।

प्रः-श्रोत्रेन्द्रिय के 23 विषय और 240 विकार पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

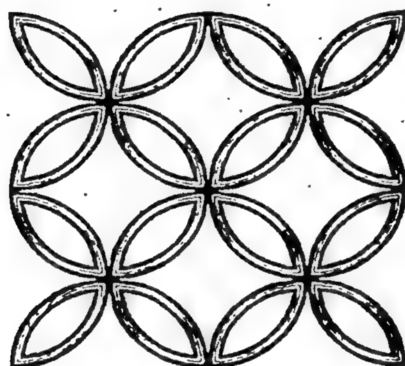
उः- 49 भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रियों इन चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

प्रः- पांचों इन्द्रियों के 23 विषय 240 विकार पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।



विचार

जो बाहर से बहुत सुन्दर है
पर जिसका मन मैला है
उससे तो कौआ भी अच्छा है
जो बाहर भीतर एक रंग है ।

– सुमति मुनि

मिथ्यात्व - द्वार

तेरहवें बोले मिथ्यात्व के दस भेद - (1) जीव को अजीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व (2) अजीव को जीव श्रद्धे तो मिथ्यात्व (3) धर्म को अधर्म श्रद्धे तो मिथ्यात्व (4) अधर्म को धर्म श्रद्धे तो मिथ्यात्व (5) साधु को असाधु श्रद्धे तो मिथ्यात्व (6) असाधु को साधु श्रद्धे तो मिथ्यात्व (7) संसार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व (8) मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग श्रद्धे तो मिथ्यात्व (9) आठ कर्मो से मुक्त को अमुक्त श्रद्धे तो मिथ्यात्व (10) आठ कर्मों से अमुक्त को मुक्त श्रद्धे तो मिथ्यात्व।

प्रः- मिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

उः- कुदेव, कुगुरू और कुधर्म पर श्रद्धा (विश्वास) करना उसको मिथ्यात्व कहते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती है । समुच्चय बोल की अपेक्षा से ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों ही जातियां पाई जाती है ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- छहों काया पाई जाती है ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पाचों इन्द्रियां पाई जाती हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में दस बलप्राण में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में पांच शरीर में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं (आहारक शरीर को छोड़कर) क्योंकि आहारक शरीर वाला जीव निश्चित रूप से सम्यक्त्वी और संयति होते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग

पाये जाते हैं ?

उः- तेरह योग पाये जाते हैं (आहारक और आहारक मिश्र काय योग को छोड़कर) ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में 12 उपयोग में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के तीन अज्ञान और तीन दर्शन । क्योंकि मिथ्यात्वी में केवल ज्ञान और केवल दर्शन नहीं पाते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में चवदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक पहला गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- छः तत्त्व पाये जाते हैं जैसे - जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व आश्रव तत्त्व और बंध तत्त्व ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती है (ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 24 (चौबीस) दण्डक पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- प्रथम तीन लेश्या पाई जाती है । क्योंकि तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या सम्यक्त्वी में ही पाई जाती हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है ।

- कुच्छेक मान्यतानुसार मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में मिश्र की

भी संभावना बताई जाती है उनका तर्क यह है कि मिश्र दृष्टि वाले जीव का झुकाव मिथ्यात्व की तरफ होने से मिथ्यात्व और मिश्र दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं । आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान । अवशेष दो ध्यान सम्यक्त्वी में ही पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 553 (पांच सौ तिरेपन) भेद पाये जाते हैं (पांच अनुत्तर विमान के दस भेदों को छोड़कर) और सभी स्थानों पर मिथ्यात्वी प्राप्त हो सकते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ उनसठ (559) भेद पाये जाते हैं (आकाशास्तिकाय के स्कन्ध को छोड़कर) किन्तु दूसरी दृष्टि से जहां स्कन्ध नहीं आता, वहां देश भी नहीं आता, जहां देश है, वहां स्कन्ध नहीं, इस अपेक्षा से 557 भेद भी पाये जा सकते हैं मगर दोनों साथ करने पर 559 भेद पा सकते हैं किन्तु आकाशास्तिकाय का स्कन्ध लोक अलोक की उपेक्षा से पाया जाता है इसलिए स्कन्ध को छोड़कर देश ही पायेगा ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है क्योंकि मिथ्यात्वी जीव अव्रती होते हैं व्रत समकितधारी में ही पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- साधुजी का एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है । क्योंकि महाव्रतों का पालन समकितधारी ही कर सकता है ।

प्रः- मिथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में गुणपचास भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है क्योंकि भांगों का ग्रहण समकितधारी ही करता हैं ।

प्रः- मिंथ्यात्व के दस भेद पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है क्योंकि चारित्र का ग्रहण समकितधारी ही कर सकता है किन्तु द्रव्य रूप से मिथ्यात्वी भी चारित्र ग्रहण कर लेता है । भाव रूप से नहीं ।



तत्व-द्वार

चौहदवें वोले छोटी नवतत्त्व के 115 भेद - नव तत्वों के नाम - 1. जीव तत्त्व, 2. अजीव तत्त्व, 3. पुण्य तत्त्व, 4. पाप तत्त्व, 5. आश्रव तत्त्व, 6. संवर तत्त्व, 7. निर्जरा तत्त्व, 8. वंध तत्त्व 9. मोक्ष तत्त्व ।

नव तत्त्वों के भेद - जीव के 14, अजीव के 14, पुण्य के 9, पाप के 18, आश्रव के 20, संवर के 20, निर्जरा के 12, वंध के 4, मोक्ष के 4, कुल मिला कर 115 भेद हुए ।

1 जीव के 14 भेद -

सूक्ष्म एकेन्द्रिय के दो भेद -	अपर्याप्ता और पर्याप्त
बादर एकेन्द्रिय के दो भेद -	अपर्याप्ता और पर्याप्त
बेइन्द्रिय के दो भेद -	अपर्याप्ता और पर्याप्त
तेइन्द्रिय के दो भेद -	अपर्याप्ता और पर्याप्त
चउरिन्द्रिय के दो भेद -	अपर्याप्ता और पर्याप्त
असन्नी पंचेन्द्रिय के दो भेद -	अपर्याप्ता और पर्याप्त
सन्नी पंचेन्द्रिय के दो भेद -	अपर्याप्ता और पर्याप्त

प्रः- जीव किसे कहते हैं ?

उः- जो चेतना एवं उपयोग लक्षण वाला, सुख दुःख का वेदक, पर्याप्ति एवं प्राणों का धर्त्ता, आठ कर्मों का कर्त्ता और भोक्ता, शाश्वत, कभी नष्ट नहीं होने वाला और असंख्य प्रदेशी हैं, उसे 'जीव' कहते हैं । जीव के मुख्य दो भेद होते हैं - 1 संसारी 2 सिद्ध । जो कर्म सहित हैं उन्हें संसारी कहते हैं और जो ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्म से रहित हैं, उन्हें सिद्ध कहते हैं ।

प्रः- सूक्ष्म जीव किसे कहते हैं ?

उः- सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से जो जीव सुक्ष्म शरीरधारी हैं उनको सूक्ष्म जीव कहते हैं । सूक्ष्म जीव सारे लोक में व्याप्त हैं तथा ये इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य नहीं हैं, सर्वज्ञों के द्वारा फरमाने से ही मान्य है । ये जीव इतने सूक्ष्म होते हैं कि केवल ज्ञानी के सिवाय अन्य कोई उन्हें देख नहीं सकता हैं । पृथ्वी, पानी, वनस्पति आदि पांचों स्थावरों में वे होते हैं ।

प्रः- वादर एकेन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उः- वादर नाम कर्म के उदय से जो जीव स्थूल शरीरधारी हैं, उनको वादर एकेन्द्रिय कहते हैं । वे सारे लोक में व्याप्त नहीं हैं । वे आँख से या यन्त्र की सहायता से देखे जा सकते हैं । उन पर शस्त्र का प्रभाव पड़ता है । वे दूसरों के लिये भी अनुकूल प्रतिकूल होते हैं । पृथ्वी, पानी, वनस्पति आदि पांचों स्थावरों में वे होते हैं । सचित मिट्टी, पानी, लीलोतरी आदि के रूप में जिनका शरीर हम प्रतिदिन देखते हैं, वे वादर एकेन्द्रिय जीव हैं ।

रूप में जिनका शरीर हम प्रतिदिन देखते हैं, वे बादर एकेन्द्रिय जीव हैं ।

प्रः- पर्याप्त और अपर्याप्ता किसे कहते हैं ?

उः- जिस जीव में जितनी पर्याप्तियां पांचवें बोल में कही गई हैं उन सभी पर्याप्तियों को पूर्ण कर लेने पर वह जीव पर्याप्त कहलाता है । एकेन्द्रिय जीव के आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास ये चार पर्याप्तियां होती हैं । जब जीव इनको पूरी कर लेता है तब वह पर्याप्ता कहलाता है । जब तक जीव आहार, शरीर और इन्द्रिय इन तीनों को पूर्ण कर श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति को पूरी नहीं कर लेता है तब तक वह अपर्याप्त कहलाता है । इसी प्रकार बेइन्द्रियादि जीवों के विषय में भी जानना चाहिये ।

प्रः- संज्ञी (सन्नी) और असंज्ञी (असन्नी) किसे कहतें हैं ?

उः- जो मन वाले जीव हैं उनको संज्ञी कहते हैं और जिनके मन नहीं हैं उनको असंज्ञी कहते हैं । मन पंचेन्द्रिय जीवों के ही होता है इसलिए जिन पंचेन्द्रिय जीवों के मन हैं वे संज्ञी कहलाते हैं जैसे गर्भज मनुष्य और तिर्यंच, औपपातिक देव और नारकी जीव । जिन पंचेन्द्रिय जीवों के मन नहीं हैं वे असंज्ञी कहलाते हैं जैसे - सम्मूर्च्छिम मनुष्य, तिर्यंच के जीव ।

2 अजीव के 14 भेद

धर्मास्तिकाय के तीन भेद - स्कंध, देश और प्रदेश ।
अधर्मास्तिकाय के तीन भेद - स्कंध, देश और प्रदेश ।
आकाशास्तिकाय के तीन भेद - स्कंध, देश और प्रदेश ।
और दसवां काल । ये दस भेद अरूपी अजीव के होते हैं ।

रूपी पुद्गल के चार भेद हैं - स्कंध, स्कंध देश, सकंध प्रदेश और परमाणु पुद्गल । ये 14 भेद अजीव के होते हैं ।

प्रः- अजीव किसे कहते हैं ?

उः- चेतना रहित जड़ पदार्थ को अजीव कहते हैं ।

प्रः- धर्मास्तिकाय किसे कहते हैं ?

उः- जीव और पुद्गल जिस द्रव्य की सहायता से हलनचलन करते हैं उस द्रव्य का नाम धर्मास्तिकाय है । जैसे - मछली के हलन चलन में पानी सहायक होता है । यह द्रव्य चलने की प्रेरणा नहीं देता है, परन्तु चलायमान जीव और पद्गल का सहायक होता है ।

प्रः- अधर्मास्तिकाय किसे कहते हैं ?

उः- जो द्रव्य जीव और पुद्गल के स्थिर होने में मदद देता है उसका नाम अधर्मास्तिकाय है जैसे - थके हुए पथिक को ठहरने में छाया सहायक होती है । यह द्रव्य स्थिर होने के लिए विवश नहीं करता, परन्तु स्थिर होते हुए जीव और पुद्गल का सहायक होता है ।

प्रः- आकाशास्तिकाय किसे कहते हैं ?

उः- जो सभी द्रव्यों को जगह देता है उसे आाशास्तिकाय कहते हैं जैसे - दूध शक्कर को और पानी नमक को स्थान देता है। आकाशास्तिकाय के दो भेद होते हैं - लोकाकाश और अलोकाकाश में सभी द्रव्य रहे हुए हैं जबकि अलोकाकाश में आकाश के सिवाय और द्रव्य नहीं है। क्योंकि हलन-चलन में सहायता होने वाला धर्मास्तिकाय द्रव्य लोकाकाश तक ही सीमित है।

प्रः- काल द्रव्य किसे कहते हैं ?

उः- नये - पुराने, छोटे - बड़े आदि की पहचान जिस द्रव्य से होती है उसे काल द्रव्य कहते हैं। समय, आवलिका, मुहूर्त्त, प्रहर, दिन - रात, मास, वर्ष आदि व्यवहार इसी द्रव्य के आधार से किये जाते है।

प्रः- काल द्रव्य को अस्तिकाय क्यों नहीं कहा जाता है ?

उः- अनेक प्रदेश वाले द्रव्य को 'अस्तिकाय' कहते हैं। काल प्रदेश रहित है, अतः यह अस्तिकाय नहीं है और इसे कालास्तिकाय नहीं कहा जाता है।

प्रः- पुद्गलास्तिकाय किसे कहते हैं ?

उः- संसार में हम जिन अजीव पदार्थे को देखते हैं वे सब पुद्गल हैं। सड़ना - गलना, विखरना और एकत्रित होने ये सब क्रियांए पुद्गलों में ही होती हैं। जब तक जीव के साथ इसका सम्बन्ध बना रहता है, तब तक इनके साथ सचित का व्यवहार किया जाता है। जीव से सम्बन्ध छूटते ही ये अपने असली स्वरूप में अचित हो जाते हैं। जैसे - निर्जीव शरीर। यह द्रव्य संसारी जीवों की प्रवृत्तियों में विशेष सहायक होते है।

प्रः- प्रदेश किसे कहते हैं ?

उः- वह सूक्ष्म भाग प्रदेश कहलाता है जिसका विभाजन न हो सके और जो स्कन्ध द्रव्य के साथ अवयव रूप से मिला हुआ हो।

अनेक प्रदेश मिलकर देश कहलाते हैं और अनेक देश का समूह स्कन्ध कहलाता है। देश भी स्कन्ध से मिले हुए ही होते हैं, स्वतन्त्र नहीं रहते।

प्रः- परमाणु किसे कहते हैं ?

उः- अति सुक्ष्म भाग को जिसका फिर हिस्सा न किया जा सके, परमाणु कहते हैं। परमाणु और प्रदेश में यही अन्तर है कि परमाणु जब स्कन्ध से जुड़ा रहता है, तव उसे प्रदेश कहतें हैं तथा जब वह स्कन्ध से अलग हो जाता है, तव उसे परमाणु कहते हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय के देश और प्रदेश स्कंध से पृथक् नहीं हो सकते हैं। अतः इन द्रव्यों में परमाणु नहीं कहा गया है। रूपी अजीव द्रव्य में ही परमाणु होते हैं। इनको हम आँख से या किसी यन्त्र के सहारे से भी

नहीं देख सकते हैं ।

3 पुण्य के 9 भेद

1. अन्न पुण्य - अन्न देने से पुण्य होता है । 2. पान पुण्य - पानी देने का पुण्य होता है । 3. लयन पुण्य - जगह, स्थान देने से पुण्य होता है । 4. शयन पुण्य - शय्या, पाट, पाटला आदि देने से पुण्य होता है । 5. वस्त्र पुण्य - वस्त्र देने से पुण्य होता है । 6. मन पुण्य - शुभ मन रखने से पुण्य होता है । 7. वचन पुण्य - शुभ वचन बोलने से पुण्य होता है । 8. काय पुण्य - शरीर द्वारा सेवा तथा विनय करने से पुण्य होता है । 9. नमस्कार पुण्य - गुणवान् को नमस्कार करने से पुण्य होता है ।

प्रः- पुण्य किसे कहते है ?

उः- जो आत्मा को पवित्र करे और जिससे प्राणियों को सुख की प्राप्ति हो, उसे पुण्य कहते है ।

4 पाप के 18 भेद :-

1. प्राणातिपात - जीवों की हिंसा करना। 2. मृषावाद - झूठ बोलना। 3. अदत्तादान - चोरी करना । 4. मैथुन - कुशील सेवन करना । 5. परिग्रह - धन धान्य आदि का संग्रह व उसकी लालसा रखना। 6. क्रोध - रोष, गुस्सा करना। 7. मान - अहंकार करना । 8. माया - छल-कपट करना। 9. लोभ - लालच-तृष्णा वढाना । 10. राग-सनेह-प्रीति करना। 11. द्वेष - वैर रखना। 12. कलह - क्लेश करना । 13. अभ्याख्यान - झूठा कलंक लगाना । 14. पैशुन्य - चुगली करना । 15. पर-परिवाद - दूसरों की निंदा करना । 16. रति-अरति - मनोज्ञ वस्तुओं पर प्रसन्न होना और अमनोज्ञ वस्तुओं पर नाराज होना। 17. माया मृषावाद - छल-कपट के साथ झुठ बोलना। 18. मिथ्यादर्शन शल्य - कुदेव, कुगुरू और कुधर्म पर श्रद्धा रखना।

प्रः- पाप किसे कहते हैं ?

उः- जो आत्मा को मलिन करे, जो अशुभ योगों से बंधे और दुः ख पूर्वक भोगा जाय, उसे पाप कहते हैं ।

5 आश्रव के 20 भेद

1. मिथ्यात्व - मिथ्यात्व का सेवन करे तो आश्रव। 2. अव्रत - व्रत प्रत्याख्यान नहीं करे तो आश्रव । 3. प्रमाद - पांच प्रमाद का सेवन करे तो आश्रव । 4. कषाय - क्रोध, मान, माया और लोभ का सेवन करे तो आश्रव । 5. अशुभयोग - मन, वचन और काया द्वारा अशुभ प्रवृत्तियां करे तो आश्रव । 6. प्राणातिपात - जीव हिंसा करे तो आश्रव । 7. मृषावाद - झूठ बोले तो आश्रव । 8. अदत्तादान - चोरी करे तो आश्रव । 9. मैथुन - कुशील सेवन करे तो आश्रव । 10. परिग्रह - धन धान्य आदि का संग्रह करें तो आश्रव । 11. श्रोत्रेन्द्रिय वश में नहीं रखे तो आश्रव । 12. चक्षुरिन्द्रिय वश

में नहीं रखे तो आश्रव । 13. घ्राणन्द्रिय वश में नहीं रखे तो आश्रव । 14. रसनेन्द्रिय वश में नहीं रखे तो आश्रव । 15. स्पर्शनेन्द्रिय वश में नहीं रखे तो आश्रव । 16. मन वश में नहीं रखे तो आश्रव । 17. वचन वश में नहीं रखे तो आश्रव । 18. काया वश में नहीं रखे तो आश्रव। 19. भण्ड उपकरण अयतना से लेवे और अयतना से रखे तो आश्रव । 20. सूई कुशाग्रमात्र कोई भी वस्तु अयतना - असावधानी से लेवे और अयतना से रखे तो आश्रव ।

प्रः- आश्रव किसे कहते हैं ?

उः- जिस प्रकार तालाब में नालों के द्वारा पानी आता है, उसी प्रकार जिन कारणों से आत्मा में कर्म आते हैं उन कारणों को आश्रव कहा जाता है । पांच इन्द्रियों के भोगविलास में लगे रहना, हिंसा, असत्य आदि का आचरण करना, मन, वचन, और काया को वश में न रखना, ये सब आश्रव के कारण हैं ।

6 संवर के 20 भेद

1. समकित संवर । 2. व्रत पच्च्क्खाण करे तो संवर । 3. प्रमाद नहीं करे तो संवर । 4. कषाय नहीं करे तो संवर । 5. शुभयोग प्रवर्तावे तो संवर । 6. अप्राणातिपात - जीव हिंसा न करे तो संवर। 7. अमृषावाड झूठ नहीं बोले तो संवर । 8. अदत्तादान त्याग - चोरी नहीं करे तो संवर। 9. अमैथुन - कुशील नहीं सेवे तो संवर । 10. अपरिग्रह - मूर्च्छा - संग्रह नहीं रखे तो संवर। 11. श्रोत्रेन्द्रिय वश में करे तो संवर । 12. चक्षुरिन्द्रिय वश में करे तो संवर। 13. घ्राणेन्द्रिय वश में करे तो संवर। 14. रसनेन्द्रिय वश में करे तो संवर। 15. स्पर्शनेन्द्रिय वश में करे तो संवर। 16. मन वश में करे तो संवर । 17. वचन वश में करे तो संवर । 18. काया वश में करे तो संवर । 19. भंड- उपकरण यतना से लेवे और यतना से रखे तो संवर । 20. सूई - कुशाग्र मात्र यतना से लेवे और यतना से रखे तो संवर ।

प्रः- संवर किसे हिते हैं ?

उः- आश्रव के कारणों को रोक देना संवर है । आश्रव से कर्म आते हैं तो संवर से रूकते हैं । पांच इन्द्रियों को वश में रखना, हिंसा, असत्य आदि का आचरण नहीं करना, मन वचन और शरीर को संयम में रखना आदि संवर के कारण हैं ।

7 निर्जरा के 12 भेद

1. अनशन - चार प्रकार के या तीन प्रकार के आहार का त्याग करना । 2. ऊनोदरी - भोजन की अधिक रूचि होने पर भी कम भोजन करना । 3. भिक्षाचर्या - शुद्ध आहार आदि की गवेषणा करना । 4. रसपरित्याग - विगयादि का त्याग करना, स्वाद पर विजय करना। 5. कायक्लेश - वीर आसन आदि कष्ट

प्रद क्रिया करना । 6. प्रतिसंलीनता - इन्द्रियों को वश में करना तथा कषाय और योगों को रोकना । 7. प्रायश्चित - लगे हुए दोषों की आलोचना करके प्रायश्चित लेकर आत्मा को शुद्ध करना । 8. विनय - गुरू आदि का भक्तियुक्त अभ्युत्थानादि से आदर, सत्कार एवं विनय करना । 9. वैयावृत्य - आचार्यादि की सेवा करना । 10. स्वाध्याय - शास्त्र की वाचना, पृच्छना आदि करना । 11. ध्यान - मन को एकाग्र करके शुभ विचारों में लगाना । 12. व्युत्सर्ग - काया के व्यापार का त्याग करना ।

प्रः- निर्जरा किसे कहते हैं ?

उः- आत्मा पर लगे हुए कर्मों को देशतः नष्ट करना निर्जरा है । उपवास करना, भूख से कम खाना, स्वादिष्ट पदार्थों का त्याग करना, दूसरों की सेवा करना, ज्ञान की उपासना करना आदि से कर्मों की निर्जरा होती है ।

8 बंध के 4 भेद

1. प्रकृति बंध 2. स्थिति बंध 3. अनुभाग बंध और 4. प्रदेश बंध

प्रः- बंध किसे कहते हैं ?

उः- कषाय व योगों के कारण आत्मा के साथ कर्म पुद्गलों के मिलने को बंध कहते हैं । जैसे - दूध और पानी अथवा लोह पिण्ड और अग्नि एकमेक हो जाते हैं वैसे ही आत्मप्रदेश और कर्म पुद्गल एकमेक हो कर बंधे, उसे बंध कहते हैं ।

आठ कर्मों के स्वभाव को 'प्रकृति बंध' कहते हैं । आठ कर्मों के काल परिमाण को 'स्थिति बंध' कहते हैं । आठ कर्मों के तीव्र मंदादि रस को 'अनुभाग बंध' कहते हैं । कर्म पुद्गलों के दल का आत्मा के साथ बंध होना 'प्रदेश बंध' कहा जाता है ।

चार प्रकार के बन्ध का स्वरूप लड्डू के दृष्टान्त से बतलाया जाता है । जैसे 1. - कोई लड्डू बहुत प्रकार के द्रव्यों के संयोग से बना । वह वात, पित्त और कफ के जिस स्वरूप को नष्ट करे, उसे 'प्रकृति (स्वरूप) बंध' कहते हैं । 2. वही लड्डू पक्ष, मास, दो मास आदि तक उसी स्वरूप में रहे, उसे 'स्थिति बंध' कहते हैं 3. वही लड्डू तीखे, कड़वे, कषैले, खट्टे और मीठे रस युक्त हो उसे अनुभाग बन्ध (रस बन्ध) कहते हैं । 4. वही लड्डू थोड़ा परिमाण (वजन) का बन्धा हुआ - छोटा होता है और अधिक परिमाण का बन्धा हुआ - बड़ा होता है, उसे 'प्रदेश बन्ध' कहते हैं । प्रकृति बन्ध और प्रदेश बन्ध का कारण योग है और स्थिति तथा अनुभाग बन्ध कषाय से होते हैं ।

9 मोक्ष के 4 भेद

1. सम्यग् ज्ञान, 2. सम्यग् - दर्शन, 3. सम्यक् चारित्र और 4. सम्यक् तप

प्रः- सम्यग् दर्शन किसे कहते हैं ?
उः- जिनेश्वर भगवान् के वचनों पर शुद्ध श्रद्धा रखना सम्यग् दर्शन है।
प्रः- सम्यग् ज्ञान किसे कहते हैं ?
उः- श्रद्धापूर्वक सच्चे ज्ञान को सम्यग् ज्ञान कहते हैं।
प्रः- सम्यक् चारित्र किसे कहते हैं ?
उः- दर्शन और ज्ञान पूर्वक सत् आचरण को सम्यक् चारित्र कहते हैं।
प्रः- सम्यक् तप किसे कहते हैं ?
उः- आत्मशुद्धि के लिए आगमानुसार विशिष्ट अनुष्ठान करना सम्यक् तप हैं।
प्रः- मोक्ष किसे कहते हैं ?
उः- जब आत्मा सर्वथा कर्म रहित हो कर जन्म - मरन के वन्धन से मुक्त हो जाती है, उसे मोक्ष कहा जाता है। सम्यग्ज्ञानादि से मोक्ष की साधना होती है। इस साधना से आत्मा पूर्णरूप से शुद्ध हो कर परमात्मपद प्राप्त कर लेती है और सदा के लिए परम सुखी वन जाती है।
प्रः- मोक्ष तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में कितनी गतियां पाई जाती हैं ?
उः- चारों गतियां पाई जाती हैं।
प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?
उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है। चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से।
प्रः- मोक्ष तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- चार जातियां पाई जाती हैं (एक एकेन्द्रिय जाति को छोड़कर)।
प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व और वन्ध तत्त्व इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती हैं।
प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?
उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है। चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से हालांकि तेरहवें चवदवें गुणस्थानवर्ती जीव अनिन्द्रिय होते हैं फिर भी सामान्य धर्म रूप से जाति पाई जाती है।
प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व, बंध तत्त्व इन छः तत्त्व एक साथ पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?
उः- पांच काया पाई जाती है (त्रसकाय को छोड़कर)।
मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक भी काया नहीं पाई जाती है क्योंकि मोक्षवर्ती जीव काया रहित होते हैं। किन्हीं - किन्हीं की मान्यतानुसार चवदवें गुणस्थान में सामान्य रूप से काया का योग माना जाता है, इस अपेक्षा से त्रसकाय हो सकती है।

प्रः- मोक्ष तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्दियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रिय पाई जाती हैं ?

उः- एक भी इन्द्रिय नहीं पाई जाती है क्योंकि इन्द्रियां तो संसारवर्ती छद्मस्त जीवों में ही पाई जाती है मोक्षवर्ती जीवों में नहीं।

प्रः- मोक्ष तत्त्व छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व और वन्ध तत्त्व इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं - आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति और श्वासोच्छवास पर्याप्ति। एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं। चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में दस वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- एक आयुष्य बलप्राण चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से पाया जाता है, अन्य मान्यतानुसार काया बलप्राण भी पाया जा सकता है।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व और वन्ध तत्त्व इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में दस वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- चार बलप्राण पाये जाते हैं - स्पर्शनेन्द्रिय वलप्राण, काया वलप्राण, श्वासोच्छवास वलप्राण और आयुष्य वलप्राण। एकेन्द्रिय जीव की अपेक्षा से।

प्रः- पाप तत्त्व और मोक्ष तत्त्व इन दो तत्त्वों को छोड़कर सात तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं।

प्रः- पाप तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं। (आहारक शरीर को छोड़कर)।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं - औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, आश्रव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और बन्ध तत्त्व इन सात तत्त्व पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगो में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पन्द्रह (15) योग पाये जाते हैं ।

प्रः- पाप तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- तेरह (13) योग पाये जाते हैं (आहारक काय योग और आहारक मिश्र का योग को छोड़कर) ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- एक भी योग नहीं पाया जाता है क्योंकि मोक्षवर्ती जीव अयोगी होते हैं चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, आश्रव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व, बन्ध तत्त्व इन सात तत्त्व पाने वाले जीवों में वारह उपयोग में से कितने उपयोग पायें जाते हैं ?

उः- बारह (12) उपयोग पाये जाते हैं । कोई - 2 ग्यारहवें, वारहवें और तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीवों में आश्रव तत्त्व नहीं मानते हैं, शुभ योग होने की अपेक्षा से इसलिए उनकी अपेक्षा से आश्रव तत्त्व पाने वाले जीवों में केवल ज्ञान और केवल दर्शन नहीं पाया जाता है । दस ही उपयोग पाये जाते हैं ।

प्रः- पाप तत्त्व पाने वाले जीवों में वारह उपयोगो में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- नव उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन ।

प्रः- संवर तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- नव उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पांच ज्ञान और चार दर्शन ।

प्रः- मोक्षा तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- दो उपयोग पाये जाते हैं जैसे - केवल ज्ञान और केवल दर्शन ।

प्रः- मोक्षा तत्त्व व अजीव तत्त्व इन दो तत्त्वों को छोड़कर सात तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, आश्रव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और बन्ध तत्त्व इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में चवदह गुणस्थान में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - मिथ्यात्व गुणस्थान और मिश्र गुणस्थान

प्रः- पाप तत्त्व में चवदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम के पांच गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक चवदवां गुणस्थान पाया जाता है ऐसे तेरहवां गुणस्थानवर्ती जीव भी चरम शरीरी होने से लिया जा सकता है ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, आश्रव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और बन्ध तत्त्व इन सात तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- आठ (8) गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - छठे गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक के जीवों में पाये जाते हैं, कोई - 2 दसवें गुणस्थान तक ही आश्रव तत्त्व मानते हैं आगे के ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान तक के तीन गुणस्थानों में आश्रव तत्त्व नहीं मानते हैं उनकी दलील है कि इन तीन गुणस्थानों में शुभ योग पाया जाता है । इस अपेक्षा से ग्यारहवें से तेरहवें इन तीन गुणस्थानों में आश्रव तत्त्व को छोड़कर छः तत्त्व पाये जाते हैं कोई - कोई इन गुणस्थानों में अजीव तत्त्व भी नहीं मानते हैं किन्तु अजीव तत्त्व पाया जाता है क्योंकि कर्म तो इन गुणस्थानों में पाये जाते है और कर्म अजीव है, इन अपेक्षा से अजीव तत्त्व पाया जाता है ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और बन्ध तत्त्व इन आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- सभी विषय और विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीरवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- एक भी विषय और विकार नहीं पाया जाता है, क्योंकि तेरहवें एवं चवदवें गुणस्थानवर्ती जीव अनिन्द्रिय होते हैं । मोक्ष तत्त्व भी इन्हीं दो गुणस्थानवर्ती जीवों में पाया जाता है ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पाप तत्त्व, पुण्य तत्त्व, आश्रव तत्त्व, और वन्ध तत्त्व इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व के दसों (10) भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और मोक्ष तत्त्व इन तीन तत्त्व पाने वाले तीवों में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व का एक भी भेद नहीं पाया जाता है । क्योंकि उपरोक्त तीन तत्त्व सम्यूक दृष्टि जीवों में ही पाये जाते हैं ।

प्रः- पाप तत्त्व और मोक्ष तत्त्व इन दो तत्त्व को छोड़कर इन सात तत्त्व पाने

वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- पाप तत्त्व पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- सात आत्मा पाई जाती है (एक चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती है जैसे - द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा, ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा, चारित्र आत्मा और वीर्य आत्मा । चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- अजीव तत्त्व पाने वाले जीवों में कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती हैं क्योंकि प्रत्येक शरीरधारी आत्मा में अजीव तत्त्व पाया जाता है ।

प्रः- अजीव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और मोक्ष तत्त्व इन चार तत्त्वों को छोड़कर पांच तत्त्व पाने वाले जीवों में चौवीस दण्डक में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- चौबीस दण्डक (24) पाये जाते हैं ।

प्रः- संवर तत्त्व और निर्जरा तत्त्व इन दो तत्त्व पाने वाले जीवों में चौवीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- दो दण्डक पाये जाते हैं - मनुष्य का एक दण्डक और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक ।

प्रः- अजीव तत्त्व के कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- चौबीस दण्डक पाये जाते हैं क्योंकि कर्म अजीव है चौबीस ही दण्डकों में कर्म पाये जाते हैं इस अपेक्षा से चौबीस ही दण्डक पाये जाते हैं ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती है ?

उः- एक भी लेश्या नहीं पाई जाती है क्योंकि कर्मधारी आत्माओं में ही लेश्या पाई जाती है क्योंकि मोक्षवर्ती जीव कर्म रहित हैं ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व और बन्ध तत्त्व इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- तीनों ही दृष्टियां पाई जाती हैं ।

संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और मोक्ष तत्त्व इन तीन तत्त्व पाने वाले जीवों

कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- जीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, आश्रव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व और बन्ध तत्त्व इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में चार ध्यान में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते है ।

प्रः- पाप तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं (शुक्ल ध्यान को छोड़कर) ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- एक परम शुक्ल ध्यान पाया जाता है, चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- नव तत्त्व पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व और बन्ध तत्त्व, इन छः तत्त्व पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ तिरेसठ (563) भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- संवर तत्त्व और निर्जरा तत्त्व इन दो तत्त्व पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दो सौ तरियासी (283) भेद पाये जाते हैं जैसे - नारकी के 13 (सातवीं नारकी का अपर्याप्ता छोड़कर) तिर्यंच के 18, सन्नी तिर्यंच के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 20, असन्नी तिर्यंच के अपर्याप्ता 5 और तीन विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता 3, मनुष्य के 90 , 15 कर्मभूमि, 30 अकर्मभूमि इन 45 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता देवता के 162 (15परमाधमी और 3 किल्विषी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता को छोड़कर) ।

प्रः- मोक्ष तत्व पाने वाले जीवों में जीव राशि के कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भेद नहीं पाया जाता है क्योंकि 563 भेद कर्मधारी जीवों में ही पाये जाते हैं मोक्षवर्ती कर्म रहित होते हैं ।

प्रः- अजीव तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

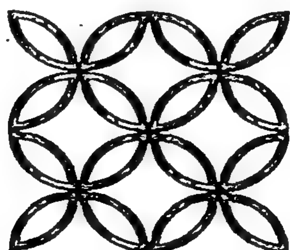
उः- पांच सौ सत्तावन (557) भेद पाये जाते हैं (धर्मा., अधर्मा., आकाशा. के तीन स्कन्धों को छोड़कर) क्योंकि जहां स्कन्ध होता है वहां देश नहीं होता है, और जहां देश होता है, वहां स्कन्ध नहीं होता ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- बारह (12) व्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने व्रत पाये जाते हैं ?
उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है । क्योंकि मोक्ष तत्त्व संयति में ही पाया जाता है।
प्रः- पाप तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में साधुजी के 5 महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उः- पांचों ही महाव्रत पाये जाते हैं ।
प्रः- पाप तत्त्व पाने वाले जीवों में साधुजी के कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?
उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।
प्रः- मोक्ष तत्त्व को छोड़कर आठ तत्त्व पाने वाले जीवों में गुनपचास भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?
उः- गुनपचास भांगे पाये जाते हैं ।
प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने भांगे पाये जाते हैं ?
उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता क्योंकि भांगे श्रावकों में ही पाये जाते हैं साधुओं में नहीं ।
प्रः- जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, आश्रव तत्त्व, संवर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व, बन्ध तत्त्व इन सात तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?
उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।
प्रः- पाप तत्त्व पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?
उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है । क्योंकि संयति अठारह पापों का त्यागी होता है ।
प्रः- मोक्ष तत्त्व पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?
उः- एक यथाख्यात चारित्र पाया जाता है, चवदवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।[1]

नोट :- 1. मोहक्षय के साथ ही मोक्ष का स्वरूप स्वीकार किया जाता हो तो, उसकी अपेक्षा से बारहवें, तेरहवें और चवदवें गुणस्थान में भी यथाख्यात चारित्र होने से तीन गुणस्थान माने जा सकते है ।



आत्मा-द्वार

पन्द्रहवें बोले आत्मा आठ - द्रव्य आत्मा, कषाय आत्मा, योग आत्मा, उपयोग आत्मा, ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा, चारित्र आत्मा एवं वीर्य आत्मा ।

प्रः- आत्मा किसे कहते हैं ?

उः- जो ज्ञानादि पर्यायों में निन्तर गमन करे उसको आत्मा कहते हैं । दृष्टान्त - आत्मा तो वृक्षरूप है और इसके आठ भेद हैं वे शाखा रूप हैं ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में चारों गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती है ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाती पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- चार जातियां पाई जाती हैं (एकेन्द्रिय जाति को छोड़कर) ।

प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा इन दो आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों जातियां पाई जाती हैं ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती हैं । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- छहों काया पाई जाती हैं ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रिय पाई जाती हैं । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती हैं ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में दशों बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

...र्शों बलप्राण पाये जाते हैं ।
...चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में पांच शरीर में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
आहारक शरीर को छोड़कर चारों शरीर पाये जाते हैं ।
आठों आत्मा पाने वाले जीवों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?
पांचो शरीर पाये जाते हैं ।
चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
13 योग पाये जाते हैं - आहारक काय योग और आहारक मिश्र शरीर काय योग को छोड़कर बाकी सभी योग पाये जाते हैं ।
आठों आत्मा पाने वाले जीवों में कितने योग पाये जाते हैं ?
पन्द्रह योग पाये जाते हैं ।
आठों आत्मा पाने वाले जीवों में 12 उपयोगो में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
सात उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन ।
कषाय आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
नव उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पांच ज्ञान और चार दर्शन ।
आठ आत्मा पाने वाले जीवों में कितने कर्म पाये जाते हैं ?
आठों कर्म पाये जाते हैं ।
कषाय आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
चार अघाति कर्म पाये जाते हैं जैसे - वेदनीय, आयु, नाम और गौत्र ।
द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा, दर्शन आत्मा एवं वीर्य आत्मा इन चार आत्मा पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
14 (चोदह) गुणस्थान पाये जाते हैं ।
- ज्ञान आत्मा पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
- 12 (वारह) गुणस्थान पाये जाते हैं (पहले व तीसरे गुणस्थान को छोड़कर) ।
- चारित्र आत्मा पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
- नव गुणस्थान पाये जाते हैं (पहले के पांच गुणस्थान को छोड़कर) ।
- योग आत्मा पाने वाले जीवों में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- तेरह गुणस्थान पाये जाते हैं (चवदवें गुणस्थान को छोड़कर) ।
प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में सें कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के 10 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 10 (दसों) भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा पाने वाले जीवों में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- छः तत्त्व पाये जाते हैं (संवर, निर्जरा व मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।
प्रः- आठ आत्मा पाने वाले जीवों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- सात तत्त्व पाये जाते हैं (पाप और मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।
प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- चौबीस (24) दण्डक पाये जाते हैं ।
प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- उन्नीस (19) दण्डक पाये जाते हैं (पांच स्थावरों के पांच दण्डक को छोड़कर) ।
प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- एक दण्डक पाया जाता है ।
प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?
उः- छहों लेश्या पाई जाती हैं ।
प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- दो दृष्टियां पाई जाती हैं - मिथ्या दृष्टि और मिश्र दृष्टि ।
प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा पाने वाले जीवों में कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।
प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- दो ध्यान पाये जाते हैं जैसे - आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ।
प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं जैसे - आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं (रौद्रध्यान को छोड़कर) ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 280 भेद पाये जाते हैं जैसे 22 एकेन्द्रिय के, 3 विकलेन्द्रिय पर्याप्ता 5 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता, 101 असन्नी मनुष्य के, 112 अन्तर्दीपों के, 1 सातवीं नारकी अपर्याप्ता एवं 18 देवता के (15 परमाधामी और 3 किल्विषी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 36 भेद) कुल 280 भेद पाये जाते हैं

प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 268 भेद पाये जाते हैं जैसे - 13 नारकी के (सातवीं नारकी के अपर्याप्ता को छोड़कर) 18 तिर्यंच के, 3 विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता, 5 असन्नी तिर्यंच के अपर्याप्ता और 5 सन्नी के तिर्यंच के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 10, 90 मनुष्यों के, 15 कर्मभूमि अपर्याप्ता और पर्याप्ता, 30 अकर्मभमि के अपर्याप्ता और पर्याप्ता, 60 और 162 देवता के (15 परमाधामी और 3 किल्विषी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 36 भेदों को छोड़कर) ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 भेद कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता पाए जाते हैं । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 559 भेद पाये जाते हैं (आकाशा के एक स्कन्ध को छोड़कर) केवली समुद्रघात की अपेक्षा से 559 भेद पाये जाते है ।

प्रः- ज्ञान आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रत में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- श्रावक के 12 व्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में साधुजी के 5 महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर छः आत्मा पाने जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है ।

प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- 49 भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- चारित्र आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

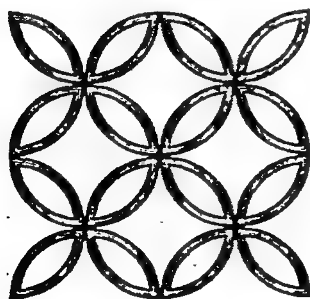
उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।

प्रः- आठों आत्मा पाने वाले जीवों में कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- चार चारित्र पाये जाते हैं (यथाख्यात चारित्र को छोड़कर) ।

प्रः- कषाय आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक यथाख्यात चारित्र पाया जाता है ।



दण्डक-द्वार

सोलहवें बोले दण्डक चौवीस सात नारकी का एक दंडक। सात नारकी के नाम - धम्मा, वंसा, शीला, अजंणा, रिट्ठा, मघा और माघवई। इनके गौत्र रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धुमप्रभा, तमप्रभा, और तमस्तमप्रभा,। दस भवनपति के दस दण्डक और उनके नाम - (1) असुरकुमार (2) नागकुमार (3) सुर्वणकुमार (4) विद्‌युतकुमार (5) अग्निकुमार (6) द्वीपकुमार (7) उदधिकुमार (8) दिशाकुमार (9) पवनकुमार (10) स्तनितकुमार। पांच स्थावरों के पांच दंडक (1) पृथ्वीकाय (2) अप्काय (3) तेउकाय (4) वायुकाय (5) वनस्पतिकाय। तीन विकलेन्द्रिय का तीन दंडक। (1) बेइन्द्रिय (2) तेइन्द्रिय (3) चतुरिन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दंडक, व्याणव्यन्तर का एक दंडक, ज्योतिषी का एक दंडक, वैमानिक का एक दंडक इस प्रकार कुल 24 दण्डक हुए।

प्रः- दण्डक किसे कहते हैं ?

उः- जीवादि के सवरूप को समझाने वाली वाक्य पद्धति (वाक्य रचना) अथवा जहां जीव अपने बन्धे हुये कर्मो का दण्ड भोगते हैं उसे दण्डक कहते हैं।

प्रः- सात नारकी के एक दंडक पाने वाले जीवों में चार गतियों में सें कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक नरक गति पाई जाती हैं।

प्रः- देवताओं के तेरह दण्डक पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक देवगति पाई जाती है।

प्रः- तिर्यंच के नव दण्डक पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक तिर्यंच गति पाई जाती हैं।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती हैं।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती हैं।

प्रः- वेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः-एक वेइन्द्रिय जाति पाई जाती हैं।

प्र:- तेइन्द्रिय के एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उ:- एक तेइन्द्रिय जाति पाई जाती हैं ।

प्र:- चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उ:- एक चतुरिन्द्रिय जाति पाई जाती हैं ।

प्र:- सात नारकी का एक दण्डक, दस भवनपति का दस दण्डक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दण्डक, वाणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक । इन सोलह दण्डक पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उ:- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्र:- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- पांच काया पाई जाती है (त्रसकाय को छोड़कर) ।

प्र:- पांच सथावरों के पांच दण्डकों को छोड़कर 19 दण्डक पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्र:- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- एक स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्र:- वेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- दो इन्द्रियां पाई जाती हैं - (स्पर्शनेन्द्रिय व रसनेन्द्रिय) ।

प्र:- तेइन्द्रिय के एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- तीन इन्द्रियां पाई जाती हैं - (घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय व स्पर्शनेन्द्रिय) ।

प्र:- चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- चार इन्द्रियां पाई जाती हैं (श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर) ।

प्र:- पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय के आठ दण्डक को छोड़कर वाकी के सोलह दण्डक पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- पांचों इन्द्रियां पाई जाती हैं । पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से ।

प्र:- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती हैं (भाषा व मन पर्याप्ति को छोड़कर)।

प्रः- तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डक पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- पांच पर्याप्तियां पाई जाती हैं (मन पर्याप्ति को छोड़कर)।

प्रः- पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय के आठ दण्डकों को छोड़कर सोलह दण्डक पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छः पर्याप्तियां पाई जाती हैं। पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय काया, श्वासोच्वास और आयुष्य बलप्राण रूप चार पाये जाते हैं।

प्रः- बेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- रसनेनिद्रय, स्पर्शन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास व आयुष्य बलप्राण ये छः बलप्राण पाये जाते हैं।

प्रः- तेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुन्द्रिय, मन इन तीन बलप्राणों को छोड़कर शेष सात बलप्राण पाये जाते हैं।

प्रः- चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- श्रोत्रेन्द्रिय व मन बलप्राण छोड़कर शेष आठ बलपाण पाये जाते हैं।

प्रः- पांच स्थावर और तीन विकलेन्द्रिय के आठ दण्डकों को छोड़कर सोलह दण्डक पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों बलप्राण पाये जाते हैं। पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से।

प्रः- पृथ्वी का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक और तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डक इन सात दण्डक पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं (औदारिक, तेजस और कार्मण शरीर)।

प्रः- वायुकाय का एक दण्डक और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक इन दोनों दण्डक पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं

उः- आहारक शरीर को छोड़कर शेष चार शरीर पाये जाते हैं।

प्रः- सात नारकी का एक दण्डक, दस भवनपति के दस दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक। इन चौदह

(14) दण्डक पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- वैक्रिय, तेजस व कार्मण तीन शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- पृथ्वी का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक । इन चारों दण्डक पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- औदारिक, औदारिक मिश्र व कार्मण ये तीन योग पाये जाते हैं ।

प्रः- वायुकाय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र व कार्मण ये पांच काय योग पाये जाते हैं ?

प्रः- तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डक पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- व्यवहार भाषा, औदारिक, औदारिक मिंश्र व कार्मण ये चार काय योग पाये जाते हैं ।

प्रः- सात नारकी का एक दण्डक, दस भवनपति के दस दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक । इन चौदह (14) दण्डक पाने वाले जीवों में 15 (पन्द्रह) योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चार मन के, चार वचन के, तीन काया के । वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग, कार्मण योग, इस प्रकार ग्यारह योग पाये जाते हैं ।

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- तेरह योग पाये जाते हैं । (आहारक काय योग और आहारक मिश्र काय योग को छोड़कर) ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में 12 (बारह) उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन ये तीन उपयोग पाये जाते हैं।

प्रः- बेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय के दो दण्डक पाने वाले जीवों में 12 (बारह) उपयोगों में

से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन ये पांच उपयोग पाये जाते हैं ।

प्रः- चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 12 (वारह) उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन ये छः उपयोग पाये जाते हैं ।

प्रः- सात नारकी का एक दण्डक, दस भवनपति के दस दण्डक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक । इन पन्द्रह दण्डक पाने वाले जीवों में वारह (12) उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन ये नौ (9) उपयोग पाये जाते हैं।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 12 (वारह) उपयोगों मे से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- बारह उपयोग पाये जाते हैं । पन्द्रह कर्मभूमि मनुष्य की अपेक्षा से ।

प्रः- नारकी आदि चौवीस दण्डक पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में 14 (चौदह) गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डक पाने वाले जीवों में 14 (चौदह) गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व गुणस्थान व सारस्वादन गुणस्थान ये दो गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- सात नारकी का एक दण्डक, दस भवनपति के दस दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक । इन चौदहं दण्डक पाने वाले जीवों में 14 (चौदह) गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्र, अविरति सम्यगृदृष्टि ये चार गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 14 (चौदह) गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- पांच गुणस्थान पाये जाते हैं । (मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्रदृष्टि, अविरति सम्यगृदृष्टि व देशविरति श्रावक गुणस्थान) ये पांच गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 14 (चौदह) गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ।

उः- 14 (चौदह) ही गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में 23 विषय व 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 (आठ) विषय व 96 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- बेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 23 विषय व 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 13 विषय और 156 विकार पाये जाते हैं (स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय व 96 विकाार एवं रसनेन्द्रिय के पांच विषय और 60 विकार) ।

प्रः- तेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 23 विषय व 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 15 विषय व 168 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 23 विषय व 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 20 विषय और 228 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय के आठ दण्डकों को छोड़कर अवशेष सोलह दण्डक पाने वाले जीवों में 23 विषय व 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं । पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से ।

प्रः- नारक आदि 24 दण्डक पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में 9 तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- संवर, निर्जरा, मोक्ष इन तीन तत्त्वों को छोड़कर शेष छः तत्त्व पाये जाते हैं ?

प्रः- पांच स्थावर के पांच दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक इन छः दण्डकों को छोड़कर अवशेष 18 दण्डक पाने वाले जीवों में 9 तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं । (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में 9 तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- 9 तत्त्व पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में 8 आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- ज्ञान व चारित्र आत्मा को छोड़कर शेष छः आत्मा पाई जाती हैं।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक व मनुष्य का एक दण्डक इन छः दण्डकों को छोड़कर अवशेष (अठारह) दण्डक पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- सात आत्मा (चारित्र आत्मा को छोड़कर) पाई जाती है।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में आठ आत्माओं में से कितनी आत्माएं पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्माएं पाई जाती हैं।

प्रः- सात नारकी का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक, तीन विकलेन्द्रिय का तीन दण्डक इन छः दण्डक पाने वाले जीवों में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्याएं पाई जाती हैं ?

उः- कृष्ण, नील व कापोत ये तीन लेश्या पाई जाती हैं।

प्रः- दस भवनपति के दस दण्डक, पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, वनस्पतिकाय का एक दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, इन चौदह दण्डक पाने वाले जीवों में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं

उः- कृष्ण, नील, कापोत व तेजो ये चार लेश्या पाई जाती हैं।

प्रः- ज्योतिषी देवता का एक दण्डक पाने वाले जीवों में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- एक तेजो लेश्या पाई जाती है।

प्रः- वैमानिक देवता का एक दण्डक पाने वाले जीवों में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- तीन लेश्या पाई जाती हैं जैसे - तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक इन दो दण्डक पाने वाले जीवों में छः लेश्याओं में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती हैं।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- एक मिथ्या दृष्टि पाई जाती है।

प्रः- तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डक पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?

उः- दो सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि पाई जाती है।

प्रः- पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय के आठ दण्डकों को छोड़कर अवशेष सोलह दण्डक पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं

उः- तीन दृष्टियां पाई जाती हैं।

प्रः- पांच स्थावरों के पांच दण्डक, तीन विकलेन्द्रिय का तीन दण्डक इन आठ दण्डक पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं - आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ।

प्रः- सात नारकी का एक दण्डक, दस भवनपति का दस दण्डक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, वाणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिषी का एक दण्डक और वैमानिक का एक दण्डक इन पन्द्रह दण्डक पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं (शुक्ल ध्यान को छोड़कर) ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं ।

प्रः- नारकी आदि चौवीस दण्डक पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- सात नारकी का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- नारकी के 14 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- दस भवनपतियों के दस दण्डकों में से नागकुमार के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- नागकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- सुवर्णकुमार के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- सुवर्णकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- विद्युतकुमार देवता के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- विद्युतकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- अग्निकुमार देवता के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- अग्निकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- द्वीपकुमार देवता के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- द्वीपकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- उदधिकुमार देवता के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- उदधिकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं।

प्रः- दिशाकुमार देवता के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- दिशाकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं।

प्रः- पवनकुमार देवता के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- पवनकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं।

प्रः- स्तनितकुमार देवता के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- स्तनितकुमार देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं।

प्रः- पृथ्वीकाय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता चार भेद पाये जाते हैं।

प्रः- अप्काय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों मे से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता चार भेद पाये जाते हैं।

प्रः- तेउकाय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता चार भेद पाये जाते हैं।

प्रः- वनस्पतिकाय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- सूक्ष्म, साधारण, प्रत्येक इन तीन के अपर्याप्ता और पर्याप्ता छः भेद पाये जाते हैं

प्रः- बेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- बेइन्द्रिय के अपर्याप्ता और पर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं।

प्रः- तेइन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- तेइन्द्रिय के अपर्याप्ता और पर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं।

प्रः- चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेद में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- चतुरिन्द्रिय के अपर्याप्ता और पर्याप्ता दो भेद पाये जाते हैं।

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय के एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

वीस (20) भेद पाये जाते हैं जैसे - पांच असन्नी तिर्यंच के पर्याप्ता और

अपर्याप्ता दस (10) भेद और पांच सन्नी तिर्यंच का अपर्याप्ता और पर्याप्ता (10) भेद । कुल बीस (20) भेद हुए ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- तीन सौ तीन (303) भेद पाये जाते हैं । जैसे - कर्मभूमि के 15 (पन्द्रह), 30 अकर्मभूमि के और 56 अन्तरद्वीप ये कुल 101 भेद हुए । इन 101 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता के भेद से 202 भेद हुए और 101 सम्मूर्छिम असन्नी अपर्याप्ता मनुष्य के कुल 303 भेद हुए ।

प्रः- व्याणव्यन्तर का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 52 भेद पाये जाते हैं जैसे - 16 वाणव्यन्तर के और 10 (दस) त्रिजृंभक के, इन 26 अपर्याप्ता और पर्याप्ता कुल 52 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- ज्योतिषी का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- वीस (20) भेद पाये जाते हैं जैसे - पांच (5) ज्योतिषीचर और पांच (5) ज्योतिषी अचर इन दस के अपर्याप्ता और पर्याप्ता बीस (20) भेद हुए ।

प्रः- वैमानिक का एक दण्डक पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 76 भेद पाये जाते हैं जैसे - 12 वैमानिक, 3 किल्विषी, 9 लौकान्तिक, 9 ग्रैवेयक और 5 अनुत्तरविमान इन 38 के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 76 भेद हुए ।

प्रः- नारकी आदि 24 दण्डक पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ गुणसाठ (559) भेद पाये जाते हैं (आकाशा. का एक स्कन्ध को छोड़कर तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से) ।

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक । इन दो दण्डकों को छोड़कर अवशेष 22 (बाईस) दण्डक पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है । क्योंकि व्रत प्रत्याख्यान न

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्र

उः- बारह (12) व्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक को छोड़कर अवशेष तेईस (23) में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पा

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक । इन दो दण्डकों को छोड़कर अवशेष बाईस (22) दण्डक पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है ।

प्रः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक, इन दो दण्डक पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

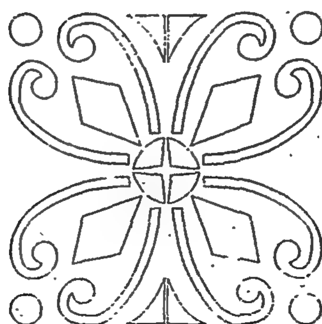
उः- गुणपचास (49) भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक को छोड़कर अवशेष तेईस (23) दण्डक पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है । क्योंकि ये सभी सर्वव्रती चारित्र धारण नहीं कर सकते ।

प्रः- मनुष्य का एक दण्डक पाने वाले जीवों में पांच (5) चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।



लेश्या-द्वार

सत्रहवें बोले लेश्या छः - 1. कृष्ण लेश्या, 2. नील लेश्या, 3. कापोत लेश्या, 4. तेजो लेश्या, 5. पद्म लेश्या, 6. शुक्ल लेश्या ।

प्रः- लेश्या किसको को कहते हैं ?

उः- जिसके द्वारा आत्मा कर्मों से लिप्त होता है, तथा जो योगों की प्रवृत्ति से उत्पन्न होती है, तथा मन के शुभाशुभ परिणामों को लेश्या कहते हैं ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती है ?

उः- एक नरक गति पाई जाती है ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती है ?

उः- तीन गतियां पाई जाती है । (नरक गति को छोड़कर) ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, और कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- तीन जातियां पाई जाती है जैसे-बेइन्द्रिय जाति, तेइन्द्रिय जाति एवं चतुरिन्द्रिय जाति ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या इन चार लेश्या पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती है ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, और कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- दो काया पाई जाती है जैसे - तेउकाय और वायुकाय ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या इन चार लेश्या पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?

उः- तीन काया पाई जाती है - जैसे पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पति काय ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ।

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या इन छः लेश्या पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है ।
प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या इन चार लेश्या पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियां में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?
उः- चार पर्याप्तियां पाई जाती है (भाषा पर्याप्ति और मन पर्याप्ति को छोड़कर)।
प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियां में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?
उः- पांच पर्याप्तियां पाई जाती है (मन पर्याप्ति को छोड़कर)।
प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में पांच शरीर में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- दस उपयोग पाये जाते है । (केवल ज्ञान और केवल दर्शन को छोड़कर) ।
प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- छः उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन ।
प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या में मिथ्यात्व के दसों भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- दसों भेद मिथ्यात्व के पाये जाते हैं ।
प्रः- तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या में मिथ्यात्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- मिथ्यात्व के दस ही भेद पाये जाते है ।
प्रः- तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या पाने वाले जीवों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- सात उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन ।
प्रः- शुक्ल लेश्या पाने वाले जीवों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- नौ उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पांच ज्ञान और चार दर्शन ।
प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- छः गुणस्थान पाये जाते हैं जैसे - पहले गुणस्थान से लेकर छठे गुणस्थान तक ।
प्रः- तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

- एक, सातवां अप्रमादी साधु गुणस्थान पाया जाता है ।
- शुक्ल लेश्या पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
- छः गुणस्थान पाये जाते हैं (आठवें गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक के)।
- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियां के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विकार पाये जाते हैं ?
- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
- आठ तत्त्व पाये जाते हैं - (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर यहां लेश्याओं में आठ तत्त्वों का ही उल्लेख किया गया है । मोक्ष तत्त्व का निषेध करने का कारण यह है कि लेश्या तेरहवें गुणस्थान तक ही पाई जाती है । चवदवें गुणस्थान में लेश्या नहीं पाई जाती है जबकि मोक्ष तत्त्व को प्रमुख रूप से चवदवें गुणस्थान में ही माना गया है) ।

:- छः लेश्या पाने वाले जीवों में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

:- आठों आत्मा पाई जाती है ।

:- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

:- 22 (बाईस) दण्डक पाये जाते हैं (ज्योतिषी का एक दण्डक और वैमानिक देवता का एक दण्डक इन दो दण्डकों को छोड़कर) ।

:- तेजो लेश्या पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- 18 (अठारह) दण्डक पाये जाते हैं जैसे - भवनपति का दस दण्डक, पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, वनस्पतिकाय का एक दण्डक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दण्डक, व्याणव्यन्तर का एक दण्डक, ज्योतिपी का एक दण्डक और वैमानिक का एक दण्डक कुल अठारह दण्डक हुए ।

प्रः- पद्म लेश्या पाने वाले जीवों में चौवीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- तीन दण्डक पाये जाते हैं जैसे - तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक । कुल तीन दण्डक हुए ।

प्र:- शुक्ल लेश्या पाने वाले जीवों में चौवीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- तीन दण्डक पाये जाते हैं जैसे - तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक, मनुष्य का

एक दण्डक, वैमानिक का एक दण्डक । कुल तीन दण्डक हुए ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियां में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- दो दृष्टियां पाई जाती हैं जैसे - मिथ्या दृष्टि और मिश्र दृष्टि ।

प्रः- तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियां में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं जैसे - आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान ।

प्रः- तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- एक धर्मध्यान पाया जाता है । सातवें गुणस्थान की अपेक्षा से ।

प्रः- एक शुक्ल लेश्या पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- कृष्ण लेश्या पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 459 (चार सौ उन्नसाठ) भेद पाये जाते हैं । जैसे - पांचवीं, छठी, सातवीं नारकी के अपर्याप्त और पर्याप्त के छः भेद, तिर्यंच के 48 (अड़तालीस) भेद, मनुष्य के 303 (तीन सौ तीन) भेद और देवता के 102 (एक सौ दो) भेद, भवनपति के 10, परमाधामी के 15, व्यन्तर के 16, जृम्भक के 10 इन 51 के पर्याप्ता और अपर्याप्ता एक सौ दो (102) भेद हुए ।

प्रः- नील लेश्या पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 459 (चार सौ उन्नसाठ) भेद पाये जाते हैं । जैसे - तीसरी, चौथी, पांचवीं, नारकी के अपर्याप्त और पर्याप्त छः, तिर्यंच के 48 (अड़तालीस) भेद, मनुष्य के 303 (तीन सौ तीन) भेद, देवता के 102 (एक सौ दो) भेद, भवनपति के 25 (पच्चीस) भेद और वाणव्यन्तर के छब्बीस (26) भेद । इन 51 के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 102 (एक सौ दो) भेद हुए ।

प्रः- कापोत लेश्या पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- 459 (चार सौ उन्नसाठ) भेद पाये जाते हैं । जैसे - पहली, दूसरी, तीसरी, नारकी के छः भेद, तिर्यंच के 48 (अड़तालीस) भेद, मनुष्य के 303 (तीन सौ तीन) भेद, देवता के 102 (एक सौ दो) भेद, भवनपति के 25 (पच्चीस) और वाणव्यन्तर के छब्बीस (26) भेद । इन 51 के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 102 (एक सौ दो) भेद हुए ।

प्र:- तेजो लेश्या पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- 343 भेद पाये जाते हैं । जैसे - तिर्यंच के 13, बादर पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय के अपर्याप्ता तीन भेद, सन्नी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता पर्याप्ता दस भेद, मनुष्य के 202, 15 कर्मभूमि, 30 अकर्मभूमि, 56 अन्तरद्वीप इन 101 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 202 भेद, देवता के 128, 25 भवनपति, 26 वाणव्यन्तर, 10 ज्योतिषी के, 2 वैमानिक के पहले दूसरे देवता के और 1 प्रथम किल्विषी के इन 64 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता कुल 128 भेद हुए ।

प्र:- पद्म लेश्या पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- 66 भेद पाये जाते हैं जैसे - तिर्यंच के 10 (सभी पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 10) कर्मभूमि के 30 (15 कर्मभूमि मनुष्य के अपर्याप्ता और पर्याप्ता) देवता के 26 (तीसरा, चौथा, पांचवा देवलोक, दूसरा किल्विषी एक और नव लौकान्तिक देव इन तेरह के पर्याप्ता अपर्याप्ता 26 कुल 66 भेद हुए ।

प्र:- शुक्ल लेश्या पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- 84 भेद पाये जाते हैं जैसे - तिर्यंच के 10 (सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता और अपर्याप्ता) कर्मभूमि मनुष्य के 30 (15 कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 30) भेद और देवता के 44 (छठे देवलोक से बारहवें देवलोक तक के 7 देवलोक, तीसरा किल्विषी एक, नौ ग्रैवेवक के और पांच अनुत्तरविमान के 5 इन 22 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 44 भेद हुए ।

प्र:- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- पांच सौ सत्तावन (557) भेद पाये जाते हैं (धर्मा., अधर्मा., आकाशा., के तीन स्कन्धों को छोड़कर) ।

प्र:- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उ:- श्रावक के 12 व्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचो महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- छहों लेश्या पाने वाले जीवों में 49 भांगो में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- 49 भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या इन तीन लेश्या पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- दो चारित्र पाये जाते हैं ।

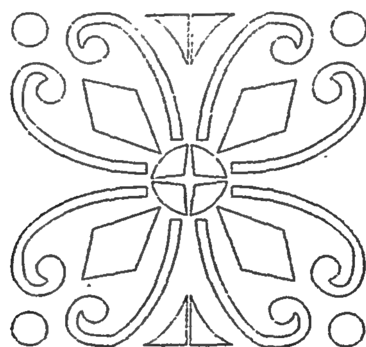
प्रः- तेजो लेश्या और पद्म लेश्या इन दो लेश्या पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- तीन चारित्र पाये जाते हैं । जैसे - सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्ध चारित्र ।

प्रः- शुक्ल लेश्या में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।

नोट - तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या वाले अपर्याप्ता अवस्था में काल नहीं करते हैं।



विचार

जिसने मन को साध लिया,
उसने सब कुछ साध लिया,
जिसने मन को नहीं साधा,
उसने जीवन में कुछ भी नहीं साधा ।

- सुमति मुनि

दृष्टि -द्वार

अठारहवें बोले दृष्टि तीन - (1) सम्यक् दृष्टि (2) मिथ्या दृष्टि (3) सम्यक् मिथ्या दृष्टि (मिश्र दृष्टि)।

प्रः- दृष्टि किसे कहते हैं ?

उः- अन्तः करण की प्रवृत्ति याने श्रद्धा के भावों को अर्थात् मन के अभिप्राय को दृष्टि कहते हैं।

प्रः- तीन दृष्टियां पाने वाले जीवों में चार गतियों में सें कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती हैं।

प्रः- एकांत मिथ्या दृष्टि पाने वाले जीवों में पांच जतियों में से कितनी जतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक एकेन्द्रिय जाती पाई जाती हैं।

प्रः- एकांत सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि इन दो दृष्टि पाने वाले जीवों में पांच जतियों में से कितनी जतियां पाई जाती हैं ?

उः- चार जातियां पाई जाती हैं, जेसै - बेइन्द्रिय जाती, तेइन्द्रिय जाती, चतुरिन्द्रिय जाती और पंचेन्द्रिय जाती।

प्रः- तीन दृष्टियां पाने वाले जीवों में पांच जतियों में से कितनी जतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाती पाई जाती हैं।

प्रः एक मिथ्यादृष्टि पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- पांच काया पाई जाती हैं (त्रसकाया को छोड़कर)।

प्रः- तीन दृष्टियां पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाया पाई जाती हैं।

प्रः- तीन दृष्टियां पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रिया पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रिया पाई जाती हैं।

प्रः- तीन दृष्टियां पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है।

प्रः- तीन दृष्टियां पाने वाले जीवों में दस बल प्राणों में से कितने वल प्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों वलप्राण पाये जाते हैं।

प्रः- मिथ्या दृष्टि और मिश्र दृष्टि पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं । (आहारक शरीर को छोड़कर) ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीरपाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यादृष्टि पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- तेरह योग पाये जाते हैं (आहारक योग और आहारक मिश्र योग को छोड़कर)।

प्रः- मिश्र दृष्टि पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- दस योग पाये जाते हैं (औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय मिश्र योग, आहारक योग, आहारक मिश्र योग और कार्मण काय योग । इन पांच योगों को छोड़कर)।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि इन दो दृष्टियां पाने वाले जीवों में बारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं । (जैसे तीन अज्ञान और पहले के तीन दर्शन)।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में बारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- नव उपयोग पाये जाते हैं । जैसे – पांच ज्ञान और चार दर्शन ।

प्रः- तीनों दृष्टियां पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यादृष्टि पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- मिश्र दृष्टि पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक तीसरा मिश्र दृष्टि गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- बारह गुणस्थान पाये जाते हैं (पहला और तीसरा गुणस्थान को छोड़कर)

प्रः- तीनों दृष्टियां पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद

पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भेद मिथ्यात्व का नहीं पाया जाता है ।

प्रः- मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि पाने वाले जीवों में नवतत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- छः तत्त्व पाये जाते हैं । जैसे - जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व, बंध तत्त्व ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में नवतत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- नवतत्त्व पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि पाने वाले जीवों में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- छः आत्मा पाई जाती है (ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- एकान्त मिथ्यादृष्टि पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- पांच दण्डक पाये जाते हैं, जैसे - पृथ्वीकाय का एक दण्डक, अप्काय का एक दण्डक, तेउकाय का एक दण्डक, वायुकाय का एक दण्डक और वनस्पतिकाय का एक दण्डक । कुल पांच दण्डक पाये जाते है ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि इन दो दृष्टियां पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- तीन दण्डक पाये जाते हैं जैसे - बेइन्द्रिय का एक दण्डक, तेइन्द्रिय का एक दण्डक, चतुरिन्द्रिय का एक दण्डक, कुल तीन दण्डक हुए ।

प्रः- मिश्र दृष्टि पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सोलह दण्डक पाये जाते हैं । (पांच स्थावर और तीन विकलेन्द्रिय के, आठ दण्डकों को छोड़कर) ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- उन्नीस दण्डक पाये जाते हैं (पांच स्थावरों के पांच दण्डक छोड़कर) ।

प्रः- तीनों दृष्टियां पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- सोलह दण्डक पाये जाते हैं ।

प्रः- तीनों दृष्टियां पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि इन दो दृष्टियां पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं जैसे - आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं । समुच्चय बोल की अपेक्षा से ।

प्रः- तीनों दृष्टियां पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- मिथ्या दृष्टि पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ तिरेपन (553) भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- मिश्र दृष्टि पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- एक सौ तीन (103) भेद पाये जाते हैं । जैसे - नारकी के 7, सन्नी तिर्यंच के 5, कर्मभूमि मनुष्य के 15, देवता के 76, (15 परमाधामी, 3 किल्विषी और पांच (5) अनुत्तर विमान के, इन 23 के पर्याप्ता छोड़कर) अवशेष 76 देवता के पर्याप्ता भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- सम्यक् दृष्टि पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दो सौ तैयासी (283) भेद पाये जाते हैं - जैसे नारकी के 13 (सातवीं नारकी का अपर्याप्ता छोड़कर) तिर्यंच के 18, संज्ञी तिर्यंच के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 10 भेद, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और तीन (3) विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता 8 भेद, मनुष्य के 90, कर्मभूमि के 15, अकर्मभूमि के 30, इन 45 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 90 भेद और देवता के 162, (15 परमाधामी और 3 किल्विषी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 36 भेदों को छोड़कर) ।

प्रः- तीनों दृष्टियां पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

पांच सौ सत्तावन (557) भेद पाये जाते हैं (धर्मा., अधर्मा., आकाशा. के

ध्यान-द्वार

उन्नीसवें बोले ध्यान चार - (1) आर्त्तध्यान (2) रौद्रध्यान (3) धर्मध्यान (4) शुक्लध्यान ।

प्रः- ध्यान किसको कहते हैं ?

उः- एक वस्तु पर मन को स्थिर करना, उसको ध्यान कहते हैं ।

प्रः- आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान इन तीन ध्यान पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- चारों गतियां पाई जाती है ।

प्रः- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती हैं ।

प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाइ जाती हैं ?

उः- पांचों जातियां पाई जाती है ।

प्रः- चार ध्यान पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- छहों काया पाई जाती है ।

प्रः- चारों ध्यान पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- चारों ध्यान पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रिय पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रिय पाई जाती है ।

प्रः- चारों ध्यान पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छः पर्याप्तियां पाई जाती है ।

प्रः- चारों ध्यान पाने वाले जीवों में दस वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दशों वलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं (आहारक शरीर को छोड़कर) ।
प्रः- धर्म ध्यान पाने वाले जीवों में पांच शरीरों मे से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।
प्रः- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उः- तीन शरीर पाये जाते हैं । जैसे - औदारिक शरीर, तैजस शरीर एवं कार्मण शरीर ।
प्रः- रौद्रध्यान पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- तेरह (13) योग पाये जाते हैं । (आहारक शरीर और आहारक मिश्र योग को छोड़कर) ।
प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं ।
प्रः- शुक्ल ध्यान पाये जाने वाले जीवों में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- ग्यारह योग पाये जाते हैं । जैसे - चार मन के, चार वचन के और तीन काया के (औदारिक काया योग, आदारिक मिश्र योग और कार्मण योग) औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग ये दो योग केवली समुद्घात की अपेक्षा पाये जाते हैं ।
प्रः- आर्त्तध्यान पाने वाले जीवों में वारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- दस उपयोग पाये जाते हैं । जैसे - पहले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन।
प्रः- रौद्रध्यान पाने वाले जीवों में वारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- नव उपयोग पाये जाते हैं । जैसे - पहले के तीन ज्ञान, तीन अज्ञान और तीन दर्शन ।
प्रः- धर्मध्यान पाने वाले जीवों में वारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- सात उपयोग पाये जाते हैं । जैसे - पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन ।
प्रः- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में वारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- नव उपयोग पाये जाते हैं । जैसे - पांच ज्ञान के और चार दर्शन के ।
प्रः- चार ध्यान पाने वाले जीवों में आठ कर्मो में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।

प्रः- रौद्रध्यान पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- पांच गुणस्थान पाये जाते हैं । पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा और पांचवां गुणस्थान ।

प्रः- आर्तध्यान पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- छः गुणस्थान पाये जाते हैं । पहले गुणस्थानसे लेकर छठे गुणस्थान तक के छः गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- धर्मध्यान पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- चार गुणस्थान पाये जाते हैं । चौथे गुणस्थान से लेकर सातवें गुणस्थान तक के चार गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- सात गुणस्थान पाये जाते हैं । आठवें गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक के सात गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- चारों ध्यान पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।

प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व के दसों भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- धर्मध्यान और शुक्लध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- मिथ्यात्व का एक भी भेद नहीं पाया जाता है ।

प्रः- आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान इन तीन ध्यान पाने वाले जीवों में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।

प्रः- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं । (पाप तत्त्व को छोड़कर) ।

प्रः- रौद्रध्यान पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- सात आत्मा पाई जाती है (चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।

प्रः- आर्तध्यान, धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान इन तीन ध्यान पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है ।

प्र:- रौद्रध्यान पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उ:- सोलह (16) दण्डक पंचेन्द्रिय जीवों वाले पाये जाते हैं ।
प्र:- आर्त्तध्यान पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उ:- 24 दण्डक पाये जाते हैं ।
प्र:- धर्मध्यान पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उ:- सोलह दण्डक पाये जाते हैं (पांच स्थावरों के पांच दण्डक और तीन विकलेन्द्रिय के तीन दण्डक, इन आठ दण्डकों को छोड़कर) ।
प्र:- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उ:- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है ।
प्र:- आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान इन तीन ध्यान पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उ:- छहों लेश्या पाई जाती है ।
प्र:- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उ:- एक शुक्ल लेश्या पाई जाती है ।
प्र:- आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उ:- तीनों दृष्टियां पाई जाती है ।
प्र:- धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उ:- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।
प्र:- चारों ध्यान पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?
उ:- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।
प्र:- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- 212 भेद पाये जाते हैं । जैसे - 7 नारकी के पर्याप्ता, 5 संज्ञी तिर्यंच के पर्याप्ता, 101 संज्ञी मनुष्य के पर्याप्ता और 99 देवता के पर्याप्ता । कुल 212 भेद हुए ।
प्र:- आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान इन तीन ध्यान पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उ:- 123 भेद पाये जाते हैं, 17 नारकी के पर्याप्ता, 5 संज्ञी तिर्यंच के पर्याप्ता, 30 अकर्मभूमि के पर्याप्ता और 81 देवता का पर्याप्ता । कुल 123 भेद पाये जाते हैं ।
प्र:- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 भेद कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्ता पाये जाते हैं।

प्रः- चारों ध्यान पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- 559 भेद पाये जाते है, एक आकाशा. के स्कंध को छोड़कर।

प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में श्रावक के बारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है।

प्रः- आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान इन तीन ध्यान पाने वाले जीवों में श्रावक के बारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं?

उः- बारह व्रत पाये जाते हैं।

प्रः- शुक्ल ध्यान में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है।

प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं।

प्रः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है।

प्रः- आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान इन तीन ध्यान पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं?

उः- (उन्नचास) 49 भांगे पाये जाते हैं।

प्रः- शुक्लध्यान पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं?

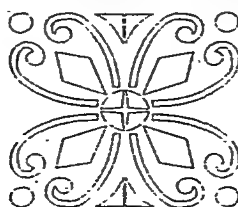
उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है।

प्रः- आर्त्तध्यान और धर्मध्यान इन दो ध्यान पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं?

उः- तीन चारित्र पाये जाते हैं। जैसे - सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्धि चारित्र।

प्रः- शुक्ल ध्यान पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं?

उः- चार चारित्र पाये जाते हैं। (परिहार विशुद्धि चारित्र को छोड़कर)।



द्रव्य-द्वार

बीसवें बोले षटद्रव्यों के 30 भेद। छः द्रव्यों के नाम - (1) धर्मास्तिकाय (2) अधर्मास्तिकाय (3) आकाशास्तिकाय (4) काल द्रव्य (5) जीवास्तिकाय (6) पुद्गलास्तिकाय।

(1) धर्मास्तिकाय के 5 भेद -

धर्मास्तिकाय पांच बोलों से जाना जाता है।

1. द्रव्य से - एक द्रव्य। 2. क्षेत्र से - सम्पूर्ण लोक प्रमाण। 3. काल से -आदि अन्त रहित। 4. भाव से - वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं और स्पर्श नहीं, अरूपी, अजीव, शाश्वत, लोकव्यापी और असंख्यात प्रदेशी है। 5. गुण से - चलन गुण। पानी में मछली का दृष्टांत, जैसे पानी के आधार से मछली चलती है, वैसे ही जीव और पुद्गल दोनों की गति (हलन-चलन) का आधार धर्मास्तिकाय है।

(2) अधर्मास्तिकाय के 5 भेद -

अधर्मास्तिकाय पांच बोलों से जाना जाता है।

1. द्रव्य से - एक द्रव्य। 2. क्षेत्र से - सम्पूर्ण लोक प्रमाण। 3. काल से - आदि अन्त रहित। 4. भाव से - वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं और स्पर्श नहीं, अरूपी, अजीव, शाश्वत, लोकव्यापी और असंख्यात प्रदेशी है। 5. गुण से - स्थिर गुण, थके हुए पथिक को छाया का आधार है उसी तरह ठहरे हुए जीव और पुद्गल दोनों के स्थिरीकरण का आधार अधर्मास्तिकाय है।

(3) आकाशास्तिकाय के 5 भेद -

आकाशास्तिकाय पांच बोलों से जाना जाता है।

1. द्रव्य से - एक द्रव्य। 2. क्षेत्र से - लोकालोक प्रमाण। 3. काल से - आदि अन्त रहित। 4. भाव से - वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं और स्पर्श नहीं, अरूपी, अजीव, शाश्वत, सर्वव्यापी और अनन्त प्रदेशी है। 5. गुण से - स्थान (पोलार) देने का गुण। भींत में खूंटी का दृष्टांत। जैसे - खूंटी को भींत स्थान देने में सहायक है, वैसे ही धर्मास्तिकायादि पांचों द्रव्यों को आकाशास्तिकाय स्थान देने में सहायक है।

(4) काल के 5 भेद -

1. द्रव्य से - एक काल द्रव्य अनन्त द्रव्यों पर प्रवर्ते, 2. क्षेत्र से - ढ़ाई द्वीप प्रमाण, 3. काल से - आदि अन्त रहित, 4. भाव से - वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, अरूपी, अजीव, शाश्वत और अप्रदेशी है। 5. गुण से - वर्तन गुण, नया को पुराना करे और पुराने को नष्ट करे। कपड़े को कैंची का दृष्टांत।

प्रदेश रहित होने से काल अस्तिकाय नहीं हैं।

(5) जीवास्तिकाय के 5 भेद -
जीवास्तिकाय पांच बोलों से जाना जाता है ।
1. द्रव्य से - अनन्त जीव द्रव्य, 2. क्षेत्र से - सम्पूर्ण लोक प्रमाण, 3. काल से - आदि अन्त रहित । 4. भाव से - वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं और स्पर्श नहीं, अरूपी, जीव, शाश्वत, लोक व्यापी और अनन्त प्रदेशी है । एक जीव की अपेक्षा से असंख्यात प्रदेशी है । 5. गुण से - उपयोग गुण । चन्द्रमा की कला का दृष्टांत । जैसे - आवरण के कारण चन्द्रमा न्यूनाधिक प्रकाशित होता है, वैसे ही ज्ञानावरणीयादि कर्म के कारण आत्मा का उपयोग गुण न्यूनाधिक प्रकट होता है ।
(6) पुद्गलास्तिकाय के 5 भेद -
पुद्गलास्तिकाय पांच बोलों से जाना जाता है ।
1. द्रव्य से - अनन्त द्रव्य, 2. क्षेत्र से - सम्पूर्ण लोक प्रमाण, 3. काल से - आदि अन्त रहित । 4. भाव से - रूपी अर्थात् वर्ण, गंध, रस और स्पर्श युक्त अजीव शाश्वत और अनन्त प्रदेशी है । 5. गुण से - पूरण, गलन, सड़न, और विध्वंसन गुण । बादल का दृष्टांत । बादल की तरह पुद्गल भी मिलते और बिखरते हैं।
प्रः- द्रव्य किसे कहते हैं ?
उः- भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल में रहने वाला, गुण और पर्यायों का जो आधार होता है उसे द्रव्य कहते हैं अथवा जिसमें गुण और पर्याय उत्पन्न होते हैं और नष्ट होतें हैं, उसे 'द्रव्य' कहते हैं ।
प्रः- अस्तिकाय किसे कहते हैं ?
उः- 'अस्ति' शब्द का अर्थ है प्रदेश और 'काय' का अर्थ है समूह को अस्तिकाय कहते हैं ।
प्रः- षट् (छह) द्रव्यों में कितने द्रव्य अस्तिकाय हैं ?
उः- पांच द्रव्य (काल द्रव्य को छोड़कर) ।
प्रः- षट् (छह) द्रव्यों में कितने द्रव्य अरूपी हैं ?
उः- पांच द्रव्य (पुद्गलास्तिकाय को छोड़कर) ।
प्रः- षट् (छह) द्रव्यों में कितने अजीव द्रव्य हैं ?
उः- पांच द्रव्य (जीवास्तिकाय को छोड़कर) ।
प्रः- छः द्रव्य पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती है ?
उः- चारों गतियां पाई जाती है ।
प्रः- छः द्रव्य पाने वाले जीवों में चार जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती है ?
उः- पांचों जातियां पाई जाती है ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती है ?
उः- छहों काया पाई जाती है ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती है ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती है ?
उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?
उः- दसों बलप्राण पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?
उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?
उः- पन्द्रह योग पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?
उः- बारह उपयोग पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- चौदह गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के 10 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- दसों भेद मिथ्यात्व के पाये जाते हैं ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में नव तत्त्व के कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- नव तत्त्व पाये जाते है ।
प्रः- छहों द्रव्य पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?
उः- आठों आत्मा पाई जाती है ।
प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में 24 दण्डक में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- चौबीस दण्डक पाये जाते हैं ।
प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती है ?
उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।
प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती है ?
उः- तीनों दृष्टियां पाई जाती है ।
प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में चार ध्यान में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- चारों ध्यान पाये जाते हैं ।
प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद

पाये जाते हैं ?

उः- 563 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय एवं आकाशास्तिकाय इन तीन भेदों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- आठ भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- कालद्रव्य में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- छः द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- पुद्गलास्तिकाय पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 530 भेद पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में श्रावक के बारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- श्रावक के 12 व्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

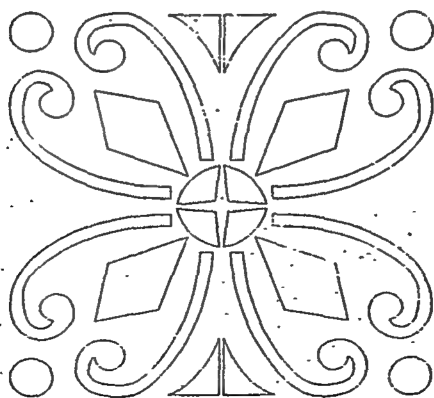
उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- उन्नचास भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव द्रव्य पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।



राशि–द्वार

इक्कीसवें बोले राशि दो – जीव राशि और अजीव राशि। जीव राशि के 563 और अजीव राशि के 560 भेद होते हैं।

प्रः– राशि किसे कहते हैं ?

उः– वस्तु के समूह को 'राशि' कहते हैं।

संसारी जीवों के 563 भेद इस प्रकार हैं –

नारकी के 14 भेद–

सात नारकी के पर्याप्त और अपर्याप्त।

तिर्यञ्च के 48 भेद –

22 – चार प्रकार के स्थावर जीवों के प्रत्येक के सूक्ष्म और बादर तथा पर्याप्त और अपर्याप्त – ऐसे चार भेदों से कुल 16 भेद हुए। वनस्पतिकाय के सूक्ष्म, साधारण और प्रत्येक, इन तीन के पर्याप्त और अपर्याप्त, ये 6 भेद हुए। इस प्रकार पांच स्थावर के कुल 22 भेद हुए।

6 – बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय, इन तीन विकलेन्द्रिय के पर्याप्त और अपर्याप्त, ऐसे 6 भेद हुए।

20 – पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च पांच प्रकार के हैं – 1. जलचर, 2. स्थलचर, 3. खेचर 4. उरपरिसर्प और 5. भुजपरिसर्प। ये पांच ही संज्ञी और पांच असंज्ञी। ये 10 भेद हुए और इनके पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे 20 भेद हुए।

मनुष्य के 303 भेद –

कर्मभूमिज मनुष्य के 15 भेद हैं। यथा – 5 भरत (1) 5 ऐरवत और 5 महाविदेह में उत्पन्न मनुष्यों के 15 भेद।

अकर्म भूमिज (भोग – भूमिज) मनुष्य के 30 भेद हैं। यथा – 5 देवकुरू, 5 उत्तरकुरू, 5 हरिवास, 5 रम्यक्वास, 5 हैमवत और 5 हेरण्यवत क्षेत्रों में उत्पन्न मनुष्यों के 30 भेद। 56 अन्तरद्वीपों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के 56 भेद। ये सभी मिलाकर गर्भज – मनुष्य के 101 भेद होते हैं। पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से 202 भेद होते हैं और इन 101 गर्भज मनुष्यों की अशुचि में उत्पन्न सम्मूर्च्छिम मनुष्य के 101 भेद अपर्याप्त। इस प्रकार कुल मिलाकर मनुष्य के 303 भेद होते हैं।

---

(1) पांच भरत इस प्रकार हैं – जम्बूद्वीप में 1 भरत, घातकी खंड में 2 और पुष्करार्द्ध में 2, ये पांच हुए। इस प्रकार 5 ऐरवत और 5 महाविदेह भी हैं और अकर्म भूमिज भी 5–5 हैं।

देवता के 198 भेद -

25 भवनपति - 10 असुरकुमारादि और 15 परमाधार्मिक (1. अम्ब, 2. अम्बरीष, 3. श्याम, 4. सबल, 5. रौद्र, 6. महारौद्र, 7. काल, 8. महाकाल, 9. असिपत्र, 10. धनुष, 11. कुम्भ, 12. वालुका, 13. वैतरणी, 14. खरस्वर और 15. महाघोष)।

26 वाणव्यन्तर - पिशाचादि 8 (पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व) आणपन्ने आदि आठ (आणपन्ने, पाणपन्ने, इसिवाई, भूयवाई, कंदे, महाकंदे, कुह्मण्डे, पयंगदेव) । जृम्भक दस, यथा - 1. अन्न जृम्भक, 2. पाण जृम्भक, 3. वस्त्र जृम्भक, 4. लयण जृम्भक, 5. शयन जृम्भक, 6. पुष्प जृम्भक, 7. फल जृम्भक, 8. पुष्पफल जृम्भक, 9. विद्या जृम्भक, और 10. अव्यक्त जृम्भक, ।

10 ज्योतिषी - 1. चन्द्र, 2. सूर्य, 3. ग्रह, 4. नक्षत्र और 5. तारा । ये 5 चर और 5 अचर । कुल 10 भेद ।

38 वैमानिक - 12 देवलोक - 1. सौधर्म, 2. ईशान, 3. सनत्कुमार, 4. माहेन्द्र, 5. ब्रह्म लोक, 6. लान्तक, 7. महाशुक्र, 8. सहस्त्रार, 9. आणत, 10. प्राणत 11. आरण और 12. अच्युत ।

3 किल्विषिक - 1. त्रिपल्योपमिक, 2. त्रिसागरिक और 3. त्रयोदश सागरिक ।

9 लोकान्तिक - 1. सारस्वत, 2. आदित्य, 3. वह्नि, 4. वरुण, 5. गर्दतोय, 6. तुषित, 7. अव्याबाद, 8. आग्नेय और 9. अरिष्ट ।

9 ग्रैवेयक - 1. भद्र, 2. सुभद्र, 3.सुजात, 4. सुमनस, 5.सुदर्शन, 6. प्रियदर्शन, 7. आमोह, 8. सुप्रतिबद्ध और 9. यशोधर ।

5 अनुत्तरवैमानिक - 1. विजय, 2. वैजयन्त; 3. जयन्त, 4. अपराजित और 5. सर्वार्थसिद्ध ।

ये कुल मिलाकर 99 भेद हुए । इनके पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से देव के 198 भेद होते हैं ।

नारकी के 14, तिर्यंच के 48, मनुष्य के 303 और देव के 198 भेद। ये कुल मिलाकर जीव के 563 भेद हुए ।

अजीव राशि के 560 भेद । इनमें अरूपी अजीव के 30 और रूपी अजीव के 530 । ये कुल 560 भेद हैं ।

अरूपी अजीव के 30 भेद इस प्रकार हैं । धर्मास्तिकाय के तीन भेद - स्कन्ध (सम्पूर्ण वस्तु) स्कन्ध का देश (दो तीन आदि भाग) स्कन्ध का प्रदेश (जिसका दूसरा भाग नहीं हो सके) अधर्मास्तिकाय के तीन भेद - स्कन्ध, स्कन्ध का देश और स्कन्ध का प्रदेश । आकाशास्तिकाय के तीन भेद - स्कन्ध, स्कन्ध का देश और स्कन्ध का प्रदेश । कालद्रव्य का एक भेद = 10 ।

धर्मास्तिकाय के पांच भेद - 1 द्रव्य, 2 क्षेत्र, 3 काल, 4 भाव और 5 गुण । अधर्मास्तिकाय के पांच भेद - 1 द्रव्य, 2 क्षेत्र, 3 काल, 4 भाव और 5 गुण ।

आकाशास्तिकाय के पांच भेद - 1 द्रव्य, 2 क्षेत्र, 3 काल, 4 भाव और 5 गुण। काल द्रव्य के 5 भेद - 1 द्रव्य, 2 क्षेत्र, 3 काल, 4 भाव और 5 गुण। ये 20 और ऊपर के 10, ऐसे कुल 30 भेद हुए।

रूपी अजीव के 530 भेद इस प्रकार हैं -

वर्ण पांच - काला, नीला, लाल, पीला और सफेद (श्वेत)। प्रत्येक के 2 गंध, 5 रस, 8 स्पर्श और 5 संस्थान इन 20 भेदों से गुणा करने पर 20 X 5 = 100 भेद हुए।

गंध दो - सुगंध और दुर्गन्ध। प्रत्येक के 5 वर्ण, 5 रस, 8 स्पर्श और 5 संस्थान। इन 23 भेदों से गुणा करने पर 23 X 2 = 46 भेद हुए।

रस पांच - तीखा, कड़वा, कषायला, खट्टा और मिठा। प्रत्येक के 5 वर्ण, 2 गंध, 8 स्पर्श और 5 संस्थान। इन 20 भेदों से गुणा करने पर 20 X 5 = 100 भेद हुए।

स्पर्श आठ - कर्कश, मृदु, गुरू, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष। प्रत्येक के 5 वर्ण, 2 गंध, 5 रस, 6 स्पर्श और संस्थान। इन 23 भेदों से गुणा करने पर 23 X 8 = 184 भेद हुए।

संस्थान पांच - परिमण्डल, वट्ट, तंस, चउरंस और आयत। प्रत्येक के 5 वर्ण, 2 गंध, 5 रस और 8 स्पर्श। इन 20 भेदों से गुणा करने पर 20 X 5 = 100 भेद हुए।

इस प्रकार रूपी अजीव के 530 भेद हुए।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से नारकी के 14 भेदों में 4 गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं?

उः- 1 नरक गति पाई जाती है।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से तिर्यंच के 48 भेदों में 4 गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं?

उः- 1 तिर्यंच गति पाई जाती है।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से देवगति के 198 भेदों में 4 गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं?

उः- 1 देवगति पाई जाती है।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से एकेन्द्रिय के 22 भेदों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं?

उः- 1 एकेन्द्रिय जाति पाई जाती है।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से वेइन्द्रिय के 2 भेदों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं?

उः- 1 वेइन्द्रिय जाति पाई जाती है।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से तेइन्द्रिय के 2 भेदों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उ:- 1 तेइन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से चउरिन्द्रिय के 2 भेदों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उ:- 1 चउरिन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से पंचेन्द्रिय के 535 भेदों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उ:- 1 पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से पृथ्वीकाय के 4 भेदों में 6 काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- 1 पृथ्वीकाय पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से अप्काय के 4 भेदों में 6 काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- 1 अप्काय पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से तेउकाय के 4 भेदों में 6 काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- 1 तेउकाय पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से वायुकाय के 4 भेदों में 6 काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- 1 वायुकाय पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से वनस्पतिकाय के 6 भेदों में 6 काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- 1 वनस्पतिकाय पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से त्रसकाय के 541 भेदों में 6 काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- 1 त्रसकाय पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से एकेन्द्रिय के 22 भेदों मे 5 इंन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- 1 स्पर्शनेन्द्रिय पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से वेइन्द्रिय के 2 भेदों में 5 इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- 2 इन्द्रियां पाई जाती है, स्पर्शनेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से तेइन्द्रिय के 2 भेदों में 5 इन्द्रियों में से कितनी

इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- 3 इन्द्रियां पाई जाती है, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से चउरिन्द्रिय के 2 भेदों में 5 इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- 4 इन्द्रियां पाई जाती हैं, श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से पंचेन्द्रिय के 535 भेदों में 5 इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- 5 इन्द्रियां पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से एकेन्द्रिय के 11 अपर्याप्ता 101 समुर्च्छिम मनुष्य के कुल 112 भेदों में 6 पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उ:- प्रथम 3 पर्याप्तियां झाझेरी पाई जाती हैं ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से एकेन्द्रिय के 11 पर्याप्ता, बेइन्द्रिय 1, तेइन्द्रिय 1, चउरिन्द्रिय 1 (3 विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता में) 5 असंज्ञी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता इन कुल 19 भेदों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उ:- प्रथम 4 पर्याप्तियां पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से तीन विकलेन्द्रिय के पर्याप्ता -3, पांच संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता -5, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता -5, सात सात नारकी के अपर्याप्ता - 7, 101 गर्भज मनुष्य के अपर्याप्ता और 99 देवता के अपर्याप्ता कुल 220 भेद में पाने वाले जीवों में कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उ:- प्रथम पांच पर्याप्तियां पाई जाती है। इनमें 3 विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के जीव भाषक और 101 गर्भज मनुष्य के अपर्याप्ता जीव अभाषक है ।

प्र:-जीव राशि के 563 भेदों में से 212 (101 गर्भज मनुष्य के पर्याप्ता 99 देवता के पर्याप्ता 8 नारकी के पर्याप्ता, संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता) भेदों में 6 पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उ:- 6 पर्याप्तियां पाई जाती है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से एकेन्द्रिय के अपर्याप्ता 11 भेदों में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उ:- 3 बलप्राण झाझेरें पाये जाते है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से एकेन्द्रिय के पर्याप्ता 11 भेदों में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उ:- चार बलप्राण पाये जाते है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से बेइन्द्रिय के अपर्याप्ता 1 भेद में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- 5 बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से बेइन्द्रिय के पर्याप्ता 1 और तेइन्द्रिय के अपर्याप्ता 1 इन 2 भेदों में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- 6 बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से तेइन्द्रिय के पर्याप्ता और चतुरिन्द्रिय के अपर्याप्ता इन दो भेदों में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- 7 बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 319 (चतुरिन्द्रिय के पर्याप्ता, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता संज्ञी के अपर्याप्ता, 101 समुर्च्छिम मनुष्य, 99 देवता, 7 नारकी और 101 गर्भज मनुष्य के अपर्याप्ता) भेदों में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- 8 बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 101 गर्भज मनुष्य के पर्याप्ता, 99 देवता के पर्याप्ता, 7 नारकी के पर्याप्ता, 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता इन 212 भेदों में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- 10 बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 5 असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता में 10 बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- 9 बलप्राण पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 330 भेद (21 एकेन्द्रिय के, 3 विकलेन्द्रिय के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 7, 5 असंज्ञी तिर्यंच अपर्याप्ता और पर्याप्ता 10, 5 संज्ञी तिर्यंच के अपर्याप्ता, 101 समुर्च्छिम मनुष्य के, 101 गर्भज मनुष्य के अपर्याप्ता और 86 जुगलियों के अपर्याप्ता) इन 330 भेदों में 5 शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- 3 शरीर पाये जरते है, औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 212 (198 देवता और 14 नारकी के) भेदों में 5 शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- 3 शरीर पाये जाते है, वैक्रिय, तैजस और कार्मण शरीर ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 6 (5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता, और 1 बादर वायुकाय के पर्याप्ता) भेदों में 5 शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- 4 शरीर पाये जरते है, औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण शरीर ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्ता में 5 शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उ:- 5 शरीर पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 106 (99 देवता के अपर्याप्ता और 6 नारकी के अपर्याप्ता जीवों में) भेदों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 3 योग पाये जरते है, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र और कार्मण काय योग ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 92 (85 देवता और 7 नारकी के पर्याप्ता में) भेदों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 10 योग पाये जाते है 4 मन के, 4 वचन के और 2 काया के (वैक्रिय और वैक्रिय मिश्र योग) ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 14 (9 ग्रैवेयक और 5 अनुत्तर विमान के) भेदों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 9 योग पाये जाते है, 4 मन के, 4 वचन के और 1 काय के (वैक्रिय काय योग) ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 226 (101 समुच्छिंम मनुष्य के, 101 गर्भज मनुष्य के अपर्याप्ता, 24 तिर्यंच के अपर्याप्ता) भेदों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 3 योग पाये जाते है, औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र काय योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 10 एकेन्द्रिय के 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 5 योग काया के पाये जाते हैं (आहारक और आहारक मिश्र काय को छोड़कर)।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 8 (5 असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के और 3 विकलेन्द्रय के) भेदों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 2 योग पाये जाते है, व्यवहार भाषा और औदारिक काय योग ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता भेदों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 12 योग पाये जाते है, 4 मन के, 4 वचन के, 4 काया के (औदारिक काया योग और औदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग और वैक्रिय मिश्र काय योग) ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 1 बादर वायुकाय में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- 4 योग पाये जाते है, औदारिक काय योग और औदारिक मिश्र काय योग, वैक्रिय काय योग और वैक्रिय मिश्र काय योग ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 86 युगलियों में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- 9 योग पाये जाते है, 4 मन के, 4 वचन के और 1काया के (औदारिक काय योग) ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्म भूमिज मनुष्य में 15 योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- 15 योग पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 24 (एकेन्द्रिय के 1 अपर्याप्ता और पर्याप्ता 22, वेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय के पर्याप्ता 2) भेदों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 3 उपयोग पाये जाते है, 2 अज्ञान और एक अचक्षु दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 2 (वेइन्द्रिय और तेइन्द्रिय के अपर्याप्ता) भेदों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 5 उपयोग पाये जाते है, 2 ज्ञान, 2 अज्ञान और 1 दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 61 (चतुरिन्द्रिय के 1, असंज्ञी तिर्यंच के 5, संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय 5 अपर्याप्ता, 30 अकर्मभूमिज मनुष्य के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 60) भेदों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपपयोग पाये जाते हैं, 2ज्ञान, 2 अज्ञान और 2 दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों मे से 219 (चतुरिन्द्रिय 1, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय 5, 101 समुर्च्छिम मनुष्य के, 56 अन्तर्द्वीप के अपर्याप्ता और पर्याप्ता) भेदों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- चार उपयोग पाये जाते हैं, 2 अज्ञान और 2 दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों मे से 20 (5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता और 15 कर्मभूमिज के अपर्याप्ता भेदों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 9 उपयोग पाये जाते है, 3 ज्ञान, 3 अज्ञान और 3 दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्म भूमिज मनुष्य के पर्याप्ता में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 12 उपयोग पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 37 (7 वीं नारकी अपर्याप्ता 1, 15 परमाधामी और 3 किल्विषी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 36) भेदों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 6 उपयोग पाये जाते है 3 अज्ञान और 3 दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 165 (6 नारकी के अपर्याप्ता, 6 नारकी के पर्याप्ता, 76 देवता के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 152) भेदों में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं

से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 9 उपयोग पाये जाते है 3 ज्ञान, 3 अज्ञान और 3 दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 10 भेद 5 अनुत्तर विमान के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 10 में 12 उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- 6 उपयोग पाये जाते है, 3 ज्ञान और 3 दर्शन ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 280 (एकेन्द्रिय के 22, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता 8, 101 समुर्च्छिम मनुष्य के, 56 अन्तर्द्वीप मनुष्य के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 112, 6 वीं नारकी के अपर्याप्ता 1, 15 परमाधामी और 3 किल्विषी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 36) भेदों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 9 मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 8 (5 असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता और 3 विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता 8) भेदों में 14 भेदों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम 2 गुणस्थान पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 10 (5 अनुत्तर विमान के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 10) भेदों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 1 अविरति सम्यक् दृष्टि गुणस्थान पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 1 देशव्रती श्रावक गुणस्थान पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 83 (67 देवता के पर्याप्ता, 7 नारकी के पर्याप्ता) भेदों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम 4 गुणस्थान पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 102 (76 देवता के अपर्याप्ता और 7 नारकी के अपर्याप्ता) भेदों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम 4 गुणस्थान पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 30 अकर्मभूमि के पर्याप्ता में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम 4 गुणस्थान पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 30 अकर्मभूमि के अपर्याप्ता में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 2 गुणस्थान पाये जाते है, मिथ्यात्व और अविरति सम्यक् दृष्टि गुणस्थान ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से कर्मभूमि मनुष्य के 15 भेद पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुंणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- नव गुणस्थान पाये जाते है, छठे गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक के नव ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से पांच स्थावरों के 22 भेद पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय के 8 विषय और 96 विकार पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से वेइन्द्रिय के दो भेद पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय के 13 विषय और 156 विकार पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से तेइन्द्रिय के दो भेद पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय के 15 विषय और 168 विकार पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से चतुरिन्द्रिय के दो भेद पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय इन चार इन्द्रियों के 20 विषय और 228 विकार पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से पांच स्थावर और तीन विकलेन्द्रिय के 28 भेदों को छोड़कर अवशेष 535 भेद पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से पांच अनुत्तर विमान के 10 भेदों को छोड़कर अवशेष 553 भेद पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- दसों भेद मिथ्यात्व के पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से पांच अनुत्तर विमान के 10 भेद पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- एक भी मिथ्यात्व का भेद नहीं पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 553 (पांच अनुत्तर विमान के 10 भेदों को छोड़कर) भेदों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- पांच तत्त्व पाये जाते है जैसे – जीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व और बन्ध तत्त्व ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में नारकी के 13 (सातवीं नारकी की अपर्याप्ता छोड़कर) तिर्यंच के 18, सन्नी तिर्यंच के पर्याप्ता व अपर्याप्ता 10, असन्नी तिर्यंच के 5 और तीन विकलेन्द्रिय के तीन इन आठ का अपर्याप्ता, (मनुष्य के 75 = 15 कर्मभूमि के पर्याप्ता, 30 अकर्मभूमि के पर्याप्ता और अपर्याप्ता कुल 75, देवता के 162 (15 परमाधामी और 3 किल्विषी इन 18 के पर्याप्ता और अपर्याप्ता 36 को छोड़कर) कुल 268 भेदों में कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्मभूमि के पर्याप्ता 15 भेद पाने वाले जीवों में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उः- नव तत्त्व पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 280 (22 एकेन्द्रिय के, 3 विकलेन्द्रिय के पर्याप्ता, 5 असंज्ञी के पर्याप्ता, 1 सातवीं नारकी का अपर्याप्ता, 36 15 परमाधामी और 3 किल्विषी के अर्पाप्ता और पर्याप्ता, 101 समूर्च्छिम मनुष्य के 46 अन्तरद्वीप के अपर्याप्ता और पर्याप्ता) भेदों में 8 आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- 6 आत्मा पाई जाती हैं ज्ञान आत्मा और चारित्र आत्मा को छोड़कर ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 268 (3 विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता, 5 असंज्ञी तिर्यंच के अपर्याप्ता, 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता और पर्याप्ता, 13 नारकी के, 162 देवता के, 75 मनुष्य के) भेदों में 8 आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- 7 आत्मा पाई जाती है चारित्र आत्मा को छोड़कर ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्मभूमि मनुष्य में 8 आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उः- 8 आत्मा पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 14 नारकी के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक नारकी का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 4 पृथ्वीकाय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक पृथ्वीकाय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 4 अप्काय के भेदों में 24 दण्डकों में से

कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक अप्काय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 4 तेउकाय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक तेउकाय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 4 वायुकाय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक वायुकाय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 6 वनस्पतिकाय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक वनस्पति का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 2 बेइन्द्रिय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक बेइन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 2 तेइन्द्रिय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक तेइन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 2 चउरिन्द्रिय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक चउरिन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 20 तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक तिर्यंच पंचेन्द्रिय का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 50 भवनपति देवों के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 10 दण्डक भवनपति का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 52 वाणव्यन्तर देवों के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक वाणव्यन्तर का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 20 ज्योतिषी देवों के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक ज्योतिषी देव का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में 76 (12 वैमानिक देवों के, 9 लौकान्तिक देवों के, 9 ग्रैवेयक देवों के, 5 अनुत्तर विमान देवों के, 3 किल्विषी देवों के,

इन 38 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 76) भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक वैमानिक का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में 303 मनुष्य के भेदों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उः- 1 दण्डक मनुष्य का पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 4 नारकी के (6, 7 वीं नारकी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता में) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 1 कृष्ण लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 2 नारकी के (चौथी (4) नारकी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 1 नील लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 4 नारकी के (1, 2 नारकी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता में) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 1 कापोत लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 26 देवता के (10 ज्योतिषी देवों के, दो वैमानिक 1, 2, देवलोक, 1 किल्विषी देवों के इन 13 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 26) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 1 तेजो लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 26 देवता के (3 वैमानिक, 3, 4, 5, वां देवलोक, 9 लौकान्तिक, 1 किल्विषी इन 13 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 1 पद्म लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 44 देवता के (अन्तिम 7 वैमानिक देव, 9 ग्रैवेयक, 5 अनुत्तर विमान, और 1 किल्विषी इन 22 के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 44) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 1 शुक्ल लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 4 नारकी के (3, 5 वीं नारकी के अपर्याप्ता और पर्याप्ता) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 3 लेश्या पाई जाती है, कृष्ण, नील, और कापोत लेश्या ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 136 (101 समूर्च्छिम मनुष्य के, 35 तिर्यंच के 19 एकेन्द्रिय (पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय के अपर्याप्ता छोड़कर) 6 विकलेन्द्रिय के और 5 असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याता और पर्याप्ता 10) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 3 लेश्या पाई जाती है, कृष्ण, नील, और कापोत लेश्या ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 277 (51 देवता के, 86 युगलियों के अपर्याता और पर्याप्ता 274, पृथ्वी, पानी, वनस्पति के अपर्याप्ता 3 कुल 277) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 4 लेश्या पाई जाती है, कृष्ण, नील, कापोत और तेजो लेश्या ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 40 (15 कर्मभूमि के और 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याता और पर्याप्ता) भेदों में 6 लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?

उः- 6 लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 280 (22 एकेन्द्रिय के, 3 विकलेन्द्रिय के पर्याप्ता, 5 असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता, 1 नारकी के अपर्याप्ता, 101 समूर्च्छिम मनुष्य के, और 56 अन्तरद्वीप मनुष्य के अपर्याता और पर्याप्ता 112 भेदों में 3 दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- 1 मिथ्या दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 5 अनुत्तर विमान के अपर्याता और पर्याप्ता 10 भेदों में 3 दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- 1 सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 170 (प्रथम 6 नारकी के अपर्याप्ता, 13 तिर्यंच, 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 5 असंज्ञी तिर्यंच पंचेनिद्रय, और 3 विकलेन्द्रिय इनके अपर्याप्ता । मनुष्य के 75 - 15 कर्मभूमि अपर्याता, और 30 अकर्मभूमि मनुष्य के अपर्याप्ता और पर्याप्ता 60, देव के 76, 15 परमाधामी, 3 किल्विषी और 5 अनुत्तर विमान इन 23 को छोड़कर 76 देव के अपर्याप्ता) भेदों में 3 दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- 2 दृष्टियां पाई जाती है, सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 103 (नारकी के 6, संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 5, कर्मभूमिज मनुष्य के 15 और 76 देवता के, इन सभी पर्याप्ता) भेदों में 3 दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?

उः- 3 दृष्टियां पाई जाती है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 280 (22 एकेन्द्रिय के, 3 विकलेन्द्रिय के पर्याप्ता, 5 असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता, 1 नारकी के अपर्याप्ता, 101 समूर्च्छिम मनुष्य के, और 56 अन्तद्वीप मनुष्य के अपर्याप्ता और पर्याप्ता में 112 चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- 2 ध्यान पाये जाते है, आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 123 भेद (5 संज्ञी तिर्यंच पर्याप्ता, 7 नारकी

पर्याप्ता, 30 अकर्मभूमि पर्याप्ता, 81 देवता पर्याप्ता) पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम 3 ध्यान पाये जाते है । एक शुक्ल ध्यान को छोड़कर ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्ता में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जो हैं ?

उः- 4 ध्यान पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में 6 द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- 6 द्रव्य पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 20 (15 कर्मभूमिज मनुष्य पर्याप्ता और 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता) भेदों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- 12 व्रत पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से (15 कर्मभूमिज मनुष्य पर्याप्ता, 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता छोड़कर) 543 भेदों में श्रावक के 12 व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्ता में साधुजी के 5 महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- 5 महाव्रत पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से (15 कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्ता छोड़कर) 548 भेदों में साधुजी के 5 महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 20 (15 कर्म भूमि मनुष्य पर्याप्ता, और 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता) भेदों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- 49 भांगे पाये जाते है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से (15 कर्म भूमि मनुष्य के पर्याप्ता और 5 संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता छोड़कर) 543 भेदों में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

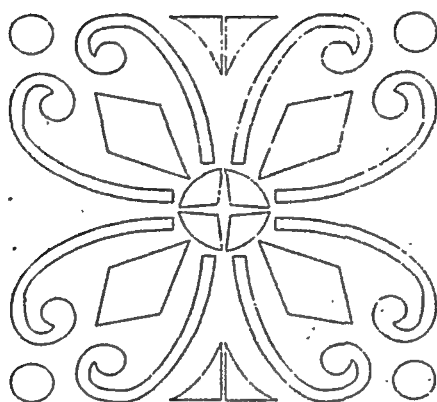
उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है ।

प्रः- जीव राशि के 563 भेदों में से 15 कर्म भूमि मनुष्य पर्याप्ता में 5 चारित्र में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- 5 चारित्र पाये जाते है ।

प्र:- जीव राशि के 563 भेदों में से (15 कर्म भूमि मनुष्य पर्याप्ता छोड़कर) 548 भेदों में 5 चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उ:- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है ।



विचार

यदि अपना मन बदल जाय,
साफ हो जाय तो,
अपने आप ही व्यवहार - बर्ताव
परिवर्तन हो जाएगा और
उसका असर प्रतियक्षी पर देर - सबेर पड़ेगा हीं ।

– सुमति मुनि

व्रत-द्वार

बाईसवें बोले श्रावकजी के बारह व्रत -

1. पहले अहिंसा व्रत में श्रावक जी त्रसजीव को मारे नहीं, मरावे नहीं, मन, वचन, काया से और स्थावर जीवों की मर्यादा करे ।
2. दूसरे सत्य व्रत में श्रावक जी मोटा (स्थूल) झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं मन वचन, काया से ।
3. तीसरे अचौर्य व्रत में श्रावक जी मोटी (स्थूली) चोरी करे नहीं, करावे नहीं मन, वचन, काया से ।
4. चौथे परदार विवर्जन एवं स्वदार संतोष व्रत में श्रावक जी पर स्त्री सेवन का त्याग करे और अपनी स्त्री की मर्यादा करे ।
5. पांचवे परिग्रह परिणाम व्रत में श्रावक जी परिग्रह की मर्यादा करे ।
6. छठे दिशा परिणाम व्रत में श्रावक जी छह (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊंची नीची) दिशा की मर्यादा करे ।
7. उपभोग, परिभोग, परिणाम व्रत में श्रावक जी छब्बीस बोलों की मर्यादा करे और पन्द्रह कर्मादान का त्याग करे ।
8. आठवें अनर्था दण्ड विरमण व्रत में श्रावक जी अनर्थ दण्ड का त्याग करे ।
9. नवें सामायिक व्रत में श्रावक जी प्रतिदिन शुद्ध सामायिक करे । सामायिक का नियम रखे ।
10. दसवें देसावकासिक व्रत में श्रावक जी देसावकासिक पौषध करे, संवर करे, चौदह नियम चितारे ।
11. ग्यारहवें पौषध उपवास व्रत में श्रावक प्रतिपूर्ण पोषध करे ।
12. बाहरवें अतिथि संविभाग व्रत में श्रावक जी प्रतिदिन साधुजी को अनशनादि चौदह प्रकार के निर्दोष वस्तुओं का, उनके आवश्यकतानुसार दान देवे तथा दान देने की भावना रखे ।

प्रः- व्रत किसको कहते हैं ?

उः- मर्यादा में रहने चलने को व्रत कहते हैं ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाये जाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- दो गतियां पाई जाती है जैसे - मनुष्य गति, तिर्यंच गति ।

प्रः- श्रावक के 12 व्रत कौन सी गतियों में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- नारक और देवगति में नहीं पाये जाते है ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाये जाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- श्रावक के 12 व्रत कौन सी जातियों में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम चार जातियों में नहीं पाये जाते है ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाये जाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- श्रावक के 12 व्रत कौन सी काया में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम पांच काया में नहीं पाये जाते है ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाये जाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाये जाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाये जाने वाले जीवों में दस वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों वलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- चार शरीर पाये जाते हैं । 1. औदारिक शरीर 2. वैक्रिय शरीर 3. तेजस शरीर 4. कार्मण शरीर ।

प्रः- श्रावक के 12 व्रत कौन से शरीर में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- एक आहारक शरीर नहीं पाया जाता है ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- बारह योग पाये जाते हैं । जैसे - चार मन के, चार वचन के और चार काया के - औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग और वैक्रिय मिश्र योग ।

प्रः- श्रावक के 12 व्रत में कौन से योग नहीं पाये जाते हैं ?

उः- तीन योग नहीं पाये जाते है । आहारक योग, आहारक मिश्र योग, और कार्मण काय योग ।

प्रः- श्रावक के बारह व्रत पाने वाले जीवों में वारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- छः उपयोग पाये जाते हैं । तीन ज्ञान और तीन दर्शन ।

प्र:- श्रावक के 12 व्रत में कौन से उपयोग नहीं पाये जाते हैं ?
उः- 6 उपयोग नहीं पाये जाते है । दो ज्ञान, 1 मनः पर्यव ज्ञान, 2 केवल ज्ञान, तीन अज्ञान – और एक केवल दर्शन ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते हैं ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- एक पांचवा देश विरति श्रावक गुणस्थान पाया जाता है ।
प्र:- श्रावक के 12 व्रत में कौन से गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं ?
उः- पांचवें गुणस्थान को छोड़कर अवशेष 13 गुणस्थान नहीं पाये जाते है ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- एक भी भेद मिथ्यात्व का नहीं पाया जाता है ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में नवतत्त्व में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं । (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।
प्र:- श्रावक के 12 व्रतधारी में कौन से तत्त्व नहीं पाये जाते हैं ?
उः- एक मोक्ष तत्त्व नहीं पाया जाता है ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?
उः- सात आत्मा पाई जाती है (चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।
प्र:- श्रावक के 12 व्रतधारी में कौन सी आत्मा नहीं पाई जाती हैं ?
उः- एक चारित्र आत्मा नहीं पाई जाती है ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में चौबीस दण्डक में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- दो दण्डक पाये जाते हैं । जैसे तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक ।
प्र:- श्रावक के 12 व्रतधारी में कौन से दण्डक नहीं पाये जाते हैं ?
उः- तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य के दो दण्डकों को छोड़कर 22 दण्डक नहीं पाये जाते है ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?
उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।
प्र:- बारह व्रतधारी श्रावक में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।
प्र:- श्रावक के 12 व्रतधारी में कौनसी दृष्टियां नहीं पाई जाती हैं ?
उः- सम्यग् दृष्टि को छोड़कर दो दृष्टियां नहीं पाई जाती है ।

प्रः- बारह व्रतधारी श्रावक में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते है । जैसे - (1) आर्त्तध्यान (2) रौद्रध्यान (3) धर्मध्यान ।

प्रः- श्रावक के 12 व्रतधारी में कौन से ध्यान नहीं पाये जाते हैं ?

उः- एक शुक्ल ध्यान नहीं पाया जाता है ।

प्रः- बारह व्रतधारी श्रावक में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते है ।

प्रः- बारह व्रतधारी श्रावक में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- बीस भेद पाये जाते हैं। जैसे - सन्नी पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता पांच (5) और 15 कर्मभूमिज के पर्याप्ता 15 भेद कुल बीस (20) भेद हुए ।

प्रः- श्रावक के 12 व्रतधारी में जीव राशि के 563 भेदों में से कौन से भेद नहीं पाये जाते हैं ?

उः- 543 भेद पाये जाते है । (संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 5 पर्याप्ता और 15 कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्ता 20 भेदों को छोड़कर) ।

प्रः- बारह व्रतधारी श्रावक में अजीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ सत्तावन (557) भेद पाये जाते हैं । (धर्मा., अधर्मा., आकाशा. के तीन स्कंधों को छोड़कर) ।

प्रः- बारह व्रतधारी श्रावक में साधुजी के पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत जाते हैं ?

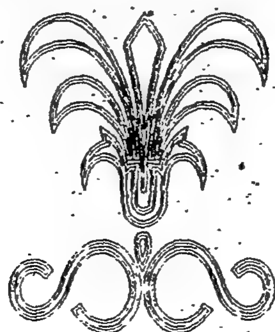
उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- बारह व्रतधारी श्रावक में 49 भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- गुणपचास (49) भांगे पाये जाते हैं ।

प्रः- बारह व्रतधारी श्रावक में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांच चारित्रों में से एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है। किन्तु देश विरति चारित्र पाया गया है । उपरोक्त पांचों चारित्र सर्वविरति में ही पाये जाते हैं ।



महाव्रत-द्वार

तेइसवें बोले - साधुजी के पांच महाव्रत ।

पहले - अहिंसा व्रत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकार से किसी भी जीव की हिंसा करे नहीं, करावे नहीं, करते हुए को भला जाने नहीं मन, वचन, काया से (तीन करण तीन योग से) ।

दूसरे - महाव्रत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकार से झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलते हुए को भला जाने नहीं । मन, वचन, काया से (तीन करण तीन योग से) ।

तीसरे - महाव्रत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकार से चोरी करे नहीं, करावे नहीं, चोरी करते हुए को भला जाने नहीं । मन, वचन, काया से (तीन करण तीन योग से) ।

चौथे - अब्रह्मचर्य महाव्रत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकार से मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवते हुए को भला जाने नहीं । मन, वचन, काया से (तीन करण तीन योग से) ।

पांचवें अपरिग्रह महाव्रत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकार से परिग्रह रखे नहीं, रखावे नहीं, रखते हुए को भला जाने नहीं मन, वचन, काया से (तीन करण तीन योग से) ।

प्रः- महाव्रत किसे कहते हैं ?

उः- सर्व विरति अर्थात् सम्पूर्ण रीति से हिंसा, असत्य, चोरी, कुशील और परिग्रह का त्याग करने को महाव्रत कहते हैं ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- पांच महाव्रत किस गतियों में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- नरक, तिर्यंच और देवगति में नहीं पाये जाते है ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- पांच महाव्रत किस जातियों में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम चार जातियों में नहीं पाये जाते है ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- पांच महाव्रत किस काया में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम पांच काया में नहीं पाये जाते है ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में दस वलप्राणों में से कितने वलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों वलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते है । संयति की अपेक्षा से ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में पन्द्रह (15) योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- चौदह (14) योग पाये जाते है । (कार्मण काय योग को छोड़कर) केवली भगवन्त जब केवली समुद्घात करते हैं उस समय कार्मण काय योग भी पाया जाता है उस अपेक्षा से पन्द्रह (15) योग भी पाये जाते हैं ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में वारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- नव उपयोग पाये जाते हैं (तीन अज्ञान को छोड़कर) ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते है ।

प्रः- पांच महाव्रत किस उपयोगों में नहीं पाये जाते हैं ?

उः- तीन अज्ञान उपयोगों में नहीं पाये जाते है ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में चौदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- नव गुणस्थान पाये जाते हैं । (पहले के पांच गुणस्थानों को छोंड़कर) ।

प्रः- पांच महाव्रत धारी में कौन से गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं ?

उः- प्रथम पांच गुणस्थान नहीं पाये जाते है ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?

उ:- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते है ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उ:- एक भी भेद मिथ्यात्व का नहीं पाया जाता है ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में नव तत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?

उ:- आठ तत्त्व पाये जाते है । (पाप तत्त्व को छोड़कर) ।

प्र:- पांच महाव्रत धारी में कौन से तत्त्व नहीं पाये जाते हैं ?

उ:- एक पाप तत्त्व नहीं पाया जाता है ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती है ?

उ:- आठों आत्मा पाई जाती है ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में चौवीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?

उ:- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है ।

प्र:- पांच महाव्रत धारी में कौन से दण्डक नहीं पाये जाते हैं ?

उ:- मनुष्य का एक दण्डक छोड़कर 23 दण्डकों में पांच महाव्रत नहीं पाये जाते है।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ।

उ:- छहों लेश्या पाई जाती है ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ।

उ:- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।

प्र:- पांच महाव्रत धारी में कौन सी दृष्टियां नहीं पाई जाती हैं ?

उ:- मिथ्यादृष्टि और मिश्र दृष्टि नहीं पाई जाती हैं ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उ:- तीन ध्यान पाये जाते हैं । जैसे – आर्त्तध्यान, धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान ।

प्र:- पांच महाव्रत धारी में कौन से ध्याान नहीं पाये जाते हैं ?

उ:- एक रौद्रध्यान नहीं पाया जाता है ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उ:- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्र:- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों

से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 15 भेद कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच महाव्रत धारी में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद नहीं पाये जाते हैं ?

उः- 15 कर्मभूमि के 15 भेदों को छोड़कर 548 भेद नहीं पाये जाते हैं ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ सत्तावन (557) भेद पाये जाते हैं ।(धर्मा., अधर्मा., आकाशा. के तीन स्कंधों को छोड़कर) ।

प्रः- पांच महाव्रत धारी में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद नहीं पाये जाते हैं ?

उः- 560 भेदों में से धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय के तीन भेद नहीं पाये जाते हैं ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में श्रावक के वारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

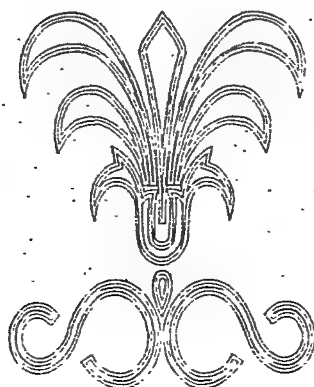
उः- एक भी व्रत श्रावक का नहीं पाया जाता है ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में गुणपचास भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है । भांगे देशविरति में पाये जाते हैं ।

प्रः- साधुजी के पांच महाव्रत पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- पांचों चारित्र पाये जाते हैं ।



भांगा-द्वार

चौवीस वोले - भांगा 49

11 अंक एक ग्यारह को भांगा उपजे 9 - एक क़रण एक योग से कहना - 1. करूं नहीं मनसा, 2. करूं नहीं वयसा, 3. क़रूं नहीं कायसा, 4. कराऊं नही मनसा, 5. कराऊं नहीं वयसा, कराऊं नहीं कायसा, 6. अनुमोदूं नहीं मनसा, 7. अनुमोदूं नहीं वयसा, 8. अनुमोदूं नहीं कायसा ।

12 अंक एक 12 को भांगे उपजे 9 - एक करण दो योग से कहना - 1. करूं नहीं मनसा वयसा, 2. करूं नहीं मनसा कायसा, 3. करूं नहीं वयसा कायसा, 4. कराऊं नही मनसा वयसा, 5. कराऊं नहीं मनसा कायसा, 6. कराऊं नहीं वयसा कायसा, 7. अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा, 8. अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, 9. अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ।

13 अंक एक तेरह को भांगा उपजे नव - एक करण तीन योग से कहना - 1. करूं नहीं मनसा, वयसा, कायसा, 2. कराऊं नही मनसा, वयसा, कायसा, 3. अनुमोदूं नहीं मनसा, वयसा, कायसा ।

21 अंक एक इक्कीस को भांगा उपजे 9 - दो करण एक योग से कहना - 1. करूं नहीं कराऊं नही मनसा, 2. करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा, 3. करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, 4. करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, 5. करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा, 6. करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा, 7. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, 8. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा, 9. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ।

22 अंक एक बाईस को भांगा उपजे 9 - दो करण दो योग से कहना 1. करूं नहीं कराऊं नही मनसा वयसा, 2. करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा कायसा, 3. करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा, 4. करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा, 5. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा, 9. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा, कायसा ।

23 अंक एक तेईस को भंगा उपजे तीन - दो करण तीन योग से कहना - 1. करूं नहीं कराऊं नही मनसा, वयसा, कायसा, 2. करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, वयसा, कायसा, 3. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, वयसा, कायसा ।

31 अंक एक इक्तीस को भांगा उपजे तीन - तीन करण एक योग से कहना - 1. करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं मनसा, 2. करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं वयसा, 3. करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं कायसा ।

32 अंक एक बत्तीस को भांगा उपजे 3 तीन करण दो योग से कहना - 1. करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं मनसा, वयसा, 2. करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं मनसा, कायसा, 3. करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं वयसा, का

33 आंक एक तेतीस को भांगा उपजे एक - तीन करण तीन योग से कहना - 1. करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, वयसा, कायसा।

प्र:- भंग किसको कहते हैं ?

उ:- विभाग रूप रचना को भंग कहते है।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उ:- दो गतियां पाई जाती है। जैसे - तिर्यंचगति, मनुष्यगति।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में चार जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उ:- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है। तिर्यंच और मनुष्य की अपेक्षा से।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उ:- एक त्रसकाय पाई जाती है। संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य की अपेक्षा से।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उ:- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उ:- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उ:- दसों बलप्राण पाये जाते है।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उ:- चार शरीर पाये जाते है। जैसे - औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीर। देशविरित की अपेक्षा से।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगो में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उ:- बारह योग पाये जाते हैं जैसे - चार मन के, चार वचन के, चार काया के, (औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग और वैक्रिय मिश्र योग)।

प्र:- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में बारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उ:- छः उपयोग पाये जाते हैं जैसे - पहले के तीन ज्ञान और तीन दर्शन।

प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में आठों कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?
उः- आठों कर्म पाये जाते है ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में 14 गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- एक पांचवां गुणस्थान पाये जाते है ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं ?
उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते है ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- एक भी भेद मिथ्यात्व का नहीं पाया जाता है ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में नवतत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं ?
उः- आठ तत्त्व पाये जाते है । (मोक्ष तत्त्व को छोड़कर) ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में आठ आत्मा में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं ?
उः- सात आत्मा पाई जाती है (चारित्र आत्मा को छोड़कर) ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में 24 दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं ?
उः- दो दण्डक पाये जाते हैं जैसे - (तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक और मनुष्य का एक दण्डक) ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं ?
उः- छहों लेश्या पाई जाती है ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियों में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं ?
उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?
उः- तीन ध्यान पाये जाते है । जैसे - आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?
उः- छहों द्रव्य पाये जाते है ।
प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?
उः- 20 भेद पाये जाते है । जैसे - सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्ता पांच (5) और कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता 15 भेद, कुल 20 भेद हुए ।

प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ सत्तावन भेद पाये जाते है । जैसे - धर्मा., अधर्मा., आकाशा: के तीन स्कन्धों को छोड़कर ।

प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में श्रावक के बारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

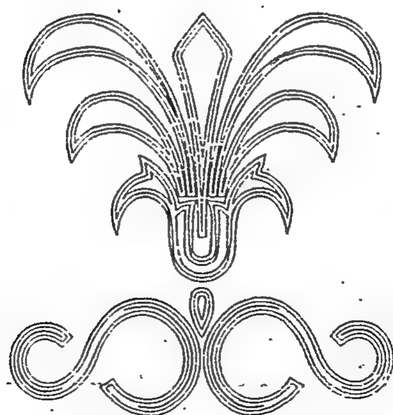
उः- बारह ही व्रत पाये जाते है ।

प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी महाव्रत नहीं पाया जाता है ।

प्रः- भांगा गुणपचास पाने वाले जीवों में पांच चारित्रों में से कितने चारित्र पाये जाते हैं ?

उः- एक भी चारित्र नहीं पाया जाता है । क्योंकि पांचों चारित्र सर्वविरति में पाये जाते हैं जबकि बारह व्रत देशविरति में पाये जाते हैं ।



चारित्र द्वार

पच्चीसवें बोले चारित्र पांच - 1. सामायिक चारित्र, 2. छेदोपस्थापनीय चारित्र 3. परिहार विशुद्धि चारित्र 4. सूक्ष्म सम्पराय चारित्र 5. यथाख्यात चारित्र ।

प्रः- चारित्र किसे कहते हैं ?

उः- चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से उत्पन्न हुए विरति परिणामों को तथा संयम - अनुष्ठान को अथवा जो आठ कर्मों को चरे (नाश करे) उसको चारित्र कहते हैं ?

प्रः- पांच चारित्र पाने वाले जीवों में चार गतियों में से कितनी गतियां पाई जाती हैं ?

उः- एक मनुष्य गति पाई जाती है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में पांच जातियों में से कितनी जातियां पाई जाती हैं ?

उः- एक पंचेन्द्रिय जाति पाई जाती है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में छः काया में से कितनी काया पाई जाती हैं ?

उः- एक त्रसकाय पाई जाती है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों में से कितनी इन्द्रियां पाई जाती हैं ?

उः- पांचों इन्द्रियां पाई जाती है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में छः पर्याप्तियों में से कितनी पर्याप्तियां पाई जाती हैं ?

उः- छहों पर्याप्तियां पाई जाती है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में दस बलप्राणों में से कितने बलप्राण पाये जाते हैं ?

उः- दसों बलप्राण पाये जाते हैं ।

प्रः- सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र इन दो चारित्र पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में से कितने शरीर पाये जाते है ?

उः- पांचों शरीर पाये जाते हैं ।

प्रः- परिहार विशुद्धि सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ओर यथाख्यात चारित्र इन तीन पाने वाले जीवों में पांच शरीरों में कितने शरीर पाये जाते हैं ?

उः- तीन शरीर पाये जाते हैं । जैसे - औदारिक शरीर, तेजस शरीर शरीर ।

प्रः- सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र पाने वाले जीवों में से कितने योग पाये जाते है ?

उः- चौदह योग पाये जाते हैं। (कार्मण काय योग को छोड़कर)।

प्रः- परिहार विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्म सम्पराय चारित्र और यथाख्यात चारित्र इन तीन चारित्र पाने वाले जीवों में पन्द्रह योगों में से कितने योग पाये जाते हैं ?

उः- नव योग पाये जाते हैं। जैसे - चार मन के, चार वचन के और एक काया का (औदारिक योग)।

प्रः- सामायिक चारित्र, छेदोस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्ध चारित्र और सूक्ष्म सम्पराय चारित्र इन चार चारित्र पाने वाले जीवों में बारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- सात उपयोग पाये जाते हैं। जैसे - पहले के चार ज्ञान और तीन दर्शन।

प्रः- यथाख्यान चारित्र पाने वाले जीवों में बारह उपयोगों में से कितने उपयोग पाये जाते हैं ?

उः- नव योग पाये जाते हैं। जैसे -पांच ज्ञान और चार दर्शन।

प्रः- सामायिक चारित्र, छेदोस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्ध चारित्र और सूक्ष्म सम्पराय चारित्र इन चार चारित्र पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठों कर्म पाये जाते हैं।

प्रः- यथाख्यान चारित्र पाने वाले जीवों में आठ कर्मों में से कितने कर्म पाये जाते हैं ?

उः- आठ, सात और चार कर्म अलग -2 रूप से पाये जाते हैं। आठ कर्म ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती जीवों में बंध उदय की अपेक्षा नहीं, किन्तु सता की अपेक्षा से आठों कर्म पाये जाते हैं। सात कर्म (मोहनीय कर्म को छोड़कर) बारहवें गुणस्थान की अपेक्षा से पाये जाते हैं और चार अघाती कर्म तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा से पाया जाता हैं।

प्रः- परिहार विशुद्धि चारित्र पाने वाले जीवों में चौदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- दो गुणस्थान पाये जाते है। जैसे छठा ओर सातवां दो गुणस्थान।

प्रः- सामायिक चारित्र, छेदोस्थापनीय चारित्र इन दो चारित्र पाने वाले जीवों में चवदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- चार गुणस्थान पाये जाते हैं। जैसे - छठा, सातवां, आठवां और नौवां गुणस्थान।

प्रः- सूक्ष्म सम्पराय चारित्र पाने वाले जीवों में चोदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- एक दसवां सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान पाया जाता है।

प्रः- यथाख्यात चारित्र पाने वाले जीवों मे चवदह गुणस्थानों में से कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- चार गुणस्थान पाये जाते हैं। जैसे - ग्यारहवां, बारहवां, तेरहवां और चौदहवां गुणस्थान।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में पांच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकारों में से कितने विषय और विकार पाये जाते हैं?

उः- 23 विषय और 240 विकार पाये जाते हैं।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में मिथ्यात्व के दस भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं?

उः- मिथ्यात्व का एक भी भेद नहीं पाया जाता है।

प्रः- सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्धि चारित्र और सूक्ष्म सम्पराय चारित्र इन चार चारित्र पाने वाले जीवों में नवतत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं?

उः- सात तत्त्व पाये जाते है। (पापतत्त्व और मोक्षतत्त्व को छोड़कर)।

प्रः- यथाख्यात चारित्र पाने वाले जीवों में नवतत्त्वों में से कितने तत्त्व पाये जाते हैं?

उः- आठ तत्त्व पाये जाते हैं। (पाप तत्त्व को छोड़कर)।

प्रः- सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्धि चारित्र और सूक्ष्म सम्पराय चारित्र इन चार चारित्र पाने वाले जीवों में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं?

उः- आठों आत्मा पाई जाती है।

प्रः- यथाख्यात चारित्र पाने वाले जीवों में आठ आत्माओं में से कितनी आत्मा पाई जाती हैं?

उः- सात आत्मा पाई जाती है।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डक पाये जाते हैं?

उः- एक दण्डक मनुष्य का पाया जाता है।

प्रः- परिहार विशुद्धि चारित्र पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं?

उः- तीन लेश्या पाई जाती है। जैसे - तेजो लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्ल लेश्या।

प्रः- सामायिक चारित्र और छेदोपस्थापनीय चारित्र इन दो चारित्र पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं?

उः- छहों लेश्या पाई जाती है।

प्रः- सूक्ष्म सम्पराय चारित्र और यथारूयात चारित्र इन दो चारित्र पाने वाले जीवों में छः लेश्या में से कितनी लेश्या पाई जाती हैं?

उः- एक शुक्ल लेश्या पाई जाती है।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में तीन दृष्टियां में से कितनी दृष्टियां पाई जाती हैं?

उः- एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- सामायिक चारित्र और छेदोपस्थापनीय चारित्र इन दो चारित्र पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- तीन ध्यान पाये जाते हैं । जैसे - आर्त्तध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान ।

प्रः- परिहार विशुद्धि चारित्र पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- दो ध्यान पाये जाते हैं । आर्त्तध्यान और धर्मध्यान ।

प्रः- सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात चारित्र इन दो चारित्र पाने वाले जीवों में चार ध्यानों में से कितने ध्यान पाये जाते हैं ?

उः- एक शुक्ल ध्यान पाया जाता है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में छः द्रव्यों में से कितने द्रव्य पाये जाते हैं ?

उः- छहों द्रव्य पाये जाते हैं ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ गुणसाठ भेद पाये जाते हैं केवली समुद्रघात की अपेक्षा से ।

प्रः- परिहार विशुद्धि चारित्र और छेदोपस्थापनीय चारित्र को छोड़कर अवशेष तीन चारित्र पाने वाले जीवों में जीव राशि के 563 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- 25 भेद कर्मभूमिज मनुष्य का पाया जाता है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में अजीव राशि के 560 भेदों में से कितने भेद पाये जाते हैं ?

उः- पांच सौ सत्तावन (557) भेद पाये जाते हैं । (धर्मा., अधर्मा., आकाश. के तीन स्कन्धों को छोड़कर) ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में श्रावक के बारह व्रतों में से कितने व्रत पाये जाते हैं ?

उः- एक भी व्रत श्रावक का नहीं पाया जाता है ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में पांच महाव्रतों में से कितने महाव्रत पाये जाते हैं ?

उः- पांचों महाव्रत पाये जाते हैं ।

प्रः- पांचों चारित्र पाने वाले जीवों में गुणपचास भांगों में से कितने भांगे पाये जाते हैं ?

उः- एक भी भांगा नहीं पाया जाता है । भांगा श्रावक में ही पाया जाता है । साधु में नहीं ।

परिशिष्ट

कहां कितनी गतियां

प्रः- एक गति किनमें पाई जाती हैं ?
उः- साधु मुनिराजों में या मनुष्य में ।
प्रः- दो गतियां किनमें पाई जाती हैं ?
उः- श्रावक में (तिर्यंचगति ओर मनुष्यगति की अपेक्षा) ।
प्रः- तीन गतियां किनमें पाई जाती हैं ?
उः- पुरुषवेद में (नरकगति को छोड़कर) और नपुंसक में (देवगति को छोड़कर) ।
प्रः- चार गतियां किनमें पाई जाती हैं ?
उः- नीचे लोक में (अधोलोक की अपेक्षा) और समुच्चय जीवों में ।

कहां कितनी जातियां

प्रः- एक जाति कहां पाई जाती हैं ?
उः- स्थावर में (एकेन्द्रिय) ।
प्रः- दो जातियां कहां पाई जाती हैं ?
उः- वैक्रिय शरीर में (एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से) ।
प्रः- तीन जातियां कहां पाई जाती हैं ?
उः- तीन विकलेन्द्रियों में (प्रथम ओर अन्तिम जाति को छोड़कर) ।
प्रः- चार जातियां कहां पाई जाती हैं ?
उः- त्रसकाय में (एकेन्द्रिय जाति को छोड़कर) ।
प्रः- पांच जातियां कहां पाई जाती हैं ?
उः- तिर्यंच में (सभी पांचों) एवं समुच्चय जीवों में ।

कहां कितनी काया

प्रः- एक काया किनमें पाई जाती है ?
उः- साधु मुनिराज में (त्रसकाय में) ।
प्रः- दो काया किनमें पाई जाती है ?
उः- वैक्रिय शरीर में (वायुकाय और त्रसकाय) ।
प्रः- तीन काया किनमें पाई जाती है ?
उः- तेजो लेश्या एकेन्द्रिय में (पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय एवं त्रसकाय) ।
प्रः- पांच काया किनमें पाई जाती है ?
उः- स्थावर में (त्रसकाय को छोड़कर) ।
प्रः- छः काया किनमें पाई जाती है ?
उः- तिर्यंच में एवं समुच्चय जीवों में ।

कहां कितनी इन्द्रियां

प्रः- एक इन्द्रिय किनमें पाई जाती हैं ?
उः- पांच स्थावर में (एकेन्द्रिय) ।
प्रः- दो इन्द्रियां किनमें पाई जाती हैं ?
उः- लट आदि बेइन्द्रिय में (स्पर्शनेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय) ।
प्रः- तीन इन्द्रिय किनमें पाई जाती हैं ?
उः- कीड़ी - मकोड़ी आदि तेइन्द्रिय जीवों में (स्पर्श, रसने एवं घ्राणेन्द्रिय) ।
प्रः- चार इन्द्रिय किनमें पाई जाती हैं ?
उः- मक्खी - मच्छर आदि चतुरन्द्रिय जीवों में (श्रोत्रेन्द्रिय को छोड़कर) ।
प्रः- पांच इन्द्रिय किनमें पाई जाती हैं ?
उः- मनुष्य आदि पंचेन्द्रिय जीवों में एवं समुच्चय जीवों में ।

कहां कितनी पर्याप्तियां

प्रः- एक पर्याप्ति किनमें पाई जाती है ?
उः- जन्म यानि उत्पति के प्रथम समय में (आहार पर्याप्ति) ।
प्रः- दो पर्याप्तियां किनमें पाई जाती है ?
उः- इन्द्रिय पर्याप्ति के अलद्धिया में (आहार पर्याप्ति एवं शरीर पर्याप्ति) ।
प्रः- तीन पर्याप्तियां किनमें पाई जाती है ?
उः- एकेन्द्रिय के अपर्याप्ता में (प्रथम तीन पर्याप्तियां) ।
प्रः- चार पर्याप्तियां किनमें पाई जाती है ?
उः- एकेन्द्रिय में (प्रथम चार पर्याप्तियां) ।
प्रः- पांच पर्याप्तियां किनमें पाई जाती है ?
उः- विकलेन्द्रिय में (मन पर्याप्ति को छोड़कर) ।
प्रः- छः पर्याप्तियां किनमें पाई जाती है ?
उः- संज्ञी जीवों में ।

कहां कितने प्राण

प्रः- एक बलप्राण किनमें पाया जाता है ?
उः- चवदवें गुणस्थान में एक आयुष्य बलप्राण ।
प्रः- दो बलप्राण किनमें पाये जाते है ?
उः- वाटे वहते जीवों में, आयूष्य बलप्राण एवं काया बलप्राण ।

नोट :- वाटे वहते जीव उसे कहते है जो वर्तमान शरीर को त्याग कर जब तक दूसरे शरीर को यानि दूसरे स्थान पर उत्पन्न नहीं हो जाए उस अवस्था विशेष (विग्रहगति) को वाटे वहते जीव कहते हैं ।

प्रः- तीन वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- अपर्याप्ता एकेन्द्रिय में आयुष्य, स्पशनेन्द्रिय और काया वलप्राण ।

प्रः- चार वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- एकेन्द्रिय में स्पर्शनेन्द्रिय, काया, श्वासोच्छावास एवं आयुष्य बलप्राण ।

प्रः- पांच वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- तेरहवां गुणस्थान सयोगी केवली में मन, वचन, काया, श्वासोच्छवास एवं आयुष्य।

प्रः- छः वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- वेइन्द्रिय में, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, वचन, काया, श्वासोच्छवास एवं आयुष्य वलप्रण।

प्रः- सात वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- तेइन्द्रिय में (उपरोक्त छः और एक घ्राणेन्द्रिय वलप्राण) ।

प्रः- आठ वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- चतुरिन्द्रिय में (उपरोक्त सात एवं एक चक्षुइन्द्रिय वलप्राण) ।

प्रः- नव वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में (उपरोक्त आठ और एक श्रोत्रेन्द्रिय वलप्राण) ।

प्रः- दस वलप्राण किनमें पाये जाते है ?

उः- संज्ञी पंचेन्द्रिय में ।

कहां कितने शरीर

प्रः- एक शरीर किनमें पाया जाता है ?

उः- चऊस्पर्शी जीवों में - कार्मण शरीर ।

प्रः- दो शरीर किनमें पाये जाते है ?

उः- वाटे वहते जीव में - तैजस शरीर एवं कार्मण शरीर ।

प्रः- तीन शरीर किनमें पाये जाते है ?

उः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय और वनस्पतिकाय में - (तैजस शरीर, कार्मण और औदारिक शरीर)

प्रः- चार शरीर किनमें पाये जाते है ?

उः- वायुकाय में (उपरोक्त तीन शरीर ओर एक वैक्रिय शरीर) ।

प्रः- पांच शरीर किनमें पाये जाते है ?

उः- मनुष्य में ।

कहां कितने योग

प्रः- एक योग किनमें पाया जाता है ?

उः- वाटे वहते जीवों में - कार्मण काय योग एवं दीखते हुए ध्यान में औदारिक काय योग ।

प्रः- दो योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- बेइन्द्रिय के पर्याप्ता में अथवा पर्याप्ता मक्खी में, औदारिक योग और व्यवहार भाषा योग ।

प्रः- तीन योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वनस्पतिकाय के अपर्याप्ता में (औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग) ।

प्रः- चार योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- समुच्चय विकलेन्द्रिय में (उपरोक्त तीन और एक व्यवहार भाषा) ।

प्रः- पांच योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- वायुकाय में - औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- छः योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- केवली समुद्घात के तीसरे, चौथे, पांचवे समय को छोड़कर केवली में तथा असंज्ञी में, पांच वायुकाय की अपेक्षा ओर व्यवहार भाषा विकलेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा ।

प्रः- सात योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- केवली में - सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग और कार्मण काय योग ।

प्रः- आठ योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- मौन आर्या में - चार मन के, चार काया के, (औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग) या नौ पंचेन्द्रिय आहारक में - सत्य मनोयोग, व्यवहार मनोयोग, सत्य वचन योग, व्यवहार वचन योग, औदारिक योग, औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग, वैक्रिय मिश्र योग और तीसरे गुणस्थान में, नियमा चार मन के, चार वचन के ।

प्रः- नव योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- आठवें गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक में एवं परिहार विशुद्धि चारित्र की अपेक्षा भी नव योग ।

प्रः- दस योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- तीसरे गुणस्थानवर्ती जीवों में अर्थात मिश्र गुणस्थान में (चार मन के, चार वचन के, दो काया के - औदारिक काय योग, वैक्रिय काय योग) ।

प्रः- ग्यारह योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- नारकी और देवों में - चार मन के, चार वचन के, तीन काया के (वैक्रिय काय योग, वैक्रिय मिश्र योग और कार्मण काय योग) ।

प्रः- बारह योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- श्रावक में - चार मन के, चार वचन के, चार काया के (औदारिक योग,

औदारिक मिश्र योग, वैक्रिय योग और वैक्रिय मिश्र योग)।

प्रः- तेरह योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- तिर्यंच में - चार मन के, चार वचन के, पांच काया के (आहारक योग, आहारक मिश्र योग को छोड़कर)।

प्रः- चवदह योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- प्रमत्त संयति में एवं मनोयोगी में (कार्मण काय योग को छोड़कर)।

प्रः- पन्द्रह योग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- समुच्चय मनुष्य में ।

कहां कितने उपयोग

प्रः- एक उपयोग किनमें पाया जाता हैं ?

उः- वाटे बहते सिद्ध में (केवलज्ञान)।

प्रः- दो उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- केवली में (केवल ज्ञान और केवल दर्शन)।

प्रः- तीन उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- एकेन्द्रिय में - मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान और अचक्षु दर्शन ।

प्रः- चार उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- सम्मूर्च्छिम मनुष्य में या चतुरिन्द्रिय पर्याप्ता में (उपरोक्त तीन और एक अचक्षु दर्शन) और दसवें गुणस्थान में चार ज्ञान उपयोग पाये जाते हैं, केवलज्ञान को छोड़कर ।

प्रः- पांच उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- समुच्चय बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय में (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान और अचक्षु दर्शन)।

प्रः- छः उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- चतुरिन्द्रिय में - असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में (पहले के दो ज्ञान, दो अज्ञान और दो दर्शन) मिथ्यात्व में भी छः उपयोग - प्रथम तीन अज्ञान और तीन दर्शन ।

प्रः- सात उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- अप्रमत्त संयति में अर्थात् मनः पर्यव ज्ञानी में (प्रथम के चार ज्ञान और तीन दर्शन और छठे से बारहवें गुणस्थान तक के सात गुणस्थानों में भी)।

प्रः- आठ उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- अचरम में - तीन अज्ञान, चार दर्शन और एक केवल ज्ञान ।

प्रः- नव उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?

उः- नारकी और देवता में - प्रथम तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन ।

प्रः- दस उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?
उः- सकषाई में, सवेद में और छद्मस्थ में (केवल ज्ञान और केवल दर्शन को छोड़कर) ।
प्रः- ग्यारह उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अभाषक में (मनः पर्यवः ज्ञान को छोड़कर) ।
प्रः- बारह उपयोग किनमें पाये जाते हैं ?
उः- समुच्चय मनुष्य में ।

कहां कितने कर्म

प्रः- एक कर्म किनमें पाया जाता हैं ?
उः- (क्षीण कषाई) यथाख्यात चारित्र वाले एक साता वेदनीय कर्म बांधते हैं ।
प्रः- दो कर्म किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अप्रमादी की अनुदीरणा में और सूक्ष्म सम्पराय चारित्र के अबंधक में ।
प्रः- दो कर्म कहां नहीं बांधे जाते हैं ?
उः- दसवें गुणस्थान में आयुष्य और मोहनीय कर्म नहीं बांधे जाते हैं ।
प्रः- तीन कर्म की कहां उदीरणा नहीं होती हैं ?
उः- उपाशांत मोहनीय गुणस्थान में - जीव वेदनीय, आयु और मोहनीय कर्म की उदीरणा नहीं करते हैं ।
प्रः- चार कर्म किनमें पाये जाते हैं ?
उः- केवली में - (वेदनीय, आयु, नाम और गौत्र कर्म) ।
प्रः- पांच कर्म कहां उदीरे जाते हैं ?
उः- ग्यारहवें गुणस्थान में जीव पांच कर्मों को उदीरे (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम गोत्र और अन्तराय) ।
प्रः- छः कर्म कहां पर बांधे जाते हैं ?
उः- दसवें गुणस्थान में जीव छः कर्मों को बांधते हैं (आयु और मोहनीय कर्म को छोड़कर) ।
प्रः- सात कर्मो का उदय कहां पर होता हैं ?
उः- बारहवें गुणस्थान में -सात कर्मों का उदय होता है, (मोहनीय कर्म को छोड़कर)।
प्रः- आठ कर्मो का उदय कहां पर होता हैं ?
उः- प्रथम गुणस्थान से लेकर ग्यारहवें गुणस्थान तक, आठ कर्मों का उदय है ।

कहां कितने गुणस्थान

प्रः- एक गुणस्थान किनमें पाया जाता है ? वह कौन - सा ?
उः- अभवी में और एकेन्द्रिय में - एक मिथ्यात्व गुणस्थान पाया जाता है ।
प्रः- दो गुणस्थान किनमें पाये जाते है ?

उः- केवली में (संयोगी केवली और अयोगी केवली) और वेइन्द्रिय में (मिथ्यात्व और सास्वादन गुणस्थान) पाये जाते हैं ।

प्रः- तीन गुणस्थान किनमें पाये जाते है ?

उः- वाटे वहते जीव में और अपर्याप्ता में - मिथ्यात्व, सास्वादन और अविरति सम्यक् द्दष्टि गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- चार गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?

उः- देवता और नारकी में - प्रथम चार गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- पांच गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं वें कौन - से ?

उः- तिर्यंच में - प्रथम पांच गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- छः गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं वें कौन - से ?

उः- प्रमादी में - प्रथम छः गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- सात गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं वें कौन - से ?

उः- तेजो लेश्या, पद्म लेश्या में - प्रथम सात गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- आठ गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं, वें कौन - से ?

उः- अप्रमादी में - सातवें गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक के अन्तिम सात गुणस्थान ।

प्रः- नव गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं, वें कौन - से ?

उः- सवेदी में प्रथम नव गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- दस गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं, वें कौन - से ?

उः- सकषाई में, प्रथम दस गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- ग्यारह गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं, वें कौन - से ?

उः- क्षायिक सम्यक् द्दष्टि में अविरति सम्यक् द्दष्टि गुणस्थान से लेकर अयोगी केवली गुणस्थान तक के ग्यारह गुणस्थान और चक्षुदर्शन में भी दसवां, तेरहवां और चौदहवां इन तीन गुणस्थानों को छोड़कर ग्यारह गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- बारह गुणस्थान किनमें पायें जाते हैं ?

उः- छद्‌मस्थ में, प्रथम बारह गुणस्थान पाये जाते हैं और सम्यत्वी में मिथ्यात्व और मिश्र गुणस्थान को छोड़कर बारह गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- तेरह गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?

उः- सयोगी में, प्रथम तेरह गुणस्थान (अयोगी केवली गुणस्थान छोड़कर) ।

प्रः- चवदे गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?

उः- समुच्चय में सभी गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- अपडवाई में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- 12, 13, 14 वां तीन गुणस्थान पाये जाते हैं ।

प्रः- विग्रहगति में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 1, 2, 3, ये तीन गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- अमर में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 3, 12, 13, वां तीन गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- नारकी देवता में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- प्रथम चार गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- यथाख्यात चारित्र में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- अन्तिम चार गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- सामायिक और छेदोपस्थापनीय चारित्र इन दो चारित्र में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- छठे गुणस्थान से लेकर नवें गुणस्थान तक के चार गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- क्षयोपशम समकित में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 4 गुणस्थान से लेकर 6 गुणस्थान तक के 4 गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- अभाषक में, अनाहारक में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 1, 2, 4, 13, 14, वां पांच गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- शाश्वत में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 1, 2, 4, 6, 13, वां पांच गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- तिर्यंच में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- प्रथम पांच गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- तीर्थंकर गोत्र कितने गुणस्थानों में बांधे जाते हैं ?
उः- 4 से 8 वें तक के पांच गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- तीर्थंकर द्वारा अस्पर्श्य कितने गुणस्थान होते हैं ?
उः- 1, 2, 3, 5, 11, वां ये पांच गुणस्थान होते हैं ।
प्रः- कृष्ण, नील, कापोत लेश्या और प्रमादी में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- प्रथम छः गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- अवेदी में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- अवेदी में अन्तिम छः गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- अप्रमत्त आयुकर्म के अवन्धक में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 8 से 14 तक सात गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- अप्रवादी में, शुक्ल लेश्या में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- अन्तिम आठ गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- साधु के कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- अन्तिम नव गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- व्रती में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?

उः- छठें गुणस्थान से लेकर चवदवें गुणस्थान तक के नव गुणस्थान पाये जाते हैं।
प्रः- क्षायिक समकित में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 4 से 14 तक के ग्यारह गुणस्थान पाये जाते हैं।
प्रः- संज्ञी में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 1 से 12 तक के, बारह गुणस्थान पाये जाते हैं।
प्रः- एकांतभवी में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 2 से 12 तक तेरह गुणस्थान पाये जाते हैं।
प्रः- आहारक में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- 1 से 13 तक के तेरह गुणस्थान पाये जाते हैं।
प्रः- भवी में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं ?
उः- सभी 14 गुणस्थान पाये जाते हैं।

'क्रमिक गुणस्थान'

प्रः- एक गुणस्थान किनमें पाया जाता हैं ?
उः- अभवी में पाया जाता है।
प्रः- दो गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- असंज्ञी में पाये जाते हैं।
प्रः- तीन गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान में पाये जाते हैं।
प्रः- चार गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अव्रती में पाये जाते हैं।
प्रः- पांच गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- तिर्यंच में पाये जाते हैं।
प्रः- छः गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- प्रमादी में पाये जाते हैं।
प्रः- सात गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या में पाये जाते हैं।
प्रः- आठ गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- हास्यादिषटक् में पाये जाते हैं (हास्य, रति, अरति, भय, शोक और जुगुप्सा)।
प्रः- नव गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- सवेदी में नव गुणस्थान पाये जाते हैं।
प्रः- दस गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- सकषाई में पाये जाते हैं।
प्रः- ग्यारह गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?

उः- पडवाई में (प्रतिपाति) पाये जाते हैं ।
प्रः- बारह गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- छद्मस्थ में पाये जाते हैं ।
प्रः- तेरह गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- सयोगी केवली में पाये जाते हैं ।
प्रः- चवदह गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- संसारी जीवों में सभी गुणस्थान पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 1 गुणस्थान छोड़कर 13 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- निश्चय भवी में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 2 गुणस्थान छोड़कर 12 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- एकांत पंचेन्द्रिय जाति के अपर्याप्ता और पर्याप्ता में ।
प्रः- प्रथम 3 गुणस्थान छोड़कर 11 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- क्षायिक सम्यक्त्व में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 4 गुणस्थान छोड़कर 10 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- व्रती में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 5 गुणस्थान छोड़कर 9 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- एकांत मनुष्य और संयति में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 6 गुणस्थान छोड़कर 8 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अप्रमादी में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 7 गुणस्थान छोड़कर 7 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अप्रमत्त आयुकर्म के अबन्धक में पाये जाते हैं ओर शुक्ल ध्यान में ।
प्रः- प्रथम 8 गुणस्थान छोड़कर अन्तिम 6 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अवेदी में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 9 गुणस्थान छोड़कर 5 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अक्रोधी, अमानी, अमायी और एकांत अवेदी में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 10 गुणस्थान छोड़कर अन्तिम 4 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- यथाख्यात चारित्र, अकषाई और वीतरागी में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 11 गुणस्थान छोड़कर अन्तिम 3 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अपडवाई और क्षीण वीतरागी में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 12 गुणस्थान छोड़कर अन्तिम 2 गुणस्थान किनमें पाये जाते हैं ?
उः- केवली में पाये जाते हैं ।
प्रः- प्रथम 13 गुणस्थान छोड़कर अन्तिम 1 गुणस्थान किनमें पाया जाता हैं ?
उः- अयोगी, अबन्धक ओर अलेशी में पाया जाता हैं ।

किस गुणस्थान में कितने तत्त्व

प्र:- पहले गुणस्थान में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 6 और 76, जीव 14, अजीव 11, पुण्य 9, पाप 18, आश्रव 20, वन्ध 4 ।
प्र:- दूसरे गुणस्थान में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 8 और बोल 81, जीव 6, अजीव 11, पुण्य 9, पाप 18, आश्रव 20, संवर 1, निर्जरा 12, वन्ध 4 ।
प्र:- तीसरे गुणस्थान में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 6 और बोल 63, जीव 1, अजीव 11, पुण्य 9, पाप 18, आश्रव 20, वंध 4 ।
प्र:- चौथे गुणस्थान में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 8 और बोल 65, जीव 2, अजीव 11, पुण्य 9, पाप 17, आश्रव 19, संवर 1, निर्जरा 12, बंध 4 ।
प्र:- पांचवें गुणस्थान में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 8 और बोल 75, जीव 1, अजीव 11, पुण्य 9, पाप 17, आश्रव 19, संवर 2, निर्जरा 12, बंध 4 ।
प्र:- छठे गुणस्थान में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 7 और बोल 65, जीव 1, अज़ीव 11, पुण्य 9, आश्रव 8, संवर 20, निर्जरा 12, बंध 4 ।
प्र:- सातवें गुणस्थान से लेकर दसवें गुणस्थान तक में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 7 और बोल 59, जीव 1, अजीव 11, पुण्य 9, आश्रव 2, संवर 20, निर्जरा 12, बंध 4 ।
प्र:- ग्यारहवें गुणस्थान से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक कितने तत्त्व और बोल पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 7 और बोल 56, जीव 1, अजीव 11, पुण्य 9, आश्रव 1, संवर 20, निर्जरा 12, बंध 4 ।
प्र:- चैवदवें गुणस्थान में तत्त्व और बोल कितने पाये जाते हैं ?
उ:- तत्त्व 5 और बोल 48, जीव 1, अजीव 11, संवर 20, निर्जरा 12, बंध 4 ।

कहां कितने विषय विकार

प्र:- आठ विषय किनमें पाये जाते हैं ?
उ:- एकेन्द्रिय में पाये जाते है ।
प्र:- तेरह विषय किनमें पाये जाते हैं ?

उः- बेइन्द्रिय में उपरोक्त आठ और रसनेन्द्रिय के पांच ।
प्रः- पन्द्रह विषय किनमें पाये जाते हैं ?
उः- तेइन्द्रिय में - उपरोक्त तेरह और घ्राणेन्द्रिय के दो ।
प्रः- बीस विषय किनमें पाये जाते हैं ?
उः- चतुरिन्द्रिय में - उपरोक्त पन्द्रह और चक्षुइन्द्रिय के पांच ।
प्रः- तेइस विषय किनमें पाये जाते हैं ?
उः- पंचेन्द्रिय में - उपरोक्त 20 और श्रोत्रेन्द्रिय के तीन ।

कहां कितने जीव

प्रः- जीव का एक भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- केवली में, मनःपर्यव ज्ञानी में, परमावधि ज्ञानी में, यथाख्यात चारित्र में, शुक्ल ध्यानी में, अपडवाई में, तेजो लेश्या स्थावर में, साधु में, मिश्र दृष्टि में, श्रावक में, व्रती में और संज्ञी पर्याप्ता में जीव एक भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- जीव के भेदों किनमें पाये जाते हैं ?
उः- संज्ञी पंचेन्द्रिय में 13, 14 वां, अवधिज्ञानी में, सूक्ष्म में, एकान्त तेजो लेशी देवता में और बेइन्द्रिय में ।
प्रः- जीव का तीन भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- मनुष्य में (11, 13, 14) प्रथम नरक में, भवनपति में, अधोलोक मनुष्य में, वाणव्यन्तर में, औदारिक में और एकेन्द्रिय में पाये जाते हैं ।
प्रः- जीव का चार भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- एकेन्द्रिय में (1, 2, 3, 4,) और पंचेन्द्रिय में (11, 12, 13, 14) भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- जीव के पांच भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- भाषक में (6, 8, 10, 12, 14) पाये जाते हैं ।
प्रः- जीव के 6 भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- समुच्चय समकित में (5, 6, 9, 11, 13, 14) तीन विकलेन्द्रिय में, बादर के अपर्याप्ता और पर्याप्ता में ।
प्रः- जीव के सात भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- पर्याप्ता में (2, 4, 6, 8, 10, 12, 14) पर्याप्ता में (1, 3, 5, 7, 9, 11, 13) और तीन योग में ।
प्रः- जीव के आठ भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- अनाहारक में (1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 14) भेद पाये जाते हैं ।
प्रः- जीव के नव भेद किनमें पाये जाते हैं ?
उः- औदारिक मिश्र योग में (1, 3, 4, 5, 7, 9, 11, 12, 14) पाये जाते हैं ।

प्रः- जीव के दस भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- त्रसकाय में (5 से 14 तक) तथा अभाषक में पाये जाते हैं।

प्रः- जीव के ग्यारह भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- एकान्त औदारिक शरीर में, एकान्त तिर्यंच में और श्रोत्रेन्द्रिय के अलद्धिय में (1 से 10 और एक 12 भेद) पाये जाते हैं।

प्रः- जीव के बारह भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- असंज्ञी में, बादर जीव में, (3 से 14 तक) और एकांत नपुंसक वेद में (1 से 12 तक) पाये जाते हैं।

प्रः- जीव के तेरह भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- शाश्वत में, एकान्त छद्मस्थ में, एकांत असंयति में, एकांत असंज्ञी में, मनः पर्यवज्ञान और केवलज्ञान के अलद्धिय में और आहारक शरीर के अलद्धिप में (1 से 13 भेद तक) पाये जाते हैं।

प्रः- जीव के चवदह भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- सकषाई में, मिथ्यात्वी में, अभवी में, पडवाई सम्यक् दृष्टि में, तिर्यंच में, जीव में और संसारी जीवों में जीव के सभी चवदह भेद पाये जाते हैं।

कहां कितने अजीव भेद

प्रः- अजीव का एक भेद किनमें पाया जाता है ?

उः- अप्रदेशी द्रव्य में (काल)।

प्रः- अजीव का दो भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- आलोक में (आकाश का देश और प्रदेश)।

प्रः- अजीव का तीन भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- धर्मास्तिकाय में (स्कंध, देश और प्रदेश)।

प्रः- अजीव का चार भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- पुद्गलास्तिकाय की स्थिति में (स्कंध, देश, प्रदेश और परमाणु पुद्गल)।

प्रः- अजीव का पांच भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- पुद्गलस्तिकाय की स्थिति में (चार पुद्गल के और एक काल)।

प्रः- अजीव का छः भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- अढ़ाई द्वीप के बाहर अरूपी अजीव में (धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय इन तीनों के देश और प्रदेश।

प्रः- अजीव का सात भेद किनमें पाये जाते हैं ?

उः- अढ़ाई द्वीप के अन्दर अरूपी अजीव में (धर्मा., अधर्मा., आकाशा., के देश और प्रदेश छः और एक काल) पाये जाते हैं।

प्रः- अजीव का आठ भेद किनमें पाये जाते हैं ?

:- एक आकाश प्रदेश में (पुद्‌गल के 4, धर्मा. का 1, अधर्मा का 1, आकाशा. का प्रदेश 1 और काल का 1) पाये जाते हैं ।
:- अजीव का नव भेद किनमें पाये जाते हैं ?
:- एक द्रव्य वाले अजीव में (धर्मा. के 3, अधर्मा. के 3, और आकाशास्तिकाय के 3) पाये जाते हैं ?
:- अजीव के दस भेद किनमें पाये जाते हैं ?
:- अरूपी अजीव में (उपरोक्त नव और दसवां काल) पाये जाते हैं ।
:- अजीव का ग्यारह भेद किनमें पाये जाते हैं ?
:- मनुष्य लोक में (धर्मा. के 3, अधर्मा. के 3, आकाशास्तिकाय के 1, पुद्‌गलास्तिकाय के 4 और का काल) पाये जाते हैं ।
:- अजीव का बारह भेद किनमें पाये जाते हैं ?
:- लोक के सप्रदेशी द्रव्यों में (धर्मा. के 3, अधर्मा. के 3, आकाशा. के 2 और पुद्‌गलास्तिकाय के 4) पाये जाते हैं ।
:- अजीव के तेरह भेद किनमें पाये जाते हैं ?
:- लोक में (एक आकाशास्तिकाय के स्कंध को छोड़कर) पाये जाते हैं ।
:- अजीव का चवदह भेद किनमें पाये जाते हैं ?
:- लोकालोक में ।

कहां कितनी आत्मा

:- एक आत्मा किनमें पाई जाती है ?
:- जीव द्रव्य में - एक द्रव्य आत्मा पाई जाती है ।
:- दो आत्मा किनमें पाई जाती है ?
:- उपशम भाव में - दर्शनात्मा और चारित्रात्मा पाई जाती है ।
:- तीन आत्मा किनमें पाई जाती है ?
:- उदय भाव में - कषायात्मा, योगात्मा और दर्शनात्मा पाई जी हैं ।
:- चार आत्मा किनमें पाई जाती है ?
:- सिद्धों में - द्रव्यात्मा, ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा और उपयोगात्मा पाई जाती हैं ।
:- पांच आत्मा किनमें पाई जाती है ?
निर्जरा में पाई जाती हैं । (द्रव्य, कषाय और चारित्रात्मा को छोड़कर) ।
:- छः आत्मा किनमें पाई जाती है ?
उ:- मिथ्यात्वी में (ज्ञानात्मस और चारित्रात्मा को छोड़कर) ।
प्र:- सात आत्मा किनमें पाई जाती है ?
उ:- श्रावक में (चारित्रात्मा को छोड़कर) पाये जाते हैं ।
प्र:- आठ आत्मा किनमें पाई जाती है ?

उः- सकषाई में, सरागी साधु में पाई जाती हैं ।
प्रः- तीन आत्मा, दर्शन, उपयोग द्रव्य की नीयमा किनमें पाई जाती हैं ?
उः- सभी जीवों में पाई जाती हैं ।

कहां कितने दण्डक

प्रः- एक दण्डक किनमें पाया जाता हैं, वह कौन सा ?
उः- केवली में, साधु में, सात नरक में, एक लेश्या में तथा दो दर्शन में (1 और 21 वां दण्डक) पाया जाता हैं ।
प्रः- दो दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- श्रावक में (20 वां और 21 वां दण्डक) और एकांत शुभलेशी में ।
प्रः- तीन दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- शुक्ल लेश्या में (20, 21, 24 वां दण्डक) तीन विकलेन्द्रिय में (17, 18, 19 वां दण्डक) और तीन दण्डक नपुंसक पंचेन्द्रिय में ।
प्रः- चार दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- तिर्यंच त्रसकाय में या सत्व में (17 से 20 वें दण्डक तक) ।
प्रः- पांच दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- एकेन्द्रिय में (12 से 16 वें दण्डक तक) पाये जाते हैं ।
प्रः- छः दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- त्रसकाय नपुंसक वेद में (1, 17 से 21 वें दण्डक तक) और घ्राणेन्द्रिय के अलब्धिप में छः दण्डक पाये जाते हैं ।
प्रः- सात दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- एक दर्शन में (12 से 19 वें दण्डक तक) और चक्षुदर्शन के अलब्धिप में सात दण्डक पाये जाते हैं ।
प्रः- आठ दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- एकान्त असंज्ञी में (12 से 19 वें दण्डक) और श्रोत्रेन्द्रिय के अलब्धिप में आठ दण्डक पाये जाते हैं ।
प्रः- नव दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- तिर्यंच में (12 से 20 वें दण्डक तक) पाये जाते हैं ।
प्रः- दस दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- औदारिक शरीर में (12 से 21 वें दण्डक तक) पाये जाते हैं ।
प्रः- ग्यारह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- नपुंसक शरीर में (11 से 21 दण्डक तक) पाये जाते हैं ।
प्रः- वारह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- तिरछालोक में (12 से 23 तक के दण्डक) पाये जाते हैं ।

प्रः- तेरह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- देवता में (2 से 11, 22, 23, 24 वें दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- चवदह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- एकान्त वैक्रिय शरीर में (13 देवता के, 1 नारकी के) पाये जाते हैं ।
प्रः- पन्द्रह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- पुरूष वेद में (2 से 11, 20 से 24 तक दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- सोलह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- संज्ञी जीवों में (1 से 11, 20 से 24 तक दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- सत्रह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- चक्षुदर्शन में (उपरोक्त सोलह और एक 19 वां दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- अठारह दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- तेजो लेश्या में (2 से 13, 20 से 24 तक के दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- उन्नीस दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- सम्यक् दृष्टि में, सास्वादन समकित में और त्रसकाय में (1 से 11, 17 से 24 तक के दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- बीस दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- नीचे लोक के एकान्त छद्मस्थ में (1 से 20 तक के दण्डक) पाये जाते हैं।
प्रः- इक्कीस दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- नीचे लोक में (1 से 21 तक दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- बाईस दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में (1 से 22 तक के दण्डक) पाये जाते हैं । तीन लेश्या में अलग - अलग 22 दण्डक समझने चाहिए ।
प्रः- तेइस दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय की आगत में और भगवान् के समोसरण में (2 से 24 तक के दण्डक) पाये जाते हैं ।
प्रः- चौबीस दण्डक किनमें पाये जाते हैं, वे कौन से ?
उः- अविरति में, सकषाई में, सलेशी में और समुच्चय जीवों में 1 से 24 तक के दण्डक पाये जाते हैं ।

कहां कितनी लेश्या

प्रः- एक लेश्या किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?
उः- सयोगी केवली में, अनुत्तर विमान में तथा ज्योतिषी देव में एक शुक्ल लेश्या पाई जाती है ।
प्रः- दो लेश्या किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- तीसरी एवं पांचवी नारकी में (क्रमशः नील, कापोत एवं नील कृष्ण लेश्या) पाई जाती हैं ।

प्रः- तीन लेश्या किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- तेउकाय में, वायुकाय में और तीन विकलेन्द्रिय में कृष्ण, नील, कापोत लेश्या पाई जाती है ।

प्रः- चार लेश्या किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- भवनपति में, वाणव्यन्तर में, पृथ्वीकाय में, अप्काय में, वनस्पतिकाय में और युगलियों में कृष्ण, नील, कापोत और तेजो लेश्या पाई जाती हैं ।

प्रः- पांच लेश्या किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- तीर्थकरों की आगत में (कृष्ण लेश्या को छोड़कर) पाई जाती हैं ।

प्रः- छः लेश्या किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- समुच्चय मनुष्य में पाई जाती हैं ।

कहां कितनी दृष्टियां

प्रः- एक दृष्टि किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- अभवी में (एक मिथ्यादृष्टि) तथा चौथे गुणस्थान में भी एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है और श्रावक में एवं अनुत्तर विमान देवता में भी एक सम्यक् दृष्टि पाई जाती है ।

प्रः- दो दृष्टियां किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- 30 अकर्मभूमि में तथा तीन विकलेन्द्रिय में (मिश्र दृष्टि को छोड़कर) पाई जाती हैं।

प्रः- तीन दृष्टियां किनमें पाई जाती हैं वे कौनसी ?

उः- देव मनुष्य और नारक में पाई जाती हैं ।

कहां कितने ध्यान

प्रः- एक ध्यान किनमें पाया जाता है वह कौन सा ?

उः- सयोगी केवली में (एक शुक्ल ध्यान) और सातवें गुणस्थान में एक धर्म ध्यान पाया जाता हैं ।

प्रः- दो ध्यान किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?

उः- प्रमत्त संयति में (आर्त्तध्यान और धर्मध्यान) पाये जाते हैं ।

प्रः- तीन ध्यान किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?

उः- श्रावक में - आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान और धर्मध्यान पाये जाते हैं ।

प्रः- चार ध्यान किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?

उः- मनुष्य में पाये जाते हैं ।

कहां कितने द्रव्य

प्रः- एक द्रव्य कहां पर पाया जाता है वह कौन सा ?
उः- अलोक में (आकाश) पाया जाता है ।
प्रः- दो द्रव्य कहां पर पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- परिणामी में (जीव और पुद्गल) पाये जाते हैं ।
प्रः- तीन द्रव्य किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- अढ़ाई द्वीप के बाहर अरूपी अजीव द्रव्य में (धर्मा., अधर्मा., आकाशा.) ही पाये जाते हैं ।
प्रः- चार द्रव्य किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- अरूपी अजीव द्रव्य में (धर्मा., अधर्मा., आकाशा. और काल द्रव्य) पाये जाते हैं।
प्रः- पांच द्रव्य किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- अजीव द्रव्य में (जीवास्तिकाय को छोड़कर) पाये जाते हैं ।
प्रः- छः द्रव्य किनमें पाये जाते हैं वे कौन पाये जाते हैं ।
उः- संसार में तथा लोक में सभी द्रव्य पाये जाते हैं ।

कहां कितनी राशि

प्रः- एक राशि किनमें पाई जाती है वह कौन सी ?
उः- अलोक में और जीव में (अजीव राशि) पाई जाती हैं ।
प्रः- दो राशि किनमें पाई जाती हैं वे कौन सी ?
उः- लोक में जीव और अजीव राशि पाई जाती हैं ।

कहां कितने व्रत

प्रः- श्रावक के ग्यारह व्रत किनमें पाये जाते हैं ?
उः- तिर्यंच श्रावक में, कहीं - कहीं श्रद्धा दलाली आदि की दृष्टि से बारह ही व्रत पाये जा सकते हैं ।
प्रः- बारह व्रत किनमें पाये जाते हैं ?
उः- मनुष्य में (श्रावक में) पाये जाते हैं ।

कहां कितने महाव्रत

प्रः- पांचों महाव्रत किनमें पाये जाते हैं ?
उः- साधु जी महाराज में पाये जाते हैं ।

कहां कितने भांगे

प्रः- गुणपचास भांगे किनमें पाये जाते हैं ?
उः- श्रावक में पाये जाते हैं ।

कहां कितने चारित्र

प्रः- एक चारित्र किनमें पाया जाता है वह कौन सा ?
उः- वीतरागी संयती में एवं केवलियों में एक यथाख्यात चारित्र पाया जाता हैं ।
प्रः- दो चारित्र किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- पुलाक निर्ग्रन्थ में सामायिक और छेदोपस्थापनीय चारित्र पाये जाते हैं ।
प्रः- तीन चारित्र किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- प्रमत्त संयति में और अप्रमादी गुणस्थान सातवें में भी सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र और परिहार विशुद्धि चारित्र पाये जाते हैं ।
प्रः- चार चारित्र किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- कषाय कुशील में (एक यथाख्यात चारित्र छोड़कर) पाये जाते हैं ।
प्रः- पांच चारित्र किनमें पाये जाते हैं वे कौन से ?
उः- समुच्चय संयति में अर्थात् मुनिराजों में पाये जाते हैं ।

चवदह गुणस्थानों में

प्रः- पहले और तीसरे गुणस्थानों में पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 21 बोल पाये जाते हैं । (22 से 25 तक के बोल छोड़कर) ।
प्रः- दूसरे और चौथे गुणस्थानों में पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 20 बोल पाये जाते हैं। (13, 22, 23, 24 और 25 इन पांच बोलों को छोड़कर)।
प्रः- पांचवें गुणस्थान में कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 22 बोल पाये जाते हैं। (13, 23, 24 और 25 इन चार बोलों को छोड़कर)।
प्रः- छठे गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक में पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 22 बोल पाये जाते हैं । (13, 22, 24 वें बोल को छोड़कर) ।
प्रः- तेहरवें गुणस्थान में पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 20 बोल पाये जाते हैं । (4, 12, 13, 22, 24 वें बोल को छोड़कर) ।
प्रः- चवदवें गुणस्थान में पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 18 बोल पाये जाते हैं (4, 8, 12, 13, 22, 24 वें बोल को छोड़कर) ।

कहां कितने बोल

प्रः- सम्यक् दृष्टि में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 24 बोल पाये जाते हैं (एक 13 वें बोल को छोड़कर) ।
प्रः- श्रावक में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 22 बोल पाये जाते हैं (13, 23, 25 वें बोल को छोड़कर) ।
प्रः- साधुजी में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?
उः- 22 बोल पाये जाते हैं (13, 22, 24 वें बोल को छोड़कर) ।
प्रः- तीर्थंकर में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?

उः- 20 बोल पाये जाते हैं (4, 12, 13, 22, 24 वें बोल को छोड़कर) ।

प्रः- सिद्धों में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?

उः- छः (6) बोल पाये जाते हैं, (9, 14, 15, 18, 20, 21 वें बोल पाये जाते हैं) ।

प्रः- पच्चीस बोलों में से कितने बोल रूपी हैं और कितने बोल अरूपी हैं ?

उः- दस रूपी हैं, (1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 12, 13) नव अरूपी हैं (9, 11, 15 18, 19, 22, 23, 24, 25) रूपी -अरूपी छः हैं (4, 14, 16, 17, 20, 21 वें) ।

प्रः- पुंजनी में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?

उः- तीन बोल पाये जाते हैं (14, 20 और 21 वां बोल अजीव की अपेक्षा से) ।

प्रः- मिथ्यात्वी में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?

उः- 21 बोल पाये जाते हैं (22, 23, 24, 25 वें बोलों को छोड़कर) ।

प्रः- मिश्र दृष्टि में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?

उः- 20 बोल पाये जाते हैं, (13, 22, 23, 24, 25 वें बोलों को छोड़कर) ।

प्रः- केवलज्ञानी में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?

उः- 20 बोल पाये जाते हैं, (4, 12, 13, 22, 24 वें बोल को छोड़कर) ।

प्रः- हाथी में, पच्चीस बोलों में से कितने बोल पाये जाते हैं ?

उः- 23 बोल पाये जाते हैं (23 और 25 वें इन दो बोलों को छोड़कर) ।

अल्प बहुत्व

(1) 23 और 25 वें बोल के जीव परस्पर में तुल्य और सबसे अल्प हैं, (साधुजी की अपेक्षा से) ।

(2) 22 और 24 वें बोल के जीव तुल्य और असंख्यात गुण हैं, (तिर्यंच श्रावक की अपेक्षा से) ।

(3) 19 वें बोल के जीव असंख्याता गुणा हैं, (चारों गतियों के संज्ञी जीवों की अपेक्षा से)।

(4) 13 वें बोल के जीव अनन्तगुणा हैं (निगोद की अपेक्षा से) ।

(5) 4, 12 वें बोल के जीव तुल्य और विशेषाधिक हैं (छद्मस्थ 4 गतियों के जीव 1 से 12 गुणस्थान तक) ।

(6) 8 ओर 17 बोल के जीव तुल्य और विशेषाधिक हैं (सयोगी 4 गतियों के जीव 1 से 13 गुणस्थान तक) ।

(7) 1, 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 16 बोलों के जीव तुल्य और विशेषाधिक हैं - (संसारी जीव 1 से 14 गुणस्थान तक) ।

(8) 9, 15, 18 बोल के जीव तुल्य और विशेषाधिक है (समुच्चय जीव संसारी और सिद्ध सहित) ।

(9) 14, 20, 21 वें बोल के जीव (अनन्त) हैं, अजीव की अपेक्षा से विशेषाधिक हैं ।